स्तुति- संग्रहादि

॥ श्रीः ॥

गुरुचरणेन्दुर्वरीवर्ति.

भो भो इन्दुरनगरस्थजैनश्वेताम्बरपाठशालाऽध्यापकभूताः पण्डित-श्रीहरिदत्तशर्माणः पठितवतामाधीमतामस्मदादिग्रन्थानुगामिपद्यलीप-समस्तस्मरणानां संस्कृतच्छायादुरधिगमप्राकृतपदविवरणप्रतिपदहिन्दीभावार्थ-सर्वसाधारणार्थं ज्ञानजननोचितस्तरभावभावभाषांना लेखनेन प्रकटी-कृतमत्र भवद्भिर्हिन्दीभाषारचनाहिन्दीमहोपकारित्वम् एतादृशलक्षणं धीमतां पाण्डित्यप्रकर्षोदय दीर्घदर्शी भवान्स्थिति प्रार्थयामो भगवन्तं वीतरागम्.

इन्दूर.
ता. १३-१-०९ { पन्यासयशोमुनिः

MEHIDPUR,
12th February [illegible].

I have read with great pleasure some portions of Pandit Shrikrishna Sharma's "[illegible]" which I understand will shortly be out. The book possesses an originality. The learned Pandit has placed the "Sutras" within the reach of all men and I am sure the Jains will now read and understand them with facility and interest. As far as I know the work is altogether on different lines from any other Jain Work. The translation is somewhat stiff and in my opinion the use of simpler Words would have been more advantageous. But on the whole the book is an admirable one and it appears that the author has bestowed much labour over it. The Pandit has rendered Conspicuous Service to the Jain Community and I am confident it will heartily welcome the book.

SIRAYMAL BAPNA
B. A., L L. B.
DISTRICT AND SESSIONS JUDGE
MEHIDPUR.
Indore State

INDORE.

10-10-1921.

I have known Pandit Shrikrishna Sharma for the last two years. He seems to be a learned Pandit and takes a great deal of interest in the Study of Jain Shastras. He has manifested his love for Jainism by commenting upon "Sapta Smarana." I am glad to say that the Commentary he has prepared will be found very useful to those who Study Sapta Smarana without a teacher. Maghadhi Verses have been explained in Sanskrit with some important Grammatical Notes and for the Sake of those who are quite ignorant of the Sanskrit Language the purport of each verse is given in Hindi also. I believe that the Jain Community is thankful to the learned Panditji for the endeavours to render Sapta Smarana in a Language which is understood by us all. His work shows that he has thorough knowledge of Sanskrit Magadhi and Hindi Languages. In Conclusion I pray Panditji to take up some more important works of the Maghadhi Language and translate them into Hindi so that the Hindi knowing public may appreciate the Sacred Jain Literature.

N. G. MODI,

B. A. B. L.

MAGISTRATE

INDORE.

॥ श्रीः ॥

॥ सदस्याभ्यर्थनम् ॥

इह खलु परमदयालुभिः श्रीमत्सर्वविशेषानकेवल-ज्ञानिभिरनादिस्वाविद्यानिर्मितकामक्रोधादि महातिमिंगि-लाक्रांन्तसंसरणाब्धौ पौनःपुन्येननिमज्जतां तत्तरणो-पायज्ञानपोतविकलानां प्राणिनामपारमापकत्वेऽपि मध्य-पर्यंतसुखतक्षणविश्राममदद्वीपवद्वर्तमानस्वर्गारोहणसोपान-पद्धतिसदृशावीतरागचरणानिःश्रेणी उदपादि.

तदवलंबनेऽप्यविवेकतिमिरवतां दयाशीला धर्मसत्ता प्रवर्तकाचार्या महावीरगौतमस्वामिप्रभृतय आसन् तथा प्यतिकालांतरितत्वेन तेष्वागमग्रंथेषु प्रविष्टज्ञान-तिमिरे भ्रमतां कानिचिद्विद्वज्जनपुङ्गवाः [illegible] रचयांबभूवुः तेषां कठिनतरबालभाषामयानां [illegible] ज्ञानारंभे इन्दुरत्नगणि [illegible]

कायमानेन पदवाक्यप्रमाणशास्त्रकृतपरिश्रमेण "नागर ज्ञातीयचोबेकुलावतंसेन श्रीपोनायसूनुपण्डितश्रीकृष्ण शर्मणा सप्तस्मरणानां संस्कृतच्छाया हिन्दीभाषायां गाथापदार्थः सर्वसाधारणज्ञानार्थं सरलहिन्दीभाषायां भावार्थश्चन्यरचि.

" ऋतेज्ञानान्नमोक्ष " इतिवचनानुसारेण नित्यसप्त-स्मरणपठनकर्तॄणां सौकर्येण ज्ञानप्राप्तिर्भूयादितिहेतो र्हिन्दुरजैनश्वेताम्बरमुख्यपाठशालाध्यापकेनोक्त पण्डित-वरेण कृतःपरिश्रमःसफलोमवेदिति सर्वैर्भव्यश्रावकैःसार्धं सप्तस्मरणमवश्यं पठनीयमितिप्रार्थनापराःसदस्याः

श्रीः

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

श्रीनंदिषेणसूरिविरचितमजितशान्तिस्तवनं प्रारभ्यते.

(गाथा)

(गाहा)

अजिअं जिअसव्वभयं संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जयगुरु संतिगुणकरे दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥

(छाया)

जितसर्व्वभयं अजितं च प्रशांतसर्व्वगदपापं शांतिं च शान्तिगुणकरौ जगद्गुरू (तौ) द्वावपि जिनवरौ (अहं) प्रणिपतामि ।

(पदार्थ)

(जिअ) जीत लियेहैं (सव्वभयं) स[illegible]

जिनने ऐसे (अजिअं) दूसरे तीर्थंकर अजितनाथस्वामी (च) और (पसंत) अपुनर्भावसे निवृत्त होगएहैं (सव्व) संपूर्ण (गय) रोग और (पावं) पाप जिनके ऐसे (संतिं) सोहलवें तीर्थंकर शान्तिनाथ स्वामी (संतिगुणकरे) विघ्नोपशमरूपगुणको करने वाले (जयगुरु) जगतमें प्राणियोंको धर्मतत्वोपदेश करने वाले (दोवि) दोनो (जिणवरे) जिनोंमें श्रेष्ट ऐसे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीको (पणिवयामी) वन्दन करता हूं।

(भावार्थ)

जीत लियेहैं सप्तविधभय जिन्होंने ऐसे दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ स्वामी और निवृत्त होगएहैं संपूर्ण रोग और पाप जिन्होंके ऐसे सोहलवें तीर्थंकर शान्तिनाथ स्वामी विघ्नोंकी शांति करने वाले जगतमें जीवोंको धर्मोपदेश करने वाले जिनोंमें श्रेष्ट ऐसे दोनो अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवानको मैं नन्दिषेण कवि वन्दनकरताहूं।

(इतिहास)

जिस समय दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ स्वामी अपनी माता विजयादेवीके गर्भमेंथे उस समय रानी विजया

देवी अपने पति जितशत्रुराजाके साथ चोपट खेलने लगी परन्तु परम प्रभावशाली पुत्र गर्भमें होनेसे जितशत्रु विजयादेवीको न जीत सके इस हेतु पुत्रका नाम अजित रखा।

शान्तिनाथ स्वामी सोहलवें तीर्थंकर जिस समय अपनी माता के गर्भमें आए उस समयसे जगतमें परममंगल होनेलगा और नानाप्रकारके विघ्नों की शान्ति होनेलगी इस हेतु इन्होंका नाम शान्तिनाथ रखागया।

(गाथा)

(गाहा)

ववगयमंगुलभावे तेहं विउलतवनिम्मल सहावे।
निरुवममहप्प भावे थोस्सामि सुदिट्ठसब्भावे ॥४॥

(छाया)

व्यपगतमंगुलभावौ विपुलतपोनिर्मलस्वभावौ निरुपममहत्प्रभावौ सुदृष्टसद्भावौ तौ (अजितशान्तिनामानौ) अहं स्तोष्ये।

(पदार्थ)

(ववगय) प्रनष्टहोगए हैं (मंगुल) अशोभन (भावे) परिणाम जिन्होंके (विउल) विस्तीर्ण (तव)

द्वादशविधतपसे (निम्मल) निर्म्मल होगयाहै (सहावं) स्वभाव जिन्होंका (निरुवम) अनुपमेय और (मह) महानहै (प्पभावे) प्रभाव जिन्होंका (सुदिट्ठ) केवल ज्ञान और दर्शन द्वारा भलीभांति देखलिये हैं (सब्भावे) विद्यमान जीवाजीवादिभाव जिन्होंने ऐसे (ते) वे प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवान को (हं) मैं नन्दिषेण कवि (थोस्सामि) स्तुति करताहूं ।

(भावार्थ)

नष्टहोगए हैं अशोभनपरिणाम जिन्होंके विस्तीर्ण द्वादशविध तपश्चर्यासे निर्मल होगयाहै स्वभाव जिन्हों-का अनुपमेय और महानहै प्रभाव जिन्होंका केवल ज्ञान और दर्शन द्वारा भलीभाँते जानलियेहैं विद्यमान जीवाजीवादिभाव जिन्होंने ऐसे वे प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी मैं स्तुति करताहूं ।

(श्लोकः)

(सिलोगो)

सव्वदुक्खप्पसंतीणं सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजियसंतीणं नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥

(छाया)

सर्व्वदुःख प्रशान्तिभ्यां सर्व्वपापप्रशान्तिभ्यां अजित-शान्तिभ्यां एतादृशाभ्यां अजितशान्तिनाथाभ्यां सदा नमः अस्तु ।

अत्र नमःशब्दयोगजचतुर्थ्यर्थेप्राकृतत्वात् षष्ठी द्विवचनस्य च बहुवचनं सर्वत्र । सव्वदुक्खप्पसंतीणं इत्यत्र पकारो लघुर्गुरुर्वा समासेचेति द्वित्वस्य पाक्षिकत्वात् ॥ द्वितीये चतुर्थे च पादे संतिणं पसंतिणं चेत्य-आर्षत्वात् दीर्घाभावः अन्यथाहि छन्दोभंगः स्यात् ।

(पदार्थ)

(सव्व) संपूर्ण (दुक्ख) वेधकर्म (प्पसंतीणं) प्रशान्त होगयेहैं जिन्होंके अथवा (दुक्ख)(दुष्टानिखानि इन्द्रियाणि दुःखानि तेषां प्रशांन्तिः इष्टानिष्टविषयेषु ययोः) दुष्ट इन्द्रियां इष्टअनिष्ट विषयोंसे (प्पसंतीणं) शांतहोगईहैं जिन्होंकी अथवा (सव्वदुक्खप्पसंतीणं) संपूर्ण योग्य जंतुओंकी दुःखप्रशान्ति होगईहै जिन्होंसे (सव्व) संपूर्ण (पाव) पाप (प्पसंतिणं) प्रशान्त होगएहैं जिन्होंके (अजिय) न जीती जानेवालीहै (संतीणं) शान्ति जिन्होंकी ऐसे (अजियसंतिणं)

अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीको (सयो) निरंतर (नमो) नमस्कार होओ ।

(भावार्थ)

संपूर्ण वेद्यकर्म प्रशान्तहोगएहैं जिन्होंके (अथवा) संपूर्ण दुष्ट इन्द्रियां इष्ट अनिष्ट विषयों से निवृत्त होगईहैं जिन्होंकी (अथवा) संपूर्ण योग्य जन्तुओंके दुःख निवारण कियेहैं जिन्होंने और संपूर्ण पाप नष्ट होगएहैं जिन्होंके और रागद्वेषादि द्वारा न जीती जाने वाली है शान्ति जिन्होंकी ऐसे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीको मैं निरंतर नमस्कार करताहूं ।

(मागधिका छंदः)

(मागहिआ)

अजिअजिणसुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तमनामकित्तणं । तहय धिइमइप्पवत्तणं तव य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥

(छाया)

हे अजितजिन हे पुरुषोत्तम तव नामकीर्त्तनं सुखप्रवर्तनं तथा च धृतिमतिप्रवर्तनं आस्ति हे जिनोत्तम-शांते तव च कीर्तनमपि तथैवास्ति ।

(पदार्थ)

(अजिआजिण) हे अजितसंज्ञक जिनभगवन् (पुरिसुत्तम) हे पुरुषोत्तम (तव) आपका (नाम-किचणं) नामस्मरण (सुह) सुखका (प्पवत्तणं) प्रवर्तकहै (तहय) और वैसेही (धिइ) स्वास्थ्य लक्षण धृति और (मइ) प्रज्ञालक्षण मतिका (प्पवत्तणं) प्रवर्तक है (च) और (जिणुत्तम) जिनोंमें श्रेष्ट (संति) हे शान्तिनाथस्वामी (तव) आपकाभी (किचणं) नाम स्मरण वैसाही है।

(भावार्थ)

हे पुरुषोत्तम अजित संज्ञक जिनभगवन् और हे जिनोंमें श्रेष्ट शान्तिनाथ भगवन् आप दोनोंका नाम-मरण संपूर्णसुखका प्रवर्तक है और वैसेही स्वास्थ्यलक्षण धृति और प्रज्ञालक्षणमतिका भी प्रवर्तक है।

(आलिंगनकंछंदः)

(आलिंगणयं)

किरिआविहि संचिअकम्मकिलेस विमुक्खयरं।
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं॥
अजिअस्स य संतिमहामुणिणोविअ संतिकरं
सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं॥ ५॥

(छाया)

क्रियाविधिसंचितकर्मक्लेशविमुक्तिकरं अजितं च गुणैः निचितं महामुनिसिद्धिगतं पुनाढ्यं अजितस्य शांति-महामुनेश नमस्यनकं सततं मम शांतिकरं निर्वृति-कारणकञ्च भवतु।

(पदार्थ)

(किरिआ) कायिक्यादि क्रियाओंके (विधि) भेदोंसे (संचिअ) इकट्ठे कियेहुए (कम्म) ज्ञानावर-णादिकर्म और (किलेस) कषायोंसे (विमुक्खयरं) अत्यंत प्रथक् करनेवाला (अजितं) तीर्थान्तरसंबंधी अन्यदेवोंको वन्दनजनित पुण्यसे नजीताजानेवाला (च) और (गुणेहिं) सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और चारित्रा-दिगुणोंसे (निचिअं) व्याप्त (महामुनि) श्रेष्ठमुनियोंकी (सिद्धि) अणिमादि अष्टसिद्धियोंतक (गयं) पहुंचाहुआ ऐसा (अजिअस्स) अजितनाथस्वामीको (य) और (संतिमहामुणिणोविअ) शान्तिनाथ महामुनिकोभी (नमंसणयं) नमस्कार (सययं) निरंतर (मम) मेरी (संतिकरं) पीडाकी शान्तिकरनेवाला (च) (निव्वुइ) मोक्षका (कारणयं) प्रसिद्धकारण होओ।

(भावार्थ)

कायिकयादि क्रियाओंके भेदोंसे इकट्ठेकियेहुए ज्ञानावरणादिकर्म और कषायोंसे अत्यन्त जुदाकरनेवाला और तीर्थांतरसंबंधी अन्यदेवोंको वन्दनसे उत्पन्नहुए पुण्यसे न जीताजानेवाला और सम्यग्ज्ञानदर्शन चारित्रादि गुणोंसे व्याप्त और श्रेष्ठमुनियोंकी अणिमादि अष्टसिद्धियोंतक पहुंचाहुआ ऐसा अजितनाथ स्वामीको और शान्तिनाथ महामुनिको कियाहुआ नमस्कार निरंतर मेरी पीडा की शान्तिकरनेवाला और मेरेमोक्षका करनेवाला होओ।

(मागधिकाछंदः)

(मागहिआ)

पुरिसाजइदुक्खवारणं जइअ विमग्गह सुक्खकारणं। अजिअं संतिंच भावओ अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥

(छाया)

हे पुरुषाः यदि दुःखवारणं विमार्गयथ यदि च सौख्य कारणं विमार्गयथ (तदा) अजितं शांतिं च भावतः शरणं प्रपद्यत (यतः एतौद्वौ) अभयकरौ स्तः (पवज्जहा) इति दीर्घमार्षत्वात्।

(पदार्थ)

(पुरिसा) हे भव्यजिवो (जइ) यदि (दुक्खवारणं) दुःखोंकानाश (जइअ) और यदि (सुक्खकारणं) सुख का कारण (विमग्गह) शोधनकरना चाहतेहो तो (अजिअं) अजितनाथ स्वामीको (च) और (संतिं) शान्तिनाथ स्वामीको (भावओ) भक्तिसे (सरणं) शरण (पवज्जहा) जाओ (क्योंकि वे दोनोंही) (अभयकरे) अभयके करनेवाले हैं ।

(भावार्थ)

हे भव्यजीवो यदि तुम अपने दुःखोंका नाश और सुखकीप्राप्ति चाहतेहो तो अजितनाथ स्वामीको और शान्तिनाथस्वामीको भक्तिपूर्वक शरण जाओ क्योंकि वे दोनोंही अभयके करनेवाले हैं ।

(संगतकंछंदः)

(संगययं)

अरइरइतिमिरविरहिअ मुवरयजरमरणं । सुरअसुरगरुलभुयगवइपयय पणिवइअं ॥ अजिअमहमविअसुनयनयनिउणमभयकरं । सरणमुवसरिअभुविदिविज महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥

(छाया)

अरतिरतितिमिरविरहितं उपरतजरामरणं सुरासुरगरुड भुजगपतिप्रयतप्रणिपतितं सुनयनयनिपुणं अभयकरं अपिच मनुजत्रिदशमहितं अजितं शरणं उपसृत्य सततं उपनमे ।

(पदार्थ)

(अरइ) असंयममें अरति (रइ) संयममें रति (तिमिर) अज्ञान इनसे (विरहिअं) रहित (उवरय) निवृत्त हैं (जरमरणं) जरा और मरण जिनका (सुर) देव (असुर) असुरकुमार (गरुल) सुवर्णकुमार (भुयग) नागकुमार इन्होंके (वइ) पति इन्होंने (पयय) प्रयत्नप्रकारसे (पणिवइअं) प्रणिपात किया है जिनको अथवा (सुर) देव (असुर) भवनपति (गरुड) ज्योतिष्क (भुयग) व्यंतर (वइ) विमान इन्होंके (वइ) स्वामी उनसे (पयय) प्रयत्नप्रकारसे (पणिवइअं) नमस्कृत ऐसे, (सुनय) शोभन नैगमादि सातनयोंके (नय) भेदप्रभेदजानेमें (निउणं) चतुर (अभयकरं) अभयकरनेवाले (अवि अ) और भी (मणुअ) मनुष्योंसे (तिदिअ) देवताओंसे (महिअं)

पूजित ऐसे (अजिअं) अजितनाथस्वामीको (सरणं) शरण (उवसरिअ) जाकर (अहं) मैं (सययं) निरंतर (उवणमे) नमस्कार करताहूं ।

(भावार्थ)

असंयममें अरति संयममें रति और अज्ञान इनसे रहित, निवृत्तहै जरा और मरण जिनका, देव, असुरकुमार, सुपर्णकुमार, और नागकुमार, इन्होंकेपति इन्द्रने सम्यक् प्रकारसे प्रणिपात कियाहै जिनको, अथवा देव, भवनपति, ज्योतिष्क, व्यंतर, विद्याधर इन्होंके स्वामीने भलेप्रकारसे नमस्कार कियाहै जिनको, शोभन नैगमादि नयोंको स्वीकारकरवानेमें चतुर, अभयकरनेवाले, मनुष्योंसे और देवताओंसे पूजित, ऐसे अजितनाथ स्वामीको शरणागत होकर मैं निरंतर नमस्कारकरताहूं ।

(सोपानकछंदः)

(वेत्राणय)

तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं। अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं । संतिमुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥

(छाया)

उत्तमनित्तमसत्र (सत्व) धरं आर्जवमार्दवक्षांतिविमुक्तिसमाधिनिधिं शान्तिकरं दमोत्तमतीर्थकरं तं जिनोत्तमं शांतिमुनिं प्रणमामि (सः) शान्तिमुनिः मम समाधिवरं दिशतु ।

(पदार्थ)

(उत्तम) श्रेष्ठ (नित्तम) कांक्षारहित (सत्त) सत्व (सत्त) भावयज्ञको (धरं) धारणकरनेवाले (अज्जव) आर्जव=मायाभाव (मद्दव) मार्दव=निरहंकारता (खंति) क्षमा (विमुत्ति) निर्लोभता (समाहि) समाधि इनके (निहिं) निधि=खजीना (संतिअरं) आपत्तियोंके उपशमको देनेवाले (दम) इन्द्रियनिग्रहसे (उत्तम) प्रधान (तित्थ) तीर्थ (यरं) करनेवाले (तं) उन प्रसिद्ध (जिणुत्तमं) सामान्यकेवलियोंमें श्रेष्ट ऐसे (संतिमुणिं) शान्तिमुनिको (पणमामि) प्रणामकरताहूं (संति) शान्तिनाथस्वामी (मम) मुझे (समाहिवरं) प्रधान चित्तकी स्वस्थताको (दिसउ) देवें।

(भावार्थ)

श्रेष्ट तथा कांक्षारहित भावयज्ञको धारणकरनेवाले मायाभाव निरहंकारता क्षमा निर्लोभता और समाधि इन्होंके

निधि आपत्तियोंकी शान्तिको देनेवाले इन्द्रियनिग्रहद्वारा प्रधानतीर्थको करनेवाले ऐसे उन प्रसिद्ध सामान्यकेवलियों में श्रेष्ट शान्तिमुनिको प्रणामकरताहूं, वे शान्तिनाथ स्वामी मुझे प्रधान चित्तकी स्वस्थता देवें।

(वेष्टकच्छंदः)

(वेड्डउ)

सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्न संथिअं थिरसारिच्छवच्छं मयगयलीलायमाण वरगंधहत्थिपत्थाणपत्थिअं संथवारिहं॥ हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुयगनिरुवहय पिंजरं पवरलक्खणोवचियसोम्मचारुरूवं । सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्ज वरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुभगिरं॥ ९ ॥

(छाया)

श्रावस्तीपूर्वपार्थिवं च वरहस्तिमस्तकप्रशस्तविस्तीर्ण संस्थितं स्थिरसदृक्षवक्षसं मदकललीलायमानवर गंधहस्ति प्रस्थानप्रस्थितं संस्तवार्हं हस्तिहस्तबाहुं ध्मातकनकरुचकनिरुपहतपिंजरं प्रवरलक्षणोपचितसौम्यचारुरूपं श्रुति सुखमनोऽभिरामपरमरमणीयवरदेवदुंदुभिनिनादमधुरतरशुभ गिरम् ।

(पदार्थ)

(सावत्थि) अयोध्याके (पुव्व) दीक्षाग्रहणके पहिले (पत्थिवं) राजा (च) पादपूरणे (वर) श्रेष्ट (हत्थिमत्थय) हाथीकेमस्तक समान (पसत्थ) प्रशस्त और (विच्छिन्न) विस्तीर्ण है (संथिअं) शुभसंस्थान जिनका (थिर) कठोर और (सरिच्छ) अविषम है (वच्छं) वक्षस्थल जिनका (मयगय) मदयुक्त और (लीलायमाण) लीलाकरनेवाले (वरगंधहत्थि) श्रेष्ट गंधगजके (पत्थाण) गमनके समानहै (पत्थिअं) चरणोंकीगति जिनकी (संथव) स्तुतिके (अरिहं) योग्य (हत्थि) हाथीकी (हत्थ) सूंडके समानहैं (बाहुं) भुजा जिनकी (धंत) खूबतपेहुए (कणग) सोनेके (रुयग) आभूषणके समान (निरुवहय) स्वच्छहै (पिंजरं) पीतवर्ण जिनका (पवर) श्रेष्ट (लक्खण) चक्रांकुशादि चिन्होंसे (उवचिय) युक्त और (सोम्म) दर्शनीय (चारु) मनोहरहै (रूवं) रूप जिनका (सुइ) कानोंको (सुह) सुखदेनेवाली (मणाभिराम) मनको-आल्हाददेनेवाली (परमरमणिज्ज) अत्यन्तरमणीय (वर) श्रेष्ट ऐसी (देवदुंदुहि) देवोंकी दुंदुभिके (निनाय)

नादके समानहै (महुस्सर) अत्यन्तमधुर (सुभगिरं) शुभवाणी जिनकी ।

(भावार्थ)

दीक्षाग्रहणके पहिले अयोध्यापुरीके राजा श्रेष्टगजके मस्तकसमान प्रशस्त और विस्तीर्णहै शुभसंस्थान जिन्होंका, कठोर और समानहै वक्षस्थल जिन्होंका मदोन्मत्त और लीलाकरनेवाले श्रेष्टगंधगजके गमनके समानहै चरणोंकीगति जिन्होंकी, स्तुतियोग्य, हाथीकी सूंडकेसमानहैं भुजा जिन्होंकी अत्यन्त तपेहुएसोनेके आभूषणसमानहै स्वच्छपीतवर्ण जिन्होंका, श्रेष्टचक्रांकुशादि चिन्होंसेयुक्त और दर्शनीयहै मनोहररूप जिन्होंका, कानोंको सुखदेनेवाली और मनको आल्हाददायक अत्यन्त रमणीय और श्रेष्ट ऐसी देवोंकी दुंदुभिके नाद समानहै अतिमधुर शुभवाणी जिन्होंकी।

(रासलुधकछंदः)

(रासलुब्द्धउं)

अजिअं जिआरिगणं जिअसव्वभयं भवोहरिउं ।
पणमामि अहं पयउ पावंपसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥

(छाया)

जितारिगणं जितसर्वभयं (अथवा पुनरुक्तिदोषपरिहारार्थं) जीवश्रव्यभगं भवौघरिपुं एतादृशं अजितं प्रयतः अहं प्रणमामि (सः) भगवान् मे पापं प्रशमयतु ।

(पदार्थ)

(जिअ) जीतेहैं (अरिगणं) अष्टकर्मरूपशत्रु समुदाय जिन्होंने (जिअ) संज्ञिपंचेन्द्रियजीवोंको (सव्वभयं) श्रवणकेयोग्यहै ऐश्वर्यजिन्होंके (भवोह) संसारके प्रवाहके (रिउं) शत्रु ऐसे (अजिअं) अजितनाथस्वामीको (अहं) मैं (पयउ) मन वचन कायसे (पणमामि) नमस्कार करताहूं वह (भयवं) भगवान (मे) मेरे (पावं) पापको (पसमेउ) नष्टकरो ।

(भावार्थ)

जीतेहैं अष्टकर्मरूपशत्रुओंके समुदाय जिन्होंने संज्ञिपंचेन्द्रियजीवोंको श्रवणयोग्यहै परम ऐश्वर्य जिन्होंका संसारप्रवाहकेशत्रु ऐसे अजितनाथस्वामीको मैं मन-वचनकाय से प्रणामकरताहूं वे अजितनाथभगवान् मेरे पापोंको नष्टकरो ।

(वेष्टकच्छन्दः)

(वेड्ढउ)

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तउं महा-
चक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवरसहस्स-
वरनगरनिगमजणवयवई बत्तीसारायवरसहस्साणु-
आयमग्गो चउद्दसवररयण नवमहानिहि चउसट्ठि
सहस्सपवरजुवईणसुंदरवई चुलसीहयगयरहसय
सहस्ससामी छन्नवइगामकोडिसामी आसीजो
भारहम्मिभयवं ॥ ११ ॥

(छाया)

यः प्रथमं कुरुजनपदहस्तिनापुरनरेश्वरः ततः महाचक्र
वर्तिभोगः (आसीत्) महाप्रभावः यः भारतेक्षेत्रे भगवान्
पुरवरद्वासप्ततिसहस्रवरनगरनिगमजनपदपतिः द्वात्रिं-
शद्राजवरसहस्रानुयातमार्गः चतुर्दशवररत्ननवमहानिधि
चतुःषष्टिसहस्रप्रवरयुवतीनां सुन्दरपतिः चतुरशीतिहयगज
रथशतसहस्रस्वामी षण्णवतिग्रामकोटिस्वामी आसीत् ।

(पदार्थ)

(पढमं) प्रथम (कुरुजगवय) कुरुदेशमें (हत्थिणाउर)
हस्तिनापुरके (नरीसरो) राजाथे (तउ) अनंतर

(भारहवासहि) भरतचक्रवर्तीके (भोए) राज्य का उपभोगकिया (महप्पभावो) उत्सवोंसे, आत्माको अनुरंजन करनेवाले (भयवं) भगवान् (भारहम्मि) भारतवर्षमें (बाहत्तरि) बहात्तर (सहस्स) हजार (पुर) पुरोंमें (वर) श्रेष्ठ (वरनगर) उत्तम नगपुर (जिसमेंकर-न लगताहो उसे नगर कहना) (निगम) वनिकमहाजनोंके स्थान (जणवय) देशविशेषके (वई) पति (बत्तीसाराय-वरसहस्स) बत्तीसहजारश्रेष्ठ राजाओं से (अणुयाय) अनुयायी (मग्गो) मार्ग जिन्होंका (चउद्दस) चौदह (वररयण) श्रेष्ठरत्नोंके (नव) नौ (महानिहि) महानिधियोंके (चउसट्ठि सहस्स) चौंसठहजार (पवर) सुंदर (जुवईण) युवतियोंके (सुंदर) मनोहर (वई) पति (चुलसी) चौरासी (सय) सौ (सहस्स) हजार अर्थात् चौरासीलाख (हय) घोड़े (गय) हाथी (रह) रथ इन्होंकेस्वामी (छन्नवइकोडि) छन्नुकोड (गाम) गावोंके (सामी) अधिपति (आसीन) होतेहुए ।

(भावार्थ)

प्रथम कुरुदेशमें हस्तिनापुरके राजाथे अनंतर महा-चक्रवर्तीके भोगोंका उपभोगकरतेहुए उत्सवोंसे आत्मानु-

रंजनकरनेवाले सुंदरहवेलियोंसे श्रेष्ठ बहोत्तरहजारनगरोंके वणिक्स्थानोंके और देशविशेषोंके पति बत्तीसहजार मुकुटधारी राजाओंसे अनुयातहै मार्गजिन्होंका चौदह श्रेष्ठ रत्न नो महानिधि और चौंसठ्हजार अत्यन्तसुंदर युवतियोंके मनोहरपति चोरासीलाख हाथी घोडे और रथोंके अधिपति छानवेकोट गावोंके स्वामी ऐसे भारतक्षेत्र में भगवान् होतेहुए ।

(रासानंदितकंछंदः)

(रासानंदिअयं)

(युगलं) ॥ तं सन्तिं संतिकरं संतिण्णं सव्व-
भया । संतिं थुणामि जिणं संतिं विहेउमे ॥१२॥

(छाया)

शान्तिं स्वान्तिकरं सर्व्वभयात् संतीर्णं एतादृशं तं शान्ति जिनं मे शान्ति विधातुं स्तौमि ।

(पदार्थ)

(संतिं) मूर्तिमान उपशम (संतिक) अपने मोक्षलक्षणसामीप्यको (रं) देनेवाले (सव्वभया) सम्पूर्णको भयहै जिससे ऐसे मृत्युसे (संतिण्णं) तिरेहुए और स्वभक्तोंको तिरानेवाले ऐसे (तं) उन प्रसिद्ध

(जिणं) जिनभगवान् (संतिं) शान्तिनाथस्वामीकी (मे) मेरे (संति) उपसर्गोंके नाशको (विहेउ) करनेकेलिये (थुणामि) स्तुतिकरताहूं ।

(भावार्थ)

मूर्तिमान उपशम मोक्षलक्षणस्वसामीप्यको देनेवाले सकलभयकारकमृत्युसे तिरेहुए और स्वभक्तोंको तिराने वाले ऐसे उन प्रसिद्ध जिनभगवान शान्तिनाथस्वामीकी मेरे दुःखोंके नाशकेहेतु मैं स्तुतिकरताहूं ।

(चित्रलेखाछंदः)

(चित्तलेहा)

इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण विगयतमा विहुयरया ॥ अजिउत्तमतेअगुणेहिं महामुणिअमिअबला । विउलकुला पणमामि ते भवभयमुरण जगसरणा मम सरणं ॥ १३ ॥

(छाया)

हे ऐक्ष्वाक हे विदेहनरेश्वर हे नरवृषभ हे मुनिवृषभ हे नवशारदसकलशश्याननन (भाषायां सकलशब्दस्य परनिपात आर्षत्वात्) अथवा नवशारदशशिसकलानन

(शारदशशिवत् सकलं दीप्तिसहितं आननंयस्य) हे विगततमः हे विधूतरजः हेगुणैः उत्तमतेजः हे महामुन्यमित बल हे विपुलकुल हे अजित तुभ्यं अहं प्रणमामि हे भवभयमूरण हे जगच्छरण (त्वं) मम शरणं असि।

(पदार्थ)

(इक्खाग) हे इक्ष्वाकुकुलोद्भव (विदेहनरीसर) हे विदेहजनपदाधिपति (नरवसहा) हे मनुष्योंमें श्रेष्ट (मुणिवसहा) हे मुनियोंमें श्रेष्ट (नव) उदयमान (सारय) शरत्कालिक (सकल) सोलहकलाओंसे परिपूर्ण (सासि) चन्द्रमाके समानहै (आणण) मुखजिनका (विगय) नष्टहोगयाहै (तम) अज्ञानरूप अंधकार जिनका (विहुय) धुलगएहैं (रज) कर्मरूप दोष जिनके (गुणेहिं) सद्गुणोंसे (उत्तमतेअ) श्रेष्टहै तेज जिनका (महमुणि) महामुनियोंसेभी (अमिअबला) अत्यन्त अधिकहै बल जिनका (विउलकुला) विस्तीर्णहै वंशाजिनका (अजिअ) हे अजितनाथस्वामी (ते) आपको (पणमामि) मैं नमस्कारकरताहूं (भवभय) सांसारिक भयको (मूरण) नष्टकरनेवाले (जगसरण) हे जगतको आश्रयदेनेवाले (मम) मेरे (सरण) रक्षक हो।

(भावार्थ)

हे इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न हे विदेहनगरके नरपति, हे मनुष्यों में श्रेष्ठ हे मुनियोंमें उत्तम, हे शरत्कालिकउदयहोने वाले सोलहकलाओंसेपरिपूर्ण चांदके समान मुखवाले, हे अज्ञानरूपअंधकारसे रहित, धुलगयेहैं बद्धकर्मरूपरज जिनके, सद्गुणोंसे श्रेष्ठहै तेज जिनका, महामुनियोंसे भी अत्यन्त अधिकहै यशजिनका, विस्तीर्णहै वंश जिनका, ऐसे हे अजितनाथस्वामी मैं आपको नमस्कारकरताहूं हे सांसारिकजन्ममरणरूपभयको नाशकरनेवाले हे जगतको आश्रयदेनेवाले आप मेरे संरक्षकहो।

(नाराचकच्छंदः)

(नारायउ)

देवदाणविंदचंदसूरवंद हट्ठतुट्ठजिट्ठपरमलट्ठरूव धंतरुप्पपट्टसेयसुद्धनिद्धधवलदंतपंति संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर दित्ततेअवंद धेअ सव्वलोअभाविअप्पभावणेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥

(छाया)

हे देवदानवेन्द्रचन्द्रसूर्यवन्द्य हे हृष्टतुष्टज्येष्टपरमलष्टितरूप

हे धमातरूप्यपट्टश्रेयःशुद्धस्निग्धधवलदंतपङ्क्ते हे शक्ति कीर्तिमुक्तियुक्तिगुप्ति प्रवर हे दीप्ततेजोवृन्द हे ध्येय हे सर्वलोकभावितप्रभावज्ञेय हे शान्ते मे समाधिं प्रदिश ।

(पदार्थ)

(देव दाणविंद) देव और दानवोंके इन्द्रसे (चन्द) द्वादशचंद्रोंसे (सूर) द्वादश सूर्योंसे (वंद) वंद्य (हट्ठ) रोगरहित (तुट्ठ) प्रीतिको उत्पन्नकरनेवाला (जिट्ठ) अति प्रख्यात (परमलट्ठ) अत्यन्तसुंदरहै (रूव) रूपजिनका (धंत) देदीप्यमान (रूप्प) चान्दिके (पट्ट) पात्रके समान (सेय) घन (सुद्ध) निर्मल (निद्ध) अरुक्ष (धवल) सफेद (दंतपंति) दांतोंकीपंक्तिहै जिनकी (सत्ति) सामर्थ्य (कित्ति) कीर्ति (मुत्ति) निर्लोभता (जुत्ति) न्याययुक्तवचन (गुत्ति) रक्षण इन्होंसे (पवर) श्रेष्ट (दित्त) देदीप्यमान (तेअ) तेजके (वंद) समूह (धेअ) ध्यानकेयोग्य (सव्व) सम्पूर्ण (लोअ) लोगोंसे (भाविअ) ज्ञात (प्पभाव) माहात्म्यसे (णेअ) जाननेलायक (संति) हे शान्तिनाथस्वामी (मे) मुझे (समाहिं) अंतःकरणकी स्वस्थता (पइस) देओ ।

(भावार्थ)

देव और दानवोंके इन्दसे द्वादश सूर्योंसे और द्वादश चन्द्रमाओंसे वन्दना कियेगए, रोगरहित, प्रीतिको उत्पन्न करनेवाला अतिप्रख्यात और परमसुन्दर है स्वरूप जिनका, देदीप्यमान चांदीके पात्रसमान घन निर्मल अरुक्ष और सफेद है दांतोंकी पंक्तियां जिनकी, शक्तिसे कीर्तिसे निर्लोभतासे न्याययुक्त वचनोंसे अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रकाशमान तेजकेसमूह रूप, ध्यानकेयोग्य, सब लोगोंमें प्रख्यात महात्म्यसे जाननेलायक, ऐसे हे शान्तिनाथस्वामी, आप मुझे अन्तःकरणकी स्वस्थता देओ।

(कुसुमलताछंदः)

॥ कुसुमलया ॥

॥ युगलं ॥

विमलससिकलाइरेअसोम्मं । वितिमिरसूरकराइरेअतेअं ॥ तिअसवइगणाइरेअरूवं । धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥

(छाया)

विमल शशिकलातिरेकसौम्यं वितिमिरसूर्यकरातिरेकतेजसं त्रिदशपतिगणातिरेकरूपं धरणिधरप्रवरातिरेकसारम्।

(पदार्थ)

(विमल) निर्मल (ससिकला) चन्द्रकलासे भी (अइरेअ) अधिक है (सोम्मं) सौंदर्य्य जिनका (वितिमिर) मेघरहित (सूरकर) सूर्यकिरणोंसे भी (अइरेअ) अधिकहै (तेअं) तेज जिनका (तिअसवइ) इन्द्रोंके (गण) समुदायसे भी (अइरेअ) अधिकहै (रूवं) स्वरूप जिनका (धरणिवर) पर्वतोंमें (प्पवर) श्रेष्ट जो मेरुपर्वत उससे भी (अइरेअ) अधिक है (सारं) स्थिरता जिनकी ।

(भावार्थ)

निर्मल चन्द्रकलासे भी अधिकतर है सौंदर्य्य जिनका, मेघरहित सूर्यकिरणोंसे भी अधिकतर है तेज जिनका, देवताओंके पति इन्द्रादिकों के समूहसे भी अधिक है स्वरूपजिनका, पर्वतोंमें श्रेष्टतम सुमेरुपर्वतसे भी अधिक है स्थिरता जिनकी ।

(भुजंगपरिरिंगितंछंदः)
(भुअगपरिरिंगिअं)

सत्तेअ सया अजिअं सारीरेअ बले अजिअं ।

नयसंजमेअ आजिअं एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥

(छाया)

सत्वे सदा अजितं शारीरे बले अजितम् तपःसंयमे अजितं (एतादृशं) अजितं जिनं एषः अहं स्तौमि ।।

(पदार्थ)

(सत्तेअ) व्यवसायमें (सया) निरंतर (अजिअं) न जीते जानेवाले (सारीरेअ) शरीरके (बले) बलमें (अजिअं) न जीते जानेवाले (तव) बारह प्रकार के तपमें और (संजमे) सतरह प्रकारके संयममें (आजिअं) न जीतेजानेवाले ऐसे (जिणं) जिनभगवान (अजिअं) अजितनाथ स्वामीकी (एस) यह (अहं) मैं (थुणामि) स्तुति करताहूं ।

(भावार्थ)

उद्योगमें सर्वकाल न किसीसे जीते जानेवाले देह संबंधी बलमें भी न किसीसे जीतेजानेवाले बारह प्रकार के तप और सतरह प्रकारके संयममें भी अजित ऐसे जिनभगवान अजितनाथ स्वामीकी यह मैं स्तुति करताहूं ।

(खिज्जितकच्छंदः)

॥ खिज्जियं ॥

सोम्मगुणेहिं पावइ नतं नवसारयससी । ते-
अगुणेहिं पावइनतं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं
पावइनतं तिअसगणवई । सारगुणेहिं पावइनतं
धरणिधरवई ॥ १७ ॥

(छाया)

नवशारदशशी सौम्यगुणैः तं न प्राप्नोति नवशारद्रविः
तेजोगुणैः तं न प्राप्नोति त्रिदशगणपतिः रूपगुणैः तं न
प्राप्नोति धरणिधरपतिः सारगुणैः तं न प्राप्नोति ।

(पदार्थ)

(नव) उदयहोनेवाला (सारय) शरदऋतु संबंधी
(ससी) चांद (सोम्मगुणेहिं) आल्हादकत्वादि
गुणोंसे (तं) अजितनाथ स्वामीको (न) नहीं (पावइ)
प्राप्त होसकता (नव) नया (सरय) शरत्काल संबंधी
(रवी) सूर्य (तेअगुणेहिं) प्रचंडतापादि गुणोंसे (तं)
अजितनाथ स्वामीको (न) नहीं (पावइ) प्राप्त
होसकता (तिअस) देवताओंके (गण) समुदायका
(वई) पति इन्द्र (रूव गुणेहिं) सौंदर्यादि गुणोंसे

(तं) अजितनाथ स्वामीको (न) नहीं (पावइ) प्राप्त होसकता (धरणिधर) पर्वतोंका (वई) पति सुमेरुपर्वत (सारगुणेहिं) स्थैर्य्यादि गुणोंसे (तं) अजितनाथ स्वामीको (न) नहीं (पावइ) प्राप्त होसकता ।

(भावार्थ)

उदय होनेवाला शरदऋतुका चांद अपने आल्हादकत्वादि गुणोंसे अजितनाथ स्वामीकी बराबरी नहीं कर सकता, तथा शरत्कालिक सूर्य्य अपने प्रचण्ड तापादि गुणोंसे अजितनाथ स्वामी की बराबरी नहीं करसकता, देवोंका पति इन्द्र भी अपने सौंदर्यादि गुणोंसे अजितनाथ स्वामी की बराबरी नहीं करसकता, तथा पर्वतोंका स्वामी मेरुपर्वत भी अपने निश्चलतादि गुणोंसे अजितनाथ स्वामी की बराबरी नहीं करसकता ।

(ललितकंछंदः)

(ललिअयं)

तित्थवरपवत्तयं तमरयरहियं धीरजणथुअच्चिअं
चुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं, तिगरणपयओ
संति महं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १९ ॥

(छाया)

तीर्थवरप्रवर्तकं तमोरजोरहितं धीरजनस्तुतार्चितं च्युतकलिकलुषं शांतिसुखप्रवृत्तदं (अथवा) शांतिसुख प्रवृत्तकं त्रिकरणैः (मनोवाक्कायैः) प्रयतः अहं महामुनिं शान्तिं शरणं उपनमे. (शांतिसुखप्रवृत्तान् दयते पालयति स शान्तिसुखप्रवृत्तदः तम्)

(पदार्थ)

(तित्थवर) सकल तीर्थोसें श्रेष्ट तर्थिको (पवत्तयं) प्रवृत्त करनेवाले (तम) तमोगुण और (रय) रजोगुण से (रहिय) रहित (धरिजण) पण्डितजनों से (थुअच्चिअं) स्तुति कियेगये और पुष्पोंसे पूजित (चुअ) नष्ट होगयाहै (कलिकलुसं) वैर और मनका मेलापन जिनका (संतिसुह) मोक्षसुखमें (पवत्त) लगेहुए जनोंको (यं) पालन करनेवाले ऐसे (महामुणिं) महामुनि (संतिं) शान्तिनाथ स्वामी को (तिगरण) मन वचन कायसे (पयओ) पवित्र होकर (सरणं) शरण (उवणमे) जाताहूं ।

(भावार्थ)

श्रेष्ट चतुर्विध संघको प्रवृत्त करनेवाले, तमोगुण और

रजोगुणसे रहित, पण्डितजनोंने वाणीसे स्तुति की है जिनकी मोक्षसुखार्थी, लोगोंको रक्षण करनेवाले ऐसे महामुनि शान्तिनाथ स्वामीको मन वचन कायसे उत्कंठित होकर मैं शरण जाताहूं ।

(किसलयमालछंदः)

॥ किसलयमाला ॥

॥ विशेषकं ॥

विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअंथिमिअं
विबुहाहिवधणवइनरवइथुयमहिअच्चिअंबहुसो अइ-
रुग्गय सरयदिवायरस महिअ सप्पभंतवसा गगणं-
गणविहरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १५ ॥

(छाया)

विनयावनतशिरोरचितांजलि ऋषिगणसंस्तुतम् स्तिमितं विबुधाधिपधनपतिनरपतिभिः क्रमेण स्तुतं महितं बहुशः अर्चितं. तपसा अचिरोद्गतशरद्दिवाकरसमधिकस्वप्रभं शिरसा गगनांगणविहरणसमुदितचारणवंदितम् ।

(पदार्थ)

(विणओणय) विनयसे झुकेहुए (सिर) मस्तकों पर (रइ) रचितहैं (अंजलि) अंजलि जिन्होंने

(रिसिगण) ऐसे ऋषियोंके समुदायने (संथुअं) स्तुतिकी है जिनकी, (थिमिअं) निश्चयसे (विबुहाहिव) इन्द्र (धणवइ) धनदादिलोकपाल और (नरवइ) राजाओंने (थुय) स्तुति की है जिनकी (महि) पूजा की है जिनकी (बहुसो) अनेकवार (अच्चिअं) पुष्पादिकों से अर्चनाकीहै जिनकी, (तवसा) तपश्चर्यासे (अइरुग्गय) तत्काल उगाहुआ (सरयदिवायर) शरतकालिक सूर्य्य से (समहिअ) अधिकहै (सप्पभं) स्वकीय कान्ति जिनकी, (सिरसा) मस्तकसे (गगणंगण) आकाश में (विरहण) संचारसे (समुइअ) समुदित (चारण) जंघाचारणादि मुनियोंने (वंदिअं) वन्दन किया है जिनको।

(भावार्थ)

विनयसे झुकेहुए मस्तकों पर अंजलियां रख ऋषियों ने स्तुति की है जिनकी, देवाधिपति इन्द्रने अपनी वाणीद्वारा निश्चयपूर्वक स्तुति की है जिनकी, धनदादि लोकपालने स्नानादिकों से पूजा की है जिनकी, और राजाओंने पुष्पादि द्रव्योंसे अनेकवार अर्चना की है जिनकी, [illegible]

के सूर्यसे भी अधिक है स्वकान्ति जिनकी, आकाश में विहार करनेवाले जंघाचारणादि मुनियोंने स्वमस्तक से वंदना की है जिनको।

(सुमुखंछंदः)

॥ सुमुहं ॥

असुरगरुलपरिवंदिअं किंनरोरगणमं सिअं। देव कोडिसयसंथुयं समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥

(छाया)

असुरगरुडपरिवंदितं किन्नरोरग नमस्यितं देवकोटिशत संस्तुतं श्रमणसंघपरिवंदितम्।

(पदार्थ)

(असुर) असुरकुमार (गरुल) सुपर्णकुमारादि भवनवासी देवताओंने (परि) आसपासआकर (वंदिअं) वंदन किया है जिनको, (किंनरोरग) किन्नर निकाय और व्यंतरनिकाय जातीके देवताओने (णमंसिअं) नमन कियाहै जिनको, (देवकोडिसय) सोकोट देवताओं ने (संथुयं) स्तुति कीहै जिनकी, (समण) साधुओं ने और (संघ) श्रावक श्राविकाओंने (परिवंदिअं) स्तवन कियाहै जिनका. (समणसंघः साधुसमुदाय)।

(भावार्थ)

असुरकुमार सुपर्णकुमार और भवनवासी देवताओंने आसपास आकर वंदनकिया है जिनको, किन्नरनिकाय और व्यंतरनिकाय के देवताओंने नमस्कार किया है जिनको, सोकोट देवताओंने तथा साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओं ने स्तुति कीहै जिनकी।

(विशुद्धिलसितच्छंदः)

॥ विज्जुविलसिअं ॥

अभयं अणहं अरयं अरुजं अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥ २१ ॥

(छाया)

अभयं अनघं अरतं अरुजं अजितं अजितं पदतः प्रणमामि (पदतः पादयो आद्यादित्वात्तस्)।

(पदार्थ)

(अभयं) सप्तविधभय रहित (अणहं) पापरहित (अरयं) आसक्तिरहित (अरुजं) रोगरहित (अजिअं) कामक्रोधादि शत्रुओंसे अनभिभूत ऐसे (अजिअं) ... स्वामी के (पयओ) चरणोंमें (पणमे) ... करताहूं।

आये हुए, (संसभमो) जल्दीसे (अरण) आकाशसे उतरने से (वखुभिअ) संचालित (लुलिअ) लुलित (चल) चंचल ऐसे (कुंडल) कानके आभूषण (अंगय) बाहुभूषण (किरीड) मुकुटों से (सोहंत) शोभायमान हैं (मउलिमाला) शिरःपंक्ति जिन्होंकी।

(भावार्थ)

श्रेष्ट विमान सुन्दर सोनेकेरथ और घोडे इत्यादि वाहनों से शीघ्रही आये हुए और जल्दी आकाश से उतरनेसे चलायमान लुलित और चंचल ऐसे कुण्डल बाहुभूषण और मुकुटों से शोभायमान हैं शिरः पंक्ति जिन्होंकी।

(रत्नमालाच्छंदः)

रयणमाला

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता आयरभूसिअसं भमपिंडिअसुट्ठुसुविम्हिअसव्व-बलोघा। उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभासुरिअंगा गायसमोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥

(छाया)

वैर वियुक्ताः भक्तिसुयुक्ताः आदरभूषितसंभ्रमपिण्डित सुष्ठुसुविस्मितसर्वबलौघाः उत्तमकाञ्चनरत्नप्ररूपितभा-स्वरभूषणभासुरिताङ्गाः गात्रसमवनतभक्तिवशागतप्राञ्जलिप्रेषितशिरःप्रणामाः एतादृशाः साधुसंघाः सुरसंघाः यं प्रति ।

(पदार्थ)

(वेर विउत्ता) शत्रुतासे रहित (भत्तिसुजुत्ता) सद्भावीसहित (आयर) शास्त्रोपचारसे (भूसिअ) भूषित (संभम) सत्वर (पिंडिअ) मिलेहुए (सट्ठु) अत्यर्थ (सुविम्हिअ) आश्चर्ययुक्त है (सव्वबलोघा) सम्पूर्ण वाहनादि समुदाय जिन्होंका, (उत्तम) देदीप्यमान (कंचण) सुवर्ण और (रयण) रत्नोंसे (परूविअ) कियेहुए (भासुर) प्रकाशमान (भूसण) अलंकारोंसे (भासुरि) सुशोभित हैं (अंगा) अंग जिन्होंके (गाय) गात्रसे (समोणय) सम्यक् नमेहुए और (भत्ति) भक्तिके (वसागय) वशीभूत (पंजलि) ललाटपर स्थापित कियेहुए मुकुलाकृति हस्तयुगलद्वारा (पेसिअ) किया है (सीसपणामा) मस्तकसे प्रणाम

जिन्होंने, ऐसे (सासुरसंघाः) असुर देवताओंके संघ के साथ (सुरसंघा) सुर देवताओंके संघ।

(भावार्थ)

वैरभावसे रहित, भक्तिपूर्वक बाह्योपचारसे भूषित सत्वर मिलेहुए अत्यन्त आश्चर्ययुक्त हैं सैन्यसमुदाय जिन्होंके, उत्तम सुवर्णमय और रत्नजटित देदीप्यमान अलंकारों से सुशोभित हैं अंग जिन्होंके, शरीरसे भली भांति झुके हुए अत्यन्त प्रेमके वशीभूत होकर हाथजोड किया है प्रणाम जिन्होंने ऐसे असुर देवता और सुर देवताओं का संघ।

(क्षिप्तकच्छंदः)

॥ खित्तिअं ॥

वंदिऊण थोऊण तो जिणं तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥

(छाया)

(ते) सुरासुरा जिनं वंदित्वा च (वाग्भिः) स्तुत्वा ततः त्रिगुणं प्रदक्षिणं (कृत्वा) (स्वस्थानगमनावसरे) पुनरपि (तं) जिनं प्रणम्य प्रमुदिताः सन्तः ततः स्वभवनानि गताः।

(पदार्थ)

(सुरासुरा) सुर और असुर देवता (जिणं) जिनभगवानको (वंदिऊण) वन्दन कर (थोऊण) वाणी से स्तुति कर (तो) अनंतर (तिगुणमेव) तीनही (पयाहिणं) प्रदक्षिणा (कर) (य) और (पुणो) फिर (जिणं) जिनभगवान को (पणमिऊण) प्रणामकर (पमुइआ) अत्यन्त हर्षित होकर (तो) अनंतर (सभवणाइं) स्वभवनको (गया) गए ।

(भावार्थ)

सुर और असुर देवता जिन भगवान को वंदन कर और वाणीसे स्तुति कर अनंतर तीन प्रदक्षिणा कर अपने अपने घर जानेके समय फिर भगवानको प्रणाम कर अत्यन्त हर्षित हो अपने अपने घर गए ।

(क्षिप्तकछंदः)

॥ खित्तयं ॥

तं महामुणिमहंपिपंजली रागदेसभयमोह वज्जिअं । देवदाणव नरिंदवंदिअं संतिं मुत्तम-महातवं नमे ॥ २५ ॥

(छाया)

रागद्वेषभयमोहवर्जितं देवदानवनरेन्द्रवन्दितं उत्तम महातपसं तं महामुनिं शान्तिनाथं अहमपि प्रांजलिः सन् नमे ।

(पदार्थ)

(राग) प्रीति (दोस) द्वेष (भय) डर (मोह) अज्ञान इन्होंसे (वज्जिअं) रहित (देव) देवता (दानव) और दानव (नरिंद) राजाओं से (वंदिअं) नमस्कृत अथवा (देवदानवनरिंद) ऊर्ध्वलोकवासी अधोलोकवासी मध्यलोकवासी जीवों के (वंदिअं) कारागृह को नाश करनेवाले (उत्तममहातवं) उत्तम और दीप्त तपश्चर्यावाले (महामुणिं) महामुनि (संतिं) शान्तिनाथ स्वामीको (अहंपि) मैं भी (पंजली) हाथजोडकर (नमे) नमस्कार करताहूं ।

(भावार्थ)

रागद्वेषभय और मोहसे रहित, देवदानव और राजाओं ने नमस्कार किया है जिनको, अथवा तीनों लोक के जीवोंके संसाररूप कारागृह को तोडनेवाले, श्रेष्ठ तथा दीर्घ तपोबलधारी महामुनि शान्तिनाथ स्वामी को मैं भी हाथ जोडकर नमस्कार करताहूं ।

(चतुर्भिःकलापकं)

(दीपकछंदः)

॥ दीवयं ॥

अंबरंतर विआरणिआहिं ललिअहंसवहुगामिणि· आहिं। पीणसोणथणसालणिआहिं सकलकमल· दललोअणिआहिं ॥ २६ ॥

(छाया)

अंबरंतरविहारिणीभिः ललितहंसवधुगामिनीभिः पीन श्रोणिस्तनशालिनीभिः सकलकमलदललोचनाभिः।

(पदार्थ)

(अंबरंतर) आकाशमार्गमें (विआरणिआहिं) संचार करने वाली (ललिअ) सुन्दर (हंसवहू) हंस पक्षी की स्त्री के समान (गामिणिआहिं) गमन करने वाली (पीण) पुष्ट (सोण) नितंब और (थण) स्तनों से (सालणिआहिं) शोभायमान (सकल) संपूर्ण (कमलदल) कमलपत्रके समान हैं (लोअणिआहिं) नेत्र जिन्होंके।

(भावार्थ)

आकाश मार्ग में संचार करनेवाली, सुन्दर हंस पक्षी

की स्त्री के समान गमन करनेवाली, मांसल नितंब और रत्नों से शोभायमान, सम्पूर्ण कमलपत्र के समान हैं नेत्र जिन्होंके ऐसी।

(चित्राक्षराछंदः)

चित्तक्खरा ॥

पीणनिरंतरथणभरविणमिअगायलयाहिं । मणि कंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ॥ वर-खिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसाणिआहिं । रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥

(छाया)

पीननिरंतरस्तनभरविनमितगात्रलताभिः मणिकांचन प्रशिथिलमेखलशोभितश्रोणीतटाभिः वरकिंकिणीनूपुर सतिलकवलयविभूषणाभिः रतिकरचतुरमनोहरसुंदर-दर्शनाभि ।

(पदार्थ)

(पीण) मांसल (निरंतर) अन्तररहित (थण) स्तनोंके (भर) भारसे (विणमिअ) नम्रहैं (गायलयाहिं) गात्रलता जिन्होंकी (मणि) हीरेमाणिक और (कंचण) सोनेके (पसिढिल) प्रशिथिल (मेहल) मेखलाओंसे

(सोहिअ) सुशोभित हैं (सोणितडाहिं) नितंबतट जिन्होंके (वर) श्रेष्ट (खिंखिणि) पावोंके घूघरे और (नेउर) नूपुर (सतिलय) सुन्दर तिलक (वलय) कंकण इत्यादि हैं (विभूसणिआहिं) आभूषण जिन्होंके (रइकर) प्रीति उत्पन्नकरनेवाले (चउर) चतुरों के (मणोहर) मनको आकर्षण करनेवाले (सुंदर) रमणीय हैं (दंसणिआहिं) दर्शन जिन्होंके ।

(भावार्थ)

मांसल अन्तररहित स्तनोंके भारसे नम्र हैं गात्रलता जिन्होंकी हीरे माणिक और सोनेके प्रशिथिल मेखलाओं से सुशोभित हैं नितंबतट जिन्होंके, सुन्दर पावोंके घूघरे, नूपुर, उत्तमतिलक और कंकण इत्यादि आभूषण हैं जिन्होंके. प्रीति उत्पन्न करनेवाले, चतुर पुरुषोंके अन्तःकरण को आकर्षण करनेवाले और अत्यन्तरमणीय हैं दर्शन जिन्होंके ।

(नाराचकछंदः)

॥ नारायओ ॥

देवसुंदरी हिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप-

गारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिलयपत्तलेहनाम
एहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्तिसंनिविट्ठवंदणा
गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥

(छाया)

कैःकैरप्यपांगतिलकपत्रलेखनामभिः चिल्लैः मण्डनो
दुणप्रकारकैः संगताङ्गकाभिः पादवृन्दाभिः देवसुदरीभिः
यस्य तौ सुविक्रमौ क्रमौ वन्दितौ च भक्तिसन्निविष्टवन्द
नागताभिः (देवसुन्दरीभिः) आत्मनः ललाटकैः तौ
क्रमौ पुनःपुनर्वन्दितौ भवतः (चिल्लैः चित्तं लगन्तीति
चिल्लाः तैः चिल्लैः अतिरम्यैरित्यर्थः) ।

(पदार्थ)

(केहिं केहिं) बे अपूर्व (वि) भी (अवंग)
नेत्रोंमें काजलकी रचना (तिलय) तिलक (पत्तलेह)
कस्तूरी की स्तनोंपर विशेष रचना इत्यादि (नामएहिं)
नाम हैं जिन्होंके (चिल्लएहिं) अतिरम्य (मण्डण)
आभूषणोंकी (उडुण) रचनाओं के (पगारएहिं)
प्रकार से (संगयं) युक्तहैं (अंगयाहिं) शरीर जिन्हों
का ऐसी (पाय) शरीर के अथवा आभूषणोंके किरणो
के (वंदिआहिं) समुदाय है जिन्होंपर ऐसी (देसुंदरीहिं)

देवांगनाओंसे (जस्स) जिनभगवानके (ते) वे प्रसिद्ध (सुविक्कमा) अत्यन्त पराक्रमशाली (कमा) चरण (वन्दिआ) वन्दना कियेगए (य) और (भत्ति) अत्यन्त प्रेमसे (संनिविट्ठ) व्याप्त (वंदण) नमस्कार के हेतु (आगयाहिं) आई हुई देवांगनाओं से (अप्पणो) अपने (निडालएहिं) प्रशस्त ललाटोंसे (ते) वे चरण (पुणो पुणो) बारबार (वन्दिआ) वन्दित (हुन्ति) होतेहैं ।

(भावार्थ)

अपूर्व अपांग तिलक और पत्रलेख इत्यादि नामों से विख्यातरचनाओंसे और आभूषणोंकी रचनाओंके प्रकार से भूषित हैं शरीर जिन्होंके और आभूषणोंके किरणोंसे मण्डित ऐसी देवाङ्गनाओंने जिनभगवानके पराक्रम शाली चरणोंको वन्दन किया और अत्यन्त प्रेमसे प्रपूरित नमस्कारके हेतु फिर आईहुई देवांगनाओंने उन चरणों को बारबार नमस्कार किया ।

(नंदितकंछंदः)

नंदिअयम् ॥

तमहं जिणचंदं आजिअं जिअमोहं धुयसव्व-
किलेसं पयओ पणमामि ॥ २६ ॥

(छाया)

जिनचन्द्रं जितमोहं धुतसर्वक्लेशं तं अजितं प्रयतःअहं प्रणमामि ।

(पदार्थ)

(जिणचंदं) सामान्य केवलियों में चांदके समान (जियमोहं) जीतलिये हैं सांसारिकमोह जिनने (धुय) धोडाले हैं (सव्व) सम्पूर्ण (किलेसं) क्लेश जिनने ऐसे (तं) वे प्रसिद्ध (अजिअं) अजितनाथ स्वामी को (पयओ) पवित्र होकर (अहं) मैं (पणमामि) नमस्कार करताहूं ।

(भावार्थ)

सामान्य केवलियोंमें चांदके समान जीतलिये हैं सांसारिक मोह जिनने धोडालेहैं सम्पूर्ण क्लेश जिनने ऐसे वे प्रसिद्ध अजितनाथ स्वामीको मैं पवित्र होकर नमस्कार करताहू ।

(भासुरकंछंदः)

युगलं

थुयवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणेहिं तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तमसासणयस्सा भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं देववरच्छरसा बहुयाहिं सुरवररइ गुणपण्डिअयाहिं ॥ ३० ॥

(छाया)

भक्तिवशागतपिंडितकाभिः देववराप्सरोबहुकाभिः सुरवर रतिगुणपण्डितकाभिः देववधूभिः प्रयतं वा पदयोः प्रणतकस्य जास्यजगदुत्तमशासनस्य तौ (क्रमौ) ऋषिगणदेवगणैः स्तुतवन्दितौ ।

(पदार्थ)

(भत्तिवसागय) भक्तिवशहोकर देवलोकसे आकर (पिंडिअयाहिं) मिलीहुई (देववर) नृत्यकलामें श्रेष्ट देव और (अच्छरसा) अपसराओंका (बहुयाहिं) समुदायोंसे (सुरवर) श्रेष्ट देवताओंकी (रइ) प्रीति के उत्पादक (गुण) गुणोंमें (पंडिआहिं) निपुण (देववहूहिं) देवांगनाओंसे (पयओ) सम्यक् अथवा (चरणोंमें) (पणमिअरसा) नमस्कृत ऐसे (जरस) मोक्षके हेतु (जग्) जगतमें (उत्तम) श्रेष्टहै (सासणयरसा) शासन जिनका ऐसे (अरसा) जिन भगवान के (तो) वे प्रसिद्ध चरण (रिसिगण) ऋषिगणों से और (देवगणेहिं) देवगणों से (थुय) स्तुति कियेगए और (वंदि) वंदना कियेगए ।

(भावार्थ)

गान और वादनकला में निपुण, देवोंके साथ भक्ति-वश होकर देवलोक से आकर मिलीहुई अप्सराओंसे, और श्रेष्ट देवताओंकी प्रीतिको बढ़ानेवाले गुणोंमें पण्डित, ऐसी देवाङ्गनाओंसे सम्यक् नमस्कृत और मोक्षसुखके हेतु जगतमें श्रेष्टहै शासन जिनका ऐसे जिनभगवानके चरण ऋषि और देवगणोंसे वंदन कियेगए और स्तुति कियेगए ।

(नाराचकछंदः)

॥ नारायउ ॥

वंससद्द तंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कएअ सुइसमाणणेअ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं । वलयमेहलाकलावनेउराभिराम सद्दमीसए कए अ देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमपगारएहिं॥ नचिऊण अंगहारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा त यं तिलोय सव्व सत्त संतिकारयं । पसंतसव्वपावदोप मेसहं नमामि संति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥

(छाया)

वंशशब्दतंत्रीतालमिलिते त्रिपुष्कराभिरामशब्दमिश्रके कृते च श्रुतिसमानने कृते शुद्धषड्जगीतपादजालघंटिकाभिः उपलक्षिते वलयमेखलाकलापनूपुराभिरामशब्दमिश्रके कृते (सति) हावभावविभ्रमप्रकारकैः अङ्गहारैः नर्तित्वा देवनर्तकीभिः यस्य तौ मुनिक्रमौक्रमौ वन्दितौ तं त्रिलोकसर्वशान्तिकारकं प्रशान्तसर्वपापदोषं उत्तमं जिनं शान्तिनामानं एष अहं नमामि ।

(पदार्थ)

(वंस सद्द) बांसुरी की ध्वनि (तंति) वीणा और (ताल) तालसे (मेलिए) मिलेहुए (तिउक्खर) आतोद्यवाद्य, दर्दुरद, और मुरज इन्होंके मुखके (अभिराम) मधुर (सद्द) शब्द से (मीसए) मिश्रित (कए) कियेसते (अ) और (सुई) संगीत शास्त्रोक्त श्रुतियोंका (समाणणे) समीकरण कियसते (अ) और (सुद्ध) शुद्ध (सज्ज) षड्ज- स्वरसे (गीअ) गीतकेसाथ (पायजालघंटिआहिं) [पा]वोंमें किंकिणियाओंसे उपलक्षित और (वलय) कंकण [( ]मेहला) कंदोरा (कलाव) भूषण, और (नेउर)

नूपुर इन्होंके (अभिराम) मनोहर (सद्द) शब्दोंसे (मीसए) मिश्रित (कए) कियेसते (अ) और (हाव) बहुतकाम विकार (भाव) थोडा विकाराभिप्राय (विब्भम) विलास ये हैं (पगारएहिं) प्रकार जिसमें ऐसे (अंगहारएहिं) अंगविक्षेपोंसे (नच्चिऊण) नाचकर (देवनट्टिआहिं) देवताओं के सामने नाचनेवाली देवांगनाओंसे (जस्स) जिनभगवानके (सुविक्कमा) अत्यन्त पराक्रमशाली (ते) वे प्रसिद्ध (कमा) चरण (वंदिआ) वन्दन कियेगए (तयं) वे प्रसिद्ध (तिलोय) तीनों लोकमें (सव्व) सम्पूर्ण (सत्त) जीवोंको (संतिकारयं) विघ्नोपशम करनेवाले (पसंत) नष्ट होगये हैं (सव्व) सब (पाव) पापरूप (दोस) दोष जिनके (उत्तमं) श्रेष्ट (जिणं) जिनभगवान (संतिं) शान्तिनाथस्वामी को (एस) यह (अहं) मैं (नमामि) नमस्कार करताहूं ।

(भावार्थ)

वंसी सतार और तालसे मिलेहुए और आतोद्यवाद्य दर्दुरट और मुरज इन्हों की मधुर ध्वनिसे मिश्रित संगीत शास्त्रोक्त श्रुतियोंका समकिरण कियेसते शुद्ध

षड्जस्वर से गीतके साथ पावोंकी किंकिणियोंके शब्दसे मिलेहुए कंकण नूपुरआदि आभूषणों के मधुर शब्दसे मिश्रित हावभावकटाक्षादिपूर्वक अंगविक्षेपोंसे युक्त नृत्यकर देवनर्तकिओंने अत्यन्त पराक्रमशाली जिनभगवान के चरणकमलों को नमस्कार किया वे प्रसिद्ध तीनों लोकमें जीवोंके विघ्नोंको नाशकरनेवाले पाप दोषसे रहित ऐसे श्रेष्ट जिनभगवान शान्तिनाथ स्वामीको मैं भी नमस्कार करताहूं ।

(ललितकंछंदः)

ललिअयम्

॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥

छत्रचामरपड़ागजूवजवमंडिआ ज्झयवरमगर तुरय सिरिवच्छसुलंछणा । दीवसमुद्दमंदरदिसा· गयसोहिया सत्थिअवसहसीह सिरिवच्छसु लंछणा ॥ १२ ॥

(छाया)

छत्रचामरपताकायूपयवमण्डिताः ध्वजवरमकरतुरग श्रीवत्ससुलाञ्छनाः द्वीपसमुद्रमन्दर—दिग्गजशोभिताः स्वस्तिकवृषभसिंहश्रीवृक्षसुलाञ्छनाः ।

(पदार्थ)

(छत्र) छत्र (चामर) चामर (पड़ाग) पताका (जूव) स्तंभ (जव) यव इत्यादि चिन्होंसे (मंडिआ) शोभित (ज्झयवर) श्रेष्ठध्वज (मगर) मकर (तुरय) अश्व (सिरिवच्छ) श्रीवत्स इत्यादि है (सुलंछणा) सुलांछन जिन्होंमें (दीव) द्वीप (समुद्द) समुद्र (मंदर) सुमेरुपर्वत (दिसागय) दिग्गज इन्होंसे (सोहिआ) शोभित (सत्थिअ) स्वस्तिक (वसह) वृषभ (सीह) सिंह (सिरि) लक्ष्मी (वच्छ) वृक्ष इत्यादि (सुलंछणा) लक्षण हैं जिन्होंमें ।

(भावार्थ)

छत्र चामर पताका स्तंभ यव श्रेष्ठध्वज मकर अश्व श्रीवत्स द्वीप समुद्र सुमेरुपर्वत दिग्गज स्वस्तिक वृषभ सिंह लक्ष्मी वृक्ष इत्यादि चिन्होंसे सुशोभित ।

(वानवासिकछंदः)

॥ वाणवासिआ ॥

सहावलट्ठा समपइट्ठा अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ २३ ॥

(छाया)

स्वभावलष्टः शमप्रतिष्ठः अदोषदुष्टः गुणैः ज्येष्ठः प्रसादश्रेष्ठः तपसा पुष्टः श्रिया इष्टः ऋषिभिः जुष्टः ।

(पदार्थ)

(सहाव) स्वभाव से (लट्ठा) शोभायमान (सम) शान्तिसे (पइट्ठा) युक्त अथवा (असमप्रतिष्ठा=निरूपम है ख्याति जिन्होंकी) (अदोसदुट्ठा) वैषम्यरागादिकों से विकाररहित (गुणेहिं) सद्गुणोंसे (जिट्ठा) बड़े (पसाय) निर्मलतासे (सिट्ठा) श्रेष्ट (तवेण) तपोबलसे (पुट्ठा) पुष्ट (सिरीहिं) लक्ष्मीसे (इट्ठा) पूजित (रिसीहिं) ऋषियोंसे (जुट्ठा) सेव्यमान ।

(भावार्थ)

स्वभावसे शोभायमान शान्तियुक्त वैषम्य रागादिकोंसे विकाररहित सद्गुणोंसे युक्त निर्मलतासे श्रेष्ट तपश्चर्य्यासे पुष्ट लक्ष्मीसेपूजित ऋषियोंसे सेव्यमान ।

(अपरांतिकाछंदः)

॥ अपरांतिया ॥

ते तवेण धुयसव्वपावया सव्वलोअहिअमूल पावया । संथुया अजिअसंतिपयया हुंतु मे सिव- सुहाणदायया ॥ ३४ ॥

(छाया)

तपसा धुतसर्व्वपापकाः सर्वलोकहितमूलप्रापकाः ते अजितशान्तिपादाः संस्तुताः (सन्तः) मे शिवसुखानां दायकाः भवन्तु (संस्तुताः शंसुखहेतुरस्तुतं येषां) ।

(पदार्थ)

(तवेण) तपश्चर्य्यासे (धुय) नष्ट होगए हैं (सव्व) सम्पूर्ण (पावया) पातक जिन्होंके (सव्वं) सम्पूर्ण (लोअ) लोकके (हिअ) मोक्षारव्यहितके (मूल) ज्ञानदर्शन चरित्ररूप मूलको (पावया) प्राप्तकराने वाले (ते) पूर्वोक्त (अजिअ) अजितनाथ स्वामी के और (संति) शान्तिनाथ स्वामी के (पायया) चरण (संस्तुताः) सम्यक् वर्णन कियेसते (संस्तुता) सुख हेतुक स्तवनहै जिन्होंका (मे) मुझे (सिव) मोक्षरूप (सुहाण) सुखके (दायया) देनेवाले (हुंतु) होओ ।

(भावार्थ)

तपोबलसे प्रनष्टहोगए हैं सम्पूर्ण पातक जिन्होंके सम्पूर्ण लोकके मोक्षारव्यहितके ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मूलको प्राप्तकरानेवाले. सुखहेतुक स्तवनहै जिन्होंका ऐसे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीके चरण मुझे मोक्षरूप सुख देनेवाले होओ ।

(गाथा छंदः)

॥ गाहा ॥

एवं तवबलविउलं थुअं मए आजिअसंति जिण जुयलं ववगयकम्मरयमलं गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥

(छाया)

तपोबल विपुलं व्यपगतकर्मरजोमलं शाश्वतीं विमलां गतिं गतं (एतादृशं) अजितशान्तिजिनयुगलं मया एवं स्तुतम् ।

(पदार्थ)

(तवबल) तपोबलसे (विउलं) विशाल (ववगय) नष्टहोगयाहै (कम्म) ज्ञानावरणादि आठ कर्म और (रयमलं) बध्यमान कर्मोंकामल जिन्होंका (सासयां) आद्यन्तरहित (विमलां) कर्ममलसे रहित (गइं) मोक्षरूप गतिको (गयं) पहुंचेहुए एसे (आजिअसंति जिणजुयलं) दोनो जिनभगवान अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामी (मए) मुझसे (एवं) इस प्रका (थुअं) स्तुति कियेगये ।

(भावार्थ)

तपोबलसे विशाल नष्ट होगया है ज्ञानावरणादि आठ बध्यमान कर्मोंका मल जिन्होंका आद्यन्तरहित निर्मल मोक्षाख्य गतिको पहुंचेहुए ऐसे दोनों अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामी की इस प्रकार मैंने स्तुति की।

(गाथाछंदः)

॥ गाहा ॥

तं बहुगुणप्पसायं मुक्खसुहेण परमेण अविसायं।
नामेउमेविसायं कुणउअपरिसाविअपसायं ॥३६॥

(छाया)

बहुगुणप्रसादं परमेण मोक्षसुखेन अविषादं एतादृशं तत् जिनयुगलं मे विषादं नाशयतु च परिषदपि प्रसादं करोतु।

बहुगुणानां प्रसादो नैर्मल्यं यस्य अथवा बहुगुण प्रसादोऽनुग्रहो यस्य तत् (१) मदुक्तेर्गुणस्वीकरण-दूषणावर्जीरणलक्षण मनुग्रहं मयि करोतु।

(पदार्थ)

(बहुगुण) ज्ञानादि अनेक गुणोंका (प्पसायं)

प्रसाद है जिन्होंको (परमेण) उत्तम (मुक्खसुहेण) मोक्षसुखसे (अविसायं) विषादरहित (तं) पूर्वोक्त जिनयुगल (मे) मेरे (विसायं) खेदको (नासेउ) नाशकरो (अ) और (परिसावि) सभाजननी (पसायं) अनुग्रह (कुणउ) करो ।

(भावार्थ)

ज्ञानादि अनेक गुणोंका प्रसाद है जिन्होंको सर्वोत्तम मोक्षसुख होनेसे खेदरहित ऐसे पूर्वोक्त जिनयुगल मेरे खेदको नाशकरो और इस स्तोत्रको सुननेवाले सभाजन भी मुझपर क्षमारूप अनुग्रह करो ।

(गाथाछंदः)

॥ गाहा ॥

तंमोएउअनंदिं पावेउनंदिसेणमभिनंदिं। परिसाइ विसुहनंदिं ममयदिसउसंजमेनंदिं ॥ ३७ ॥

(छाया)

तत् (जिनयुगलं) (लोकानां) नंदिं मोदयतु नंदिषेणञ्च अभिनंदिं प्रापयतु परिषदोऽपि सुखनंदिं दिशतु संयमे ममच नंदिं दिशतु ।

(पदार्थ)

(तं) वह जिनयुगल (नंदिं) हर्ष (मोएउ) करो (अ) और (नंदिसेणं) नंदिषेण कविको (अभिनंदिं) आनंदसमृद्धि (पावेउं) प्राप्त कराओ (परिसाइवि) श्रोतृजनसभाको भी (सुहनंदिं) सुखसमृद्धि (दिसउ) देओ (य) और (मम) मुझे (संजमे) सतरहप्रकारके संयममें (नंदिं) आनंद (दिसउ) देओ ।

(भावार्थ)

वे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामी सम्पूर्ण जीवों को और नंदिषेण कविको आनंद समृद्धि देओ, और श्रोतृजनसभाको भी सुखसमृद्धि देओ और मुझे सतरह प्रकारके संयमोंमें आनंद देओ।

(गाथाछंदः)

॥ गाहा ॥

पक्खिअचाउम्मासिअ संवच्छरिए अवस्स भणि-अव्वो । सोयव्वो सव्वेहिं उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥

(छाया)

पाक्षिकचातुर्मासिकसांवत्सरिकेषु अवश्यं भणितव्यः

सर्वैः श्रोतव्यः एषः अजिशान्तिस्तवः उपसर्गनिवारणः अस्ति ।

(पदार्थ)

(पक्खिअ) पूर्णिमाको (चाउम्मासिअ) चातुर्मास में (संवच्छरिए) संवत्सरके प्रतिक्रमणके दिन (अवस्स) अवश्य (भणिअव्वो) पठन करनाचाहिये और (सव्वेहिं) सर्वोने (सोयव्वो) श्रवणकरना चाहिये (एसो) यह स्तवन (उवसग्ग) विघ्नोंका (निवारण) नाशकरने वाला है ।

(भावार्थ)

इस सम्पूर्ण विघ्नोंको नाशकरनेवाले अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीके स्तवनको पूनमकेदिन चोमासेमें और संवत्सरके प्रतिक्रमणके दिन अवश्य सब श्रावकोंने पठनकरना चाहिये और श्रवणकरना चाहिये ।

(गाथाछंदः)

॥ गाहा ॥

जो पढ़इजोअनिसुणइ उभओकालंपि अजिअ· संतिसंथयं । नहु हुंति तस्स रोगा पुव्वुपन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥

(छाया)

यः अजितशान्तिस्तवं उभयकालं पठति निशृणोतिच तस्य हु (निश्चितं) रोगाः न भवन्ति पूर्वोत्पन्ना अपि (रोगाः) नश्यन्ति ।

(पदार्थ)

(जो) जो मनुष्य (अजिअसंतिसंथयं) अजित॰ नाथ और शान्तिनाथ स्वामीक स्तवनको (उभओकालं) प्रातःकाल और सायंकाल (पढइ) पठनकरताहै (अ) और (निसुणइ) श्रवणकरता है (तस्स) उसे (रोगा) शारीरिक पीडा (हु) निश्चयसे (न) नहीं (हुंति) होतीहै (पुव्वुपन्ना) पहिले पैदाहुए रोग (पि) भी (विनासंति) नष्ट होतेहैं ।

(भावार्थ)

जो मनुष्य अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीके स्तवनको प्रातःकाल और सायंकाल पठनकरताहै और श्रवणकरताहै उसे शारीरिक पीडा निश्चयसे नहीं होती और इस स्तवनके पठनारंभके पहिले पैदाहुए रोगभी शान्त होजातेहैं ।

(गाथाछंद:)

॥ गाहा ॥

ववगयकलिकलुसाणं ववगयनिद्धंतरागदोसाणं ।
ववगयपुणब्भवाणं नमोत्थु देवाहिदेवाणं ॥ २० ॥

(छाया)

व्यपगतकलिकलुषेभ्यः व्यपगतनिर्धूतरागद्वेषेभ्यः
व्यपगतपुनर्भवेभ्यः देवाधिदेवेभ्यः नमः अस्तु ।

(पदार्थ)

(ववगय) नाशहोगया है (कलिकलुसाणं) कलहसंबंधि मनका मालिन्य जिनका (ववगयनिद्धंतरागदोसाणं) नष्ट होगए हैं रागद्वेष जिनके (ववगय) नाशहोगया है (पुणब्भवाणं) पुनर्जन्म जिनका ऐसे (देवाहिदेवाणं) देवाधिदेव तीर्थंकर भगवानको (नमो त्थु) नमस्कारहोओ ।

(भावार्थ)

नाशहोगया है कलहसंबंधी मनमालिन्य जिनका नष्ट होगए हैं रागद्वेष जिनके नाशहोगया है पुनर्जन्म जिनका ऐसे देवाधिदेव तीर्थंकर भगवानों के नमस्कार हो ।

(गाथाछंदः)

॥ गाहा ॥

सव्वं पसमइ पावं पुण्णंवड्ढइ नमंसमाणस्स ।
संपुन्नचंदवयणस्स ।कित्तणं आजिअसंतिस्स ॥ ४१॥

(छाया)

संपूर्णचन्द्रवदनयोः अजितशान्तिनाथयोः कीर्तनं नमस्यमानस्य सर्वं पापं प्रशमयति च पुण्यं वर्धयति ।

(पदार्थ)

(संपुन्न) संपूर्ण (चंद) चन्द्रके समान है (वयणस्स) मुख जिन्होंका ऐसे (अजिअ संतिस्स) अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीका (कित्तणं) कीर्तन (नमं समाणस्स) अजित शान्तिनाथ स्वामीको नमस्कार करने वाले पुरुषके (सव्वं) सब (पावं) पाप (पसमइ) नाश करता है और (पुण्णं) पुण्यको (वड्ढइ) बढाता है।

(भावार्थ)

पूर्णचन्द्रके समान मुख है जिन्होंका ऐसे अजितशान्तिनाथ स्वामीका कीर्तन अजितशान्तिनाथ स्वामीको नमस्कार करनेवाले पुरुषके सब पाप नाश करता है और पुण्यको बढ़ाता है ।

(गाथा छंदः)

गाहा

जइ इच्छह परमपयं अहवा कित्ति सुवित्थडां भुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४२ ॥

(छाया)

यदि परमपदं अथवा भुवने सुविस्तृतां कीर्तिं इच्छथ तदा त्रैलोक्योद्धरणे जिनवचने आदरं कुरुथ ।

(पदार्थ)

(जइ) यदि (परमपयं) मोक्षपद (अहवा) अथवा (भुवणे) जगतमें (सुवित्थडा) अतिविस्तीर्ण (कित्ति) कीर्ति (इच्छह) चहाते हो (ता) तो (तेलुकुद्धरणे) लोकत्रयको उद्धार करने वाले (जिणवयणे) जिन वचनमें (आयरं) आदर (कुणह) करो ।

(भावार्थ)

हे भव्य जीवो यदि मोक्षपद की अभिलाषाहो अथवा जगतमें अति विस्तीर्ण कीर्तिकी इच्छा हो तो तीनों लोक को उद्धार करने वाले जिनभगवानके वचनमें आदर करो ।

(स्तोत्रसमाप्तौ मंगलश्लोकाः)

॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् ॥
॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम्॥४३॥
॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥

॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ ४५ ॥

॥ स्मरणं यस्य सत्वानां तीव्रतापोपशांतये ॥
॥ उत्कृष्टगुणरूपाय तस्मै श्रीशान्तये नमः ॥४३॥

इति श्रीनन्दिषेणसूरिविरचितमजितशान्तिस्तवनमिन्दुरजैनश्वेताम्बर
पाठशालामुख्याध्यापकचौबे कुलोद्भव श्रीगोपीनाथ-
सूनुपण्डितश्रीकृष्णशर्मकृतसुबोधिनी-
व्याख्योपेतं समाप्तम् ॥

अथ जिनवल्लभसूरिकृतं

" उल्लासिक " स्तोत्रं प्रारभ्यते

श्रीमहावीरायनमः ॥

॥ गाथा ॥

ल्लासिक्कमनक्खनिग्गयपहादण्डच्छलेणंगिणं ॥
ारुणादिसन्तइव्वपयहंनिव्वाणमग्गावलिम् ॥
न्दुज्जलदंतकान्तिमिसउं नीहन्तनाणंकुरू ॥
ोवि दुइज्ज सोलस जिणे त्थोस्सामि खेमंकरे ॥१॥

(छाया)

ल्लासिक्रमनखनिर्गतप्रभादण्डच्छलेन वन्दारूणामङ्गिनां
र्वाणमार्गावलिं प्रकटं दिशन्ताविव कुन्देन्दू ज्वलदन्त
न्तिमिषतो निर्य्यज्ज्ञानांकुरोत्करौ क्षेमङ्करौद्वावपि
ीयषोडशजिनौ (अजितशान्तिनामानौ) (अहं)

(पदार्थ)

(उल्लासि) देदीप्यमान (क्रम) पावोंके (नक्ख) नखोंसे (निग्गय) निकलीहुई (पहा) कान्ति यह ही मानो एक (दण्ड) लकडी उसके (छलेण) मिषसे (वन्दारूण) नमस्कारकरनेवाले (अङ्गिणं) प्राणियोंको (निव्वाण) मोक्षके (मग्ग) मार्गकी (आवलिं) श्रेणीको (पयडं) स्पष्टतासे (दिसन्तौ) दिखलानेवालेके (इव्व) समान (कुन्द) कुन्दके पुष्प और (इन्दु) चन्द्रमाके समान (उज्जल) स्वच्छ (दन्त) दांतोंकी (कान्ति) प्रभाके (मिसउ) मिषसे (नीहन्त) निकला है (नाण) ज्ञानके (अंकुर) अंकुरोंका (उकेरे) समुदाय जिन्होंसे (खेमङ्करे) सुखकरनेवाले (दोवि) दोनोंकोभी (दुइज्ज) दूसरे और (सोलस) सोलमें अजित और शान्तिनाथ स्वामी को (अहं) मैं जिनवल्लभसूरि (थोस्सामि) स्तुति करताहूं.

(भावार्थ)

देदीप्यमान पावोंके नखोंसे निकलीहुईकान्ति यहही मानो एक लकडी उसके मिषसे नमस्कारकरनेवाले प्राणियोंको मोक्षके मार्गकी श्रेणीको स्पष्टतासे दिखलाने-

वालेके समान कुन्दपुष्प और चन्द्रमाके समान स्वच्छ दांतोंकी प्रभाके मिषसे निकला है ज्ञानके अंकुरोंका समुदाय जिन्होंसे, सुखकरनेवाले ऐसे दूसरे और सोल हुवें अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी मैं जिन वल्लभसूरि स्तुति करता हूं.

॥ गाथा ॥

चरमजलहिनीरं जो मिणिज्जं अंजलीहिं ॥
खयसमयसमीरं जो जणिज्झा गईए ॥
सयलनहयलं वा लंघए जो पएहिं ॥
अजियमहव संतिं सो समत्थो थुणेउम् ॥२॥

(छाया)

चरमजलधिनीरं योऽञ्जलिभिर्मिनुयात् क्षयसमयसमीरं यो गत्या जयेत् सकलनभस्तलं वा पद्भ्यां लंघयेत् स अजितमथवा शान्तिं स्तोतुं समर्थः ॥

(पदार्थ)

(चरम), स्वयंभूरमणनामक (जलहि) समुद्रके (नीरं) जलको (जो) जोमनुष्य (अंजलीहिं) अंजलियोंसे (मिणिज्जं) मापसकताहै (खयसमय) प्रलयकालके (समीरं) वायुको (जो) ...

गईए) गतिसे (जणिज्झा) जीतसकता है (वा) अथवा (सहल) सकल (नहयलं) आकाशतलको (जो) जोमनुष्य (पएहिं) पावोंसे (लंघए) उल्लंघनकरसकताहै (सो) वह ही (अजिअं) अजितनाथस्वामीकी (अहव) अथवा (संतिं) शान्तिनाथस्वामीकी (थुणेउम्) स्तुतिकरनेको (समत्थो) समर्थ होताहै.

(भावार्थ)

स्वयंभूरमणनामक समुद्रके जलको जो मनुष्य अंजलियोंसे माप सकताहै प्रलयकालके वायुको जो मनुष्य अपनी गतिसे जीतसकताहै अथवा संपूर्ण आकाशतलको जो मनुष्य पावोंसे उल्लंघनकरसकताहै वही मनुष्य अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी स्तुति करनेको समर्थ होताहै.

॥ गाथा ॥

तहवि हु बहुमाणुल्लासभत्तिभरेण ॥
गुणकणमवि कित्तेहामि चिन्तामणिव्व ॥
अलमहवअचिंता णंतसामत्थओसिम् ॥
फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥

(छाया)

तथापि बहुमानोल्लासभक्तिभरेण गुणकणमपि चिन्ता मणिमिव कीर्तयिष्यामि अथवा अलं अनयोः अचिन्त्या नन्तसामर्थ्यतः मे सर्व्वं वाञ्छितं लघु निश्चितं फलिष्यति.

(पदार्थ)

(तहवि) तोभी (हु) प्रकट (बहुमाण) अन्तः करणके प्रेमविशेषसे (उल्लास) बढ़ीहुई (भत्ति) प्रीतिके (भरेण) अतिशयसे (गुणकणमवि) गुणलेशभी (चिन्तामणिव्व) चिन्तामणिके समान (कित्तेहामि) कीर्तनकरूंगा (अहव) अथवा (अलं) बस इस विचारसे (ओसिं) इन्होंकी (अजित और शान्तिनाथस्वामी की) (अचिंत) विचारमें न आनेवाली (अणंत) अन्त न होनेवाली (सामत्थ) शक्तिसे (मे) मेरे (सव्वं) सब (वांछिअं) इच्छित (लहु) शीघ्रही (णिच्छिअं) निश्चयपूर्वक (फलइइ) फलीभूत होंगे.

(भावार्थ)

तोभी अन्तःकरणके प्रेमविशेषसे बढ़ीहुईभक्तिके अतिशयसे भगवानका गुणलेशभी चिन्तामणि के समान

कीर्तन करूंगा (जैसे चिन्तामणिकी थोडीभी स्तुति करनेसे बहुत फलमिलताहै वैसेही भगवत्कीर्तन थोडाभी करनेसे बहुत फलदेनेवाला होताहै) अथवा इस विचारसे क्या फलहै? इन अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी विचारमें न आनेवाली अनन्तशक्तिसे मेरे सब वांछित शीघ्रही निश्चयसे फलीभूत होंगे,

॥ गाथा ॥

सयलजयहियाणं नाममित्तेण जाणं ॥
विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोवट्टघट्टम् ॥
नमिरसुरकिरीडुग्घिट्ठ पायारविन्दे ॥
सययमजिअसंती ते जिणिन्दे भिवन्दे ॥४॥

(छाया)

अहं नम्रसुरकिरीटोद्घृष्टपादारविन्दौ तौ अजितशान्ति नामानौ जिनेन्द्रौ सततं अभिवन्दे सकल जगद्धितयोः ययोः नाममात्रेण दुष्टानिष्टदोघट्टघट्टं लघु विघटते,

(पदार्थ)

(नमिर) नम्र (सुर) देवताओंके (किरीट) मुकुटोंसे (उग्घिट्ट) उचेजितहै (पायारविन्दे) चरणकमलजिन्होंके ऐसे (ते) वे (अजिअसंती)

अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामी (जिणिन्दे) जिनेन्द्रभगवानको (वन्दे) निरंतर (अभिवन्दे) नमस्कार करताहूं (सयल) सकल (जय) जगतके (हिआणं) हितकरनेवाले (जाणं) जिन अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामीके (नामकित्तण) नामस्मरणसे (दुह) दुःखजनक (अनिट्ठ) प्रियवियोगादिअनिष्टरूप (दोषट्ठ) व्याधियोंके (घटम्) समुदाय (लहु) शीघ्रही (विहडइ) दूरहोजातेहैं.

(भावार्थ)

मैं जो नरदेवताओंके मुकुटोंसे पूजितहैं चरणकमल जिन्होंके ऐसे प्रसिद्ध जिनेन्द्रभगवान अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीको निरंतर नमस्कार करताहूं सकल जगतके हित करनेवाले जिन शान्तिनाथ और अजितनाथस्वामीके नामस्मरणसे दुःखजनक प्रियवियोगादि अनिष्टरूप व्याधियोंके समुदाय शीघ्रही दूर होजाते हैं.

॥ गाथा ॥

पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती ॥
विलसइ भुविमित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥
फुरइपरमतित्ती होइ समारछित्ती॥
जिणजुअपयभत्ती ही अचिंतो रुसत्ती॥५॥

(छाया)

जिनयुगपदभक्तिः ही अचिंत्योरुशक्तिः (अस्ति) (तत्प्रभावात्) वरकीर्तिः प्रसरति देहदीप्तिः वर्धते भुवि मैत्री विलसति सुप्रवृतिः जायते परमतृप्तिः स्फुरति संसारछितिः भवति.

(पदार्थ)

(जिणजुअ) दोनों जिन भगवानके (पय) चरणोंकी (भत्ती) भक्ति (ही) अत्यन्त आश्चर्य है कि (अचिन्त) विचारमें न आनेवाली (उरु) भारीहै (सत्ती) प्रभाव जिसका (उसके प्रभावसे) (वरकित्ती) श्रेष्ट यश (पसरइ) फैलता है (देहदित्ती) शरीरका तेज (वड्ढए) बढ़ता है (भुवि) संसारमें (मित्ती) मित्रता (विलसइ) बढ़ती है (सुप्पवित्ती) अच्छा व्यापार (जायए) होता है (परमतित्ती) अत्यन्त संतोष (फुरइ) उल्लसित होता है (संसारछित्ती) संसारका उच्छेद (होइ) होता है.

(भावार्थ)

अत्यन्त आश्चर्य है कि दोनों जिन भगवानके चरणोंकी भक्ति विचारमें न आनेवाली भारी शक्तिमती

(छाया)

जिनयुगपदभक्तिः ही आचिंत्योरुशक्तिः (अस्ति
(तत्प्रभावात्) वरकीर्तिः प्रसरति देहदीप्तिः वर्धते भु
मैत्री विलसति सुप्रवृत्तिः जायते परमतृप्तिः स्फुर
संसारछित्तिः भवति.

(पदार्थ)

(जिणजुअ) दोनों जिन भगवानके (पय) च
णोंकी (भत्ती) भक्ति (हीं) अत्यन्त आश्चर्य है कि
(अचिन्त) विचारमें न आनेवाली (उरु) भारी
(सत्ती) प्रभाव जिसका (उसके प्रभावसे) (वरकित्ती)
श्रेष्ठ यश (पसरइ) फैलता है (देहदित्ती) शरीरका तेज
(वड्डए) बढ़ता है (भुवि) संसारमें (मित्ती)
मित्रता (विलसइ) बढ़ती है (सुप्पवित्ती) अच्छा
व्यापार (जायए) होता है (परमतित्ती) अत्यन्त
संतोष (फुरइ) उल्लसित होता है (संसारछित्ती)
संसारका उच्छेद (होइ) होता है.

(भावार्थ)

अत्यन्त आश्चर्य है कि दोनों जिन भगवानके
चरणोंकी भक्ति विचारमें न आनेवाली भारी शक्तिवाली

है जिसके प्रभावसे ऐश्वर्य फैलता है शरीर का तेज बढ़ता है अच्छा व्यापार होता है अत्यन्त संतोष होता है और संसारका उच्छेद (भी) होता है.

॥ गाथा ॥

ललियपयपयारं भूरि दिव्वंगहारम् ॥
फुडगणरसभावोदारसिंगारसारम् ॥
अणिमिसरमणीजइंसणच्छेअभीया ॥
इवपुणपणिमंदा कासि नट्टोवयारम् ॥ ९ ॥

(छाया)

यद्दर्शनच्छेदभीता इव प्रणमनमन्दाः अनिमिषरमण्यः ललितपदप्रचारं भूरिदिव्याङ्गहारं स्फुटघनरसभावोदार शृंगारसारं नृत्योपहारं अकार्षुः

(पदार्थ)

(जइंसण) भगवद्दर्शनके (च्छेअ) अन्तरायसे (भीया) डरी हुई (इव) ऐसी क्या ? (अणिमिस) देवोंकी (रमणी) अंगनाएं (पुणमणि) प्रणाम करनेमें (मन्दा) सुस्त ऐसी (ललिय) रमणीय हैं (पयपयारं) चरणोंकेन्यास जिसमें (भूरि) बहुतसे (दिव्व) सुन्दर हैं (अंगहारं) अंगविक्षेप जिसं

(पदार्थ)

भवता भव्य जीवो (कया) की है (असेस) सम्पूर्ण हे जगत्रयमें (संती) शान्ति जिन्होंने (ते) ऐसे उन प्रसिद्ध (अजिअसंती) अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी (पुणह) स्तुतिकरो. (जाणि) जिन्होंकी (उज्जल) शोभायमान (मुत्ती) मूर्ति (सरभस) सहित (परिरंभारंभि) आलिंगन का आरंभकरने वाली (निव्वाणलच्छी) मोक्षरूप लक्ष्मीके (घण) मांसल (थण) कुचोंके (घुसिणंक) कुंकुमके (पंक) पंकसे (पिंगकियव्व) पीली की हुई है क्या ? इस हेतुसे ही (कणक) सोनेके (रय) रज समान (पिसंगा) पीली मालुम होती है.

(भावार्थ)

हे भव्यजीवो की हे जगत्रयमें शान्ति जिन्होंने ऐसे उन प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी स्तुति करो जिन्होंकी शोभायमानमूर्ति वेगसहित आलिङ्गनका आरंभ करनेवाली मोक्षरूप लक्ष्मीके मांसल कुचोंपर लगेहुए कुंकुमके पंकसे पीली की हुई है क्या ? इस हेतुसे ही सोनेके रज समान पीली मालुम होती है.

॥ गाथा ॥

बहुविहनयभंगं वच्थुणिच्चं अणिच्चम् ॥
सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगम् ॥
इय कुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं ॥
वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥

(छाया)

तौ जिनौ संस्मरामि ययोः बहुविधनयभंगं कुनय-विरुद्धं सुप्रसिद्धं वचनं अवचनीयमस्ति (यत्र) वस्तु नित्यमनित्यं सदसत् अभिलप्यालप्यं एकमनेकञ्च (प्रतिपाद्यते)

(पदार्थ)

(ते) उन प्रसिद्ध (जिणे) जिनभगवानका (संभरामि) स्मरण करताहूं (जेसिं) जिन्होंका (बहु) बहुत (विह) प्रकारके (नयभंगं) नयभेद हैं जिसमें (कुनय) कुत्सितनयोंसे (विरुद्धं) भिन्न (सुप्पसिद्धं) अत्यन्तप्रसिद्ध (वयणं) वचन (अवयणिज्जं) अवचनीय है (उसका पूरी तरहासे वर्णन नहीं किया जासकता) (यत्र) जिसमें (वच्थु) वस्तु (णिच्चं) नित्य (च) और (अणिच्चं)

अनित्य (सद्) वस्तुअस्तित्व (असद्) वस्तभाव (अभिलप्प) वर्णनकेयोग्य (अलप्पं) न वर्णन के योग्य (एगं) एकवचननिर्देश्य (अणेगं) अनेकवचन निर्देश्य प्रतिपादन की जाती है.

(भावार्थ)

उन प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ जिन भगवानको स्मरण करताहूं जिन्होंका बहुत प्रकारके नयभेद हैं जिसमें कुत्सितनयोंसे विरुद्ध अत्यन्त प्रसिद्ध वचन अवर्णनीय है जिसवचनमें वस्तु (व्यवहारनयसे) अनित्य और (निश्चय नयसे) नित्य वस्तुसद्भाव और अभाव वस्तुवर्णनीयत्व और अवर्णनीयत्व वस्त्वेकवचन निर्देश्यता और अनेकवचननिर्देश्यता भलीभांति प्रतिपादन की जाती है.

॥ गाथा ॥

पसरइ तिअलोए ताव मोहंधयारं ॥
भमइ जय मसण्णं ताव मिच्छत्तछण्णम् ॥
फुरइ फुड फलंताणंतणाणंसुपूरो ॥
पयड मजियसंतीझाणसूरो न जाव ॥ ९ ॥

(छाया)

तावत् त्रैलोक्ये मोहान्धकारं प्रसरति तावत् असंज्ञं

जगत् मिथ्यात्वच्छन्नं सत् भ्रमति यावत् स्फुटफलदनंत ज्ञानांशुपूरः अजितशान्तिध्यानसूरः प्रकटं न स्फुरति.

(पदार्थ)

(ताव) तबतक (तिअलोए) तीनों लोकमें (मोहन्धयारं) मोहरूपअन्धकार (पसरइ) फैलता है (ताव) तबतक (असण्णं) धर्म अधर्मादि ज्ञान शून्य (जयं) जगत् (मित्थत्तछण्णं) सम्यक्त्वके आभावसे आच्छादित होकर (भमइ) विपरीत प्रवृत्त होता है (जाव) जबतक (फुडफलंतापंतणाणं-सुपूरो) स्पष्ट उल्लासको प्राप्त होनेवाला है अनंतज्ञान यही मानो किरणोंका समुदाय जिसका ऐसा (अजिय-संतीझाणसूरो) अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामीका शुक्लध्यानरूपसूर्य (पयडं) कर्मरूपरजके पटलसे न ढँकाहुवा (न) नही (फुरइ) उदय होता.

(भावार्थ)

जबतक उल्लासको प्राप्त होनेवाला है अनंत ज्ञान यह ही मानों किरणोंका समुदाय जिसका ऐसा अजि-तनाथ और शान्तिनाथ स्वामीका शुक्लध्यानरूपसूर्य कर्मरूपरजके पटलसे न ढँकाहुवा होकर नही उदय

होता है तबतक तीनों लोकमें मोहरूप अन्धकार फैलता है और धर्माधर्मादिज्ञानशून्य जगत् सम्यक्त्वके अभावसे आच्छादित होकर विपरीत प्रवृत्त होताहै.

॥ गाथा ॥

अरिकरिहरितिण्हुण्हम्बुचोराहिवाही ।
समरडमरमारीरुद्दखुद्दोवसग्गा ॥
पलयमजिअसंतीकित्तणे झत्ति जंती ।
निविडतरतमोहा भक्खरालुंखियव्व ॥ १० ॥

(छाया)

अरिकरिहरितृष्णोष्णाम्बुचौराधिव्याधिसमरडमरमारी रौद्रक्षुद्रोपसर्गाः अजितशान्तिकीर्तिने सति निविड तरतमौघाः भास्करा लुंखिता इव (स्पष्टाइव) झगितिप्रलयं गच्छति.

(पदार्थ)

(अरि) शत्रु (करि) हाथी (हरि) सिंह (तिण्ह) तृषा (उण्ह) आतप (अम्बु) जल (चोर) तस्कर (आहि) मनोव्यथा (वाहि) शारीरिकपीडा (समर) संग्राम (डमर) राजकृत उपद्रव (मारी)

महामारी (रुद्दमुंद्दोवसग्गा) भयानक क्रूराशयवाले व्यंतरादिकृत उपद्रव (अजिअ) अजितनाथस्वामीके (संति) शान्तिनाथस्वामीके (कित्तणे) कीर्तनकिये सते (भास्कर) सूर्यसे (लुंखियव्व) स्पर्श किये हुवे (निबिडतर) अतिगाढ (तमोहा) अन्धकारके समूह के समान (झत्ति) शीघ्रही (पलयं) नाशको (जन्ती) प्राप्त होते हैं.

(भावार्थ)

शत्रु हाथी सिंह तृपा उग्गता जलघात चोर मनोव्यथा शारीरिकपीडा संग्राम राजकृत उपद्रव महामारी भयानकक्रूराशयवाले व्यंतरादिकृत उपद्रव ये सब अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीके कीर्तन से सूर्यसे स्पर्श किये हुवे अतिगाढ अन्धकारके समूहके समान शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं.

॥ गाथा ॥

निचिअदुरिअदारुहिसज्झाणाग्गिजाला ।
परिगयमिवगोरं चिंतिअं जाणरूवं ॥
कणयनिहसरेहाकंतिचोरं करिज्झा ।
चिरथिरमिहलच्छि गाढसंथंभिअव्व ॥ ११ ॥

(छाया)

ययोः निचितदुरितदारुदीप्तध्यानाग्निज्वालापरिगतमिव गौरं कनककनिकषरेखाकान्तिचोरं एतादृशं रूपं चिंतितं (सत्) गाढसंस्तंभितामिव चिरस्थिरां लक्ष्मीं कुर्यात्.

(पदार्थ)

(निचिअ) अनेक जन्मोंमें इकट्ठे किये हुए (दुरिअ) दुष्कर्मरूप (दारु) लकडियोंसे (उद्दित्त) प्रदीप्तकी हुई (झाण) ध्यानरूप (अग्गि) अग्निकी (जाला) ज्वालाओंसे मानों (परिगयमिव) व्याप्त किया है क्या ? ऐसा (गौरं) उज्वल (कणयनिहस) सोनेकी कसोटीपरकी (रेहा) रेखाकी (कन्ति) कान्तिको (चोरं) चुरानेवाला ऐसा (जाण) अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीका (रूवं) रूप (चिंतिअं) चिंतन करने से (इह) इस जगतमें (गाढ) अत्यन्त (संथंभिअव्व) नियंत्रितकी हुई के सामान (चिरथिरं) निश्चल ऐसी (लच्छि) लक्ष्मीको (करिज्ज) करता है.

(भावार्थ)

अनेक जन्मोंमें इकट्ठे किये हुऐ दुष्कर्मरूप लक[illegible] योंसे प्रज्वलित की हुई ध्यान रूप अग्नि की ज्वाल[illegible]

संत्रस्त किये गए लोगोंको (जलहि) समुद्रकी (लहरि) लहरियोंमें (हीरंताण) डूबने वाले लोगों को (गुत्ति) पेदखानेमें (ठियाण) बन्द किये हुए लोगोंको (जलिअ) जलती हुई (जलण) दावाग्निकी (जाला) ज्वालाओंसे (आलिंगि आणं) आलिंगित किये हुए लोगोंको (संति) शान्ति (जणयइ) उत्पन्न करता है.

(भावार्थ)

शान्तिनाथ और अजितनाथ स्वामी का ध्यान घोर अरण्यमें लूटे हुए लोगोंको और राजाओंसे संयस्त कीये हुए लोगोंको और समुद्रकी लहरियोंमें डूबते हुए लोगोंको और पेदखानेमें बन्द किये हुए लोगोंको और जलती हुई दावाग्नि की ज्वालाओंसे आलिंगित हुए लोगोंको शीघ्रही शान्ति उत्पन्न करता है.

॥ गाथा ॥

हरिकरिपरिकिण्णं पक्कपाइक्कपुण्णं ॥
सयलपुहविरज्जं छड्डिअंआणसज्जं ॥
तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं ॥
चरणमणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥ १२ ॥

(छाया)

यौ जिनौ हरिकरिपरिकीर्णं पक्षपदातिपूर्णं आज्ञासज्जं सकलपृथ्वीराज्यं पटलमं तृणमिव छर्दित्वा मुक्तिमार्गं चरणं अनुप्रपन्नौ तौ जिनौ मे प्रसन्नौ भवताम्

(पदार्थ)

(हरि) घोडे और (करि) भद्रादिजातीय हाथियोंसे (परिकिण्णं) व्याप्त (पक्ख) शत्रुओंको रोकने लायक (पाइक्क) सिपाहीयोंसे (पुण्णं) भराहुआ (आण) राजाकी आज्ञाको (सज्जं) पालन करनेवाला (सयल) सकल (पुहवि) पृथ्वीके (रज्जं) राज्यको (पडिलग्गं) कपडेमें लगेहुए (तणमिव) तिनके के समान (छडिअं) छोडकर (मुत्तिमग्गं) मोक्षका मार्ग रूप (चरणं) चारित्रका (अणुपवण्णा) अंगीकार करनेवाले ऐसे (जे) जो प्रसिद्ध (जिणा) शान्तिनाथ और अजितनाथस्वामी (ते) वे (मे) मुझपर (पसण्णा) प्रसन्न (हुन्तु) होओ.

(भावार्थ)

(वाल्हीकादिदेशोंमें पैदाहोनेवाले) घोडे और भद्रादि ... ोंसे परिपूर्ण शूर सिपाहियोंसे भरेहुए

राजाज्ञाको भलीभाँति पालनेवाले संपूर्ण पृथ्वीके राज्यको कपडे पर लगे हुए तृणके समान छोडकर मोक्षके मार्ग रूप चारित्रको अंगीकारकरनेवाले प्रसिद्ध जिनभगवान अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामी मुझपर प्रसन्न होओ.

॥ गाथा ॥

छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं ॥
थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्झोदरीहिं ॥
ललिअभुअलयाहिं पीणसोणित्थणीहिं ॥
सय सुररमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १७ ॥

(छाया)

ययोः पादौ क्षणशशिवदनाभिः फुल्लनेत्रोत्पलाभिः स्तनभरनम्राभिः मुष्टिग्राह्योदरीभिः ललितभुजलताभिः पीनश्रोणिस्थलीभिः सुररमणीभिः सदा वन्दितौ

(पदार्थ)

(जेसि) जिन अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवानके (पाया) चरण (छण) पूर्णिमाके (ससि) चांदके समान हैं (वयणाहिं) मुख जिन्होंके (फुल्ल) सदा फूले हुए हैं (नित्त) नेत्ररूपी (उप्पलाहिं) कमल

जिन्होंके (थण) स्तकने (भर) भारसे (नमिरीहिं) झुकी हुई (मुट्ठि) मुट्ठीसे (गिज्झो) ग्रहण करने लायक (उदरीहिं) उदर हैं जिन्होंके (ललिअ) सुंदर हैं (भुअलयाहिं) भुजलता जिन्हों की (पीण) पुष्ट हैं (सोणित्थणीहिं) कटिपश्चाद्भाग जिन्होंके ऐसी (सुररमणीहिं) देवांगनाओंसे (सय) सदैव (वंदिआ) वन्दन कियेगए.

(भावार्थ)

पूनमके चांदके समान हैं मुख जिन्होंके सदा प्रफुल्लित हैं नेत्ररूपी कमल जिन्होंके स्तनके भारसे झुकीहुई मुट्ठीसे ग्रहणकरनेलायक हैं उदर जिन्होके सुन्दर हैं भुजलता जिन्होंकी पुष्ट हैं कटिपश्चाद्भाग-जिन्होंके ऐसी देवांगनाओंसे जिन अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवानके चरण सदा वन्दन किये गए हैं.

॥ गाथा ॥

अरिसकिडिभकुट्ठगंठिकासाइसार ॥
खयजरवणलूआसाससोसोदराणि ॥
नहमुहदसणच्छीकुच्छिकण्णाइरोगे ॥
मह जिणजुअपाया स-पसाया हरन्तु ॥१५॥

(छाया)

जिनयुगपादाः सप्रसादाः सन्तः मे अर्शोकिटिभकुष्ठ-ग्रंथिकासातिसारक्षयज्वरव्रणलूताश्वासशोषोदराणिनखमुख-दशनाक्षिकुक्षिकर्णादिरोगान् हरन्तु

(पदार्थ)

(सप्पसाया) प्रसन्नतायुक्तऐसे (जिणजुअ) दोनोंजिनभगवानके (पाया) चरण (मह) मेरे (अरिस) मस्से (किडिभ) पैरका रोग (कुट्ठ) कोडकी बीमारी (गंठि) गठिया (कास) खांसी का रोग (अइसार) दस्तकी बीमारी (खय) क्षयरोग (जर) बुखार (वण) फोडेकी बीमारी (लूआ) फुनसियोंकी बीमारी (सास) दमकी बीमारी (सोस) कंठ और तालुशोष (उदराणि) पेटकी बीमारियां (नह) नखकी बीमारी (मुह) मुखकी बीमारी (दसण) दांतकी बीमारी (अच्छी) आंखकी बीमारी (कुच्छि) कोखकी बीमारी (कण्णाइरोगे) कानके रोगादिकोंका (हरन्तु) नाश करो.

(भावार्थ)

प्रसन्नतायुक्त ऐसे दोनों जिनभगवानके चरण मेरे मस्सोंको पैरके रोगको कोड़को गठिया रोगको खांसीके

रोगको दरतकी बीमारीको क्षेयको ज्वरको फोड़ेकी बीमारीको फुनसियोंकी बीमारीको श्वासरोगको कंठशोष और तालुशोषकी बीमारीयोंको उदररोगको नखरोगको दन्तरोगको चक्षुरोगको कांखकी बीमारीको और कानके रोगोंको और इनसे पृथक् भी तमाम बीमारीयोंको दूर करो.

॥ गाथा ॥

इय गुरुदुहतासे पक्खिए चाउमासे ॥
जिणवरदुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥
पढह सुणह सज्झाएह झाएह चित्ते ॥
कुणह मुणह विग्धं जेण घाएह सिग्धं ॥१९॥

(छाया)

भो भव्याः यूयम् इदं पवित्रं जिनवरद्विकस्तोत्रं गुरुदुःखत्रासे पाक्षिके चातुर्मासे वा वत्सरे पठत शृणुत स्वाध्यायत ध्यायत चित्तेकुरुत मन्यत येन विघ्नं शीघ्रं घातयत

(पदार्थ)

हे भव्यजीवो तुम (इय) इस (पवित्तं) पवित्र (जिणवरदुग) दोनों जिन भगवानके (थुत्तं)

तित्थंकर सोलसम सन्तिजिणवल्लहसंतह ॥
कुरु मंगल मम हरसु दुरिअमखिलंपि ॥
थुणंतह ॥ १७ ॥

(छाया)

विजयाजितशत्रुपुत्र श्रीअजित जिनेश्वर तथा अचिरा-विश्वसेनतनय पंचमचक्रीश्वर षोडश तीर्थंकर सतां वल्लभ शान्तिजिन इत्थं मम मंगलं कुरु अखिलं दुरितं हरस्व तथा स्तुवतामपि (मंगलंकुरु अखिलं दुरितं हर)

(पदार्थ)

(विजया) विजयानाम्नीमाता और (जियसत्तु) जितशत्रु नामक पिता इन्होंके (पुत्त) पुत्र ऐसे (सिरि) शोभायुक्त (अजिअ जिणेसर) हे अजित-नामक जिन भगवन् (तह) और (अइरा) अचि-रानाम्नीमाता (विससेण) विश्वसेन नामक पिता इन्होंके (तणय) पुत्र (पंचम) पांचवें (चक्कीसर) चक्रवर्ती (सोलसम) सोलहवें (तित्थंकर) तीर्थंकर (संतह) सत्पुरुषों के (वल्लह) प्यारे (संतिजिण) हे शान्तिनाथ जिन भगवन् (इय) पूर्वोक्तप्रकारसे (मम) मेरे और (पिथुणंतह) इसस्तवनको पठन

करनेवाले पुरुषोंकेभी (अखिलं) सम्पूर्ण (दुरिअं) पापको [हरसु] हरणकरो और (मंगल) कल्याण (कुरु) करो.

(भावार्थ)

विजया नाम्नी माता और जिनशत्रु नामक पिताके पुत्र ऐसे हे अजित जिन भगवन् और अचिरानाम्नी माता तथा विश्वसेन नामक पिता के पुत्र पांचवें चक्रवर्ती सोलहवें तीर्थंकर सत्पुरुषोंके प्यारे ऐसे हे शान्तिनाथ जिन भगवन् आप मेरे और इस स्तवनको पठन करनेवाले भव्यजीवोंके पूर्वोक्तप्रकार संपूर्ण पापोंको हरण करो और मंगल करो

इति श्रीजिनवल्लभसूरिविरचितमुल्लासिकस्तोत्रमिन्दुरजैनश्वेताम्बरपाठशाला-
ध्यापकपाठके शुक्लोदयश्रीगोपीनाथसूनुना रामचन्द्रशर्मणा कृतभाषार्थे
भ्यःदर्पोपेत समाप्तम् ॥

॥ श्रीः ॥

अथ नमिऊणनामकं स्मरणं प्रारभ्यते ।

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

आदौ मंगलाभिधानपुरःसरा मंगलगाथा कथ्यते ।

॥ गाथा ॥

नमिऊण पणयसुरगण चूडामणिकिरणरंजिअं
मुणिणो । चलणजुअलंमहाभय पणासणं संथवं
वुच्छं ॥ १ ॥

(छाया)

मुनेः प्रणतसुरगणचूडामणिकिरणरंजितं महाभय-
प्रणाशनं चरणयुगलं नत्वा संस्तवं वक्ष्ये ॥ १ ॥

(विवरणम्)

अहं मुनेः पार्श्वनाथस्वामिनः प्रणतसुरगणचूडामणि-
किरणरंजितं प्रकर्षेणनताः ये सुराणां देवानां गणाः
तेषां चूडाः मुकुटानि तेषु मणयः तेषां कि...

रंजितं शोभितं महाभयप्रणाशनं रोगजलज्वलनादि षोडशभयेषुयानि अष्टमहाभयानितेषां प्रणाशकर्तृ एतादृशं चरणयुगलं नमस्कृत्य संस्तवं वक्ष्ये वर्णयामि ॥ १ ॥

(पदार्थ)

(मुणिणो) पार्श्वप्रभुके (पणय) नमस्कारकरनेवाले (सुरगण) देवताओंके समूहके (चूडा) मुकुटों में स्थित (मणि) मणियोंकी (किरण) किरणोंसे (रंजिअं) सुशोभित और (महाभय) आठ महाभयों के (पणासणं) नाशकरनेवाले ऐसे (चलणजुअलं) चरणयुगलको (नमिऊण) प्रणामकर (संथवं) स्तवन को (वुच्छं) वर्णन करताहूं ॥ १ ॥

(भावार्थ)

संस्तवके आरंभमें मंगल कीर्तन पूर्वक मंगलगाथा कहते हैं।

प्रणामकरनेवाले देवोंके मुकुटमणियोंकी किरणोंसे सुशोभित और आठ महाभयोंके नाशकरनेवाले ऐसे पार्श्वप्रभुके चरणयुगलको प्रणामकर मैं स्तवनको वर्णन करताहूं ॥ १ ॥

अथगाथायुगलेन पार्श्वस्वामिनो रोगभयनिवारण
लक्षणोऽतिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

सडियकरचरणनहमुह निबुड्डनासाविवन्नलावन्ना
कुट्ठमहारोगानल फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणाराहण सलिलंजलिसेयवुड्ढियच्छाया
वणदवदड्ढागिरिपा यवव्वपत्तापुणोलच्छिं ॥ ३ ॥

(छाया)

(ये) विशीर्णकरचरणनखमुखाः (ये) निमग्ननासिकाः (ये) विनष्टलावण्याः (ये) कुष्ठमहारोगानलस्फुलिङ्गनिर्दग्धसर्वाङ्गाः ते तव चरणाराधनसलिलाञ्जलिसेकवर्धितच्छायाः सन्तः पुनः वनदवदग्धा, गिरिपादपा इव (आरोग्यरूपां) लक्ष्मीं प्राप्ताः (भवन्ति) ॥ २-३ ॥

(विवरणम्)

विशीर्णं करचरणनखमुखं येषान्ते विशीर्णकरचरणनखमुखाः (करचरणनखमुखमिति प्राण्यङ्गत्वात् द्वन्द्वे एकवचनं नपुंसकत्वञ्च समासे) निमग्ननासाः निमग्ना-

कुरूपतांनीताः नासाः घ्राणेन्द्रियाणि येषां विनष्टं भ्रष्टं लावण्यं सौंदर्यं येषां कुष्टरूपः महारोगः (कुष्टोरोगविशेषः) स एवअनलः अग्निः तस्य स्फुलिंगाः अग्निकणाः तैर्निर्दग्धानि प्लुष्टानि सर्वांगानि अखिलेन्द्रियाणि येषां ते तव भवतः चरणयोः पादयोः आराधनं पूजनं तदेव तत्संबंधिवासलिलं तेनकृतःसेकः पूजनावशिष्टजलसेचनं इत्यर्थः तेनवर्द्धिताः एधिताः छायाः कान्तयो येषां एतादृशाः सन्तः वनदवेन आरण्यदावानलेन दग्धाः प्लुष्टाः गिरिपादपाः पर्वतीयवृक्षा इव लक्ष्मीं आरोग्यसंपत्तिं प्राप्ताः भवन्ति ॥ २-३ ॥

(पदार्थ)

(सडिय) सडगए हैं (कर) हाथ (चरण) पांव (नह) नख (मुह) मुख जिन्होंके, (निबुड्ड) बैठगई है (नासा) नासिका जिन्होंकी, (विवन्न) नष्टहोगया है (लावन्ना) लावण्य जिन्होंका, (कुट्ठ) कोढ़रूप (महारोग) भारी व्याधि यही मानो (अनल) अग्नि उसकी (फुलिंग) चिनगारियोंसे (निद्दड्ढ) जलगया है (सव्वंगा) सम्पूर्ण अंग जिन्होंका (ते) वे (तुह) आपके (चलण) चरणोंकी (आराहण)

सेवारूप (सलिलंजलि) जलपूरित अंजलिके (सेय
सेचनसे (वुड्ढिअच्छाया) वृद्धिगतहै शोभा जिन्होंकी
ऐसे होकर (पुणो) फिर (वणदव) दावा
नलसे (दड्ढा) जलेहुए (गिरिपायव) पर्वतीयवृक्षोंके
(व्व) समान (लहंति) आरोग्यरूप संपदाको (पत्ता)
प्राप्त होतेहैं ॥ २-३ ॥

(भावार्थ)

अब दो गाथाओंसे पार्श्वप्रभुका रोगभयनाशक
स्वरूपसे प्रभाव कथन करतेहैं।

सडगएहैं हाथपांवनखमुखादि अवयव जिन्होंके, बैठ-
गईहै नासिका जिन्होंकी, प्रनष्टहोगयाहै लावण्य जिन्होंका
कोढ़रूपमहारोगसे उत्पन्नहुई हुई पीडा जनित संतापरूप
अग्निकी चिनगारियोंसे जलगयाहै सारा शरीर जिन्होंका
ऐसे प्राणी भी आपके चरणोंकी आराधनारूप जल
पूरित अंजलीके सेचनसे बढ़गई है शरीरकी कान्ति
जिन्होंकी ऐसे होकर फिर वनके अग्निसे जलेहुए
पर्वतीयवृक्षोंके समान आरोग्यरूप संपदा को प्राप्त
होतेहैं ॥ २-३ ॥

अथगाथाद्वयेन पार्श्वस्वामिनो द्वितीयजलभयापहरणलक्षण माहात्म्यं वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

दुव्वायखुभियजलनिहि उब्भडकल्लोलभीसणारावे
संभंतभयविसंठुल निज्झामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥
अविदलिअजाणवत्ता खणेणपावन्ति इच्छिअंकूलं पासजिणचलणजुअलं निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥

(छाया)

ये नराः पार्श्वजिनचरणयुगलं नित्यं नमन्ति चेत् ते दुर्वातक्षुभितजलनिध्युद्भटकल्लोलभीषणारावे संभ्रांतभयविसंष्ठुलविह्वलनिर्यामकमुक्तव्यापारे अविदलितयानपात्राः संतः क्षणेन इच्छितं कूलं प्राप्नुवन्ति ॥ ४-५ ॥

(विवरणम्)

ये नराः मानवाः पार्श्वजिनस्य पार्श्वस्वामिनः चरणयुगलं अंघ्रिद्वयं नित्यं निरंतरं नमन्ति वन्दन्ते चेत् अवधारणार्थे (तेन त एव नान्येइतिफलति) ते दुर्वातेन प्रतिकूलपवनेन क्षुभितः क्षोभंप्राप्तः यः जलनिधिः समुद्रः तस्य उद्भटाः उदग्राः कल्लोलाः ऊर्मयः तैः भीषणः

भयंकरः आरावः शब्दः यस्मिन् संभ्रांताः प्राप्तसंकट-निवारणे संमूढचेतसः भयात् भीत्याः विसंष्ठुलाः विव्हलाः एतादृशाः निर्यामकाः नाविकाः तैः मुक्तः परित्यक्तः व्यापारः व्यवसायः यस्मिन् एतादृशे महाजलाशये अविदलितानि अभग्नानि यानपात्राणि पोताः येषां क्षणेन निमेषमात्रेण इप्सितं अभिलषितं कूलं तीरं प्राप्नुवन्ति ॥ ४-५ ॥

(पदार्थ)

(जे) जो (नरा) मनुष्य (पासजिण) जिनभगवान् पार्श्वप्रभुके (चलणजुअलं) चरणयुगलको (निच्चं) निरंतर (नमंति) नमनकरतेहैं (चिअ) अवधारणार्थे, (ते) वेही (दुव्वाय) प्रतिकूल पवनसे (खुभिय) क्षोभित (जलनिहि) समुद्रकी (उब्भड) भारी (कल्लोल) लहरियोंसे (भीसण) भयंकरहै (आराव) शब्द जिसमें तथा (संभंत) घबराए हुए और (भय-विसंठुल) भयसे विव्हल ऐसे (निज्झामय) मल्लाह लोगोंने (मुक्क) छोडदिया है (वावारे) नावचलानेका व्यापार जिसमें ऐसे जलाशयमें भी (अविदलिअ) सुरक्षितहैं (जाणवत्ता) नौका जिन्होंकी ऐसे होकर,

(खणेण) क्षणभरमेंही (इच्छिअं) अभिलषित (कूलं) तीरको (पावन्ति) प्राप्तहोतेहैं ॥ ४-५ ॥

(भावार्थ)

अथ गाथा द्वयसे भगवानका जलभयनाशकत्वरूपसे दूसरा माहात्य कीर्तन करते हैं ।

जो मनुष्य पार्श्वप्रभुके चरणयुगलको नित्य नमस्कार करतेहैं वेही प्रतिकूल वायुसे क्षुभित समुद्रकी मोटी लहरियोंसे भयंकर है शब्दजिसमें और वर्तमान संकट के निवारणमें घबराएहुए और भयसे विव्हल मल्लाहओं ने छोडादियाहै नौकाचालनादिव्यापार जिसमें ऐसे समुद्रमें भी सुरक्षित नोकावान् होकर जलदी ही इच्छित तटको पहुंच जातेहैं ॥ ४-५ ॥

अथ गाथायुगलेन पार्श्वप्रभोः तृतीय दवानलभयापहारातिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

खरपवणुद्धअवणदव जालावलिमिलियसयलदुमगहणे । उज्झंतमुद्धमयवहु भीसणरवभीसणंमिवणे ॥ ६ ॥

जगगुरुणोकमजुअलं निव्वाविअसयलतिहु-

अणाभोअं ! जेसंभरंतिमणुआ नकुणइजलणो-
भयंतेसिं ॥ ७ ॥

(छाया)

खरपवनोद्धतवनदवज्वालावलिमिलितसकलद्रुमगहने दह्यमानमुग्धमृगवधूभीषणरवभीषणवने, अथवा दह्यान्तमुग्धमृगवधूभीषणरवभीषणवने ये मनुजा निर्वापितसकलत्रिभुवनाभोगं एतादृशं जगद्गुरोः क्रमयुगलं संस्मरंति तेषां ज्वलनो भयं न करोति ॥ ६-७ ॥

(विवरणम्)

खरः प्रचण्डः पवनः वायुः तेन उद्धतः प्रसारितः वनदवः दावानलः तस्य ज्वालाः अर्चिषः तासां आवलिः श्रेणिः तया मिलिताः संस्पृष्टा दह्यमानाः इत्यर्थः सकलाः समग्राः द्रुमाः वृक्षाः यस्मिन् तत् गहनं वनं तस्मिन् तथा दह्यमानाः प्लुष्यमाणशरीरावयवाः मुग्धाः सरलाः याः मृगवध्वः हरिण्यः तासां भीषणः भयंकरः रवः आक्रंदः तेन भीषणे भयप्रदे वने अरण्ये तस्मिन् अथवा दग्धुं शक्यं दह्यं वनं तस्य अन्तः अवसाने यस्मिन् ■ दह्यान्तः दावाग्निः तेन मुग्धाः मूर्च्छिताः मृगाः वनपशवः तेषां बहुभीषणः अत्यन्तभयानकः रवः

आनंदः तेन भीषणं भयप्रदं वनं अरण्यं तस्मिन् गुणाद्वरोनेन ये मनुजाः नराः निर्जीविनः आनिलजनिग संतापदाननेन सुपीडिताः सकलं समग्रं त्रिभुवनं (त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनं) त्रैलोक्यं तस्य आभोगः स्थानं (निर्जीविनः सकलत्रिभुवनाभोगः) येन तत् तादृशं जगद्गुरोः जगदज्ञानतिमिरनिरोधकस्य पार्श्वप्रभोः क्रमयुगलं क्रमयोः चरणयोः युगलं युग्मं संस्मरंतिः स्मृतिपथंनयन्ति तेषां पूर्वोक्तजनानां ज्वलनः दवानलः भयं भीतिं न करोति ॥ ६-७ ॥

(पदार्थ)

(खर) प्रचण्ड (पवण) वायुसे (उद्धुय) फैले हुए (वणदव) वनके अग्निकी (जाला) ज्वालाओंकी (आवलि) पंक्तिसे (मिलिय) स्पर्शकियेहुए (सयल) सम्पूर्ण (दुम) वृक्ष हैं जिसमें ऐसे (गहणे) वनमें और (उज्झंत) जलतीहुई (मुद्ध) सरल (मयवहु) हरणियोंके (भीसण) भयंकर (रव) चिल्हाट से (भीसणंमि) भयप्रद ऐसे (वणे) अरण्यमें अथवा (उज्झंत) दवाग्निसे (मुद्ध) मुर्च्छित (मय) अरण्य निवासी पशुओंके (वहु) अत्यन्त (भीसण) भयंकर

(रव) आक्रन्दसे (भीसणंमि) भयप्रद ऐसे (वणे) वनमें (जे) जो (मणुआ) मनुष्य (निव्वाविअ) आपत्तिजनित संतापको दूरकर सुखी कियाहै (सयल) समग्र (तिहुअणाभोअं) त्रिभुवन रूपस्थानको जिसने ऐसे (जगगुरुणो) जगद्गुरू पार्श्वप्रभुके (कमजुअलं) चरणयुगलका (संभरंति) स्मरणकरते हैं (तेसिं) उन्होंको (जलणं) दावाग्नि (भयं) भीति (न कुणइ) नहीं करता ॥ ६-७ ॥

(भावार्थ)

अब दो गाथाओंसे भगवान् दावानलके भयका नाशकरते हैं ऐसा भगवान्का महिमा कहतेहैं। प्रचण्ड वायुसे फैलेहुए दावानलकी ज्वालाओंकी पंक्तियोंसे जलते हुएहैं तमाम वृक्ष जिसमें और जलती हुई सख्त हरिणियोंके भयप्रद चिल्लाहटसे भयंकर अथवा दवाग्निसे मुर्छित अरण्यनिवासी पशुओंके अत्यन्त भयंकर आक्रन्दसे भीतिप्रद वनमें जो मनुष्य संसारके संतापको दूरकर सुखी कियाहै त्रिभुवन जिसने ऐसे जगद्गुरू पार्श्वभगवान्के चरणयुगलको स्मरण करतेहैं उन्हें दावाग्नि भय नहीं करता ॥ ६-७ ॥

अथ गाथायुग्मेन भगवतः पार्श्वप्रभोश्चतुर्थविषधर भयनिवारकत्वमहिमा दर्श्यते ।

॥ गाथा ॥

विलसंतभोगभीसण फुरिआरुणनयणतरलजीहालं । उग्गभुअंगंनवजलय सच्छहंभीसणायारं ॥ ८ ॥

मन्नंतिकीडसरिसं दूरपरिच्छूढ विसम विसवेगा । तुहनामक्खरफुडसिद्धमंत-गुरु आनरालोए ॥ ९ ॥

(छाया)

नराः लोके तवनामाक्षरस्फुटसिद्धमंत्रेण गुरवः अत एव दूरपरिच्छूनविषमविषवेगाः संतः विलसद्भोगभीषणस्फुरितारुणनयनतरलजिव्हं नवजलदसदृशं भीषणाकारं (भीषणाचारं) वा एतादृशं उग्रभुजंगं कीटसदृशं मन्यंते ॥ ८-९ ॥

(विवरणम्)

ये नराः मानवाः लोके भुवने तव भवतः नामाक्षराणि एव स्फुटः प्रथितः सिद्धमंत्रः तेन गुरवः प्रभावशालिनः अतएव दूरं दूरतः परिच्छूनः परित्यक्तः विषमः मृत्युप्रदः विषवेगः गरलप्रभावः यैः ते विलसन् कान्तिमान् भोगः

फणा यस्य भीषणः भयङ्करः स्फुरिते चपले अरुणे रक्ते नयने नेत्रे यस्य तरला चञ्चला जिव्हा रसना यस्य तादृशः नवः नूतनः जलदः मेघः तत्समानः भीषणः आकारः आकृतिः यस्य यद्वा भीषणः भयप्रदः आचारः आचरणं यस्य एतादृशं उग्रभुजंगं प्रचण्डसर्पं कीटसदृशं तुच्छजन्तुसमानं मन्यंते गणयन्ति ॥ ८-९ ॥

(पदार्थ)

(नरा) मनुष्य (लोए) इस लोकमें (तुह) आपके (नामक्खर) नामाक्षर वहही मानो (फुड) प्रख्यात और (सिद्ध) सिद्ध (मंत) गारुडादिकमंत्र उनसे (गुरुआ) प्रभावशाली होनेसे (दूर) अत्यन्त दूर और (परिच्छिद) चारोंओर टालदिया है (विसम) मृत्युप्रद (विसवेगा) विषका वेग जिन्होंने ऐसे होकर (विउसंत) चमकीला है (भोग) शरीर जिसका और (भीसण) भयंकर (फुरिअ) चपल और (अरुण) लालहैं (नयन) नेत्र जिसके और (तरल) चंचलहैं (जीहालं) जीभ जिसकी (नवजलय) नए मेघके (सच्छहं) समान (भीसण) भयंकरहै (आयारं) आकार अथवा आचार जिसका ऐसे (उग्ग) विकाल-

(भुअंगे) सर्पको (कीडसरिसे) कीडेकेसमान (मन्नंति) मानते हैं ॥ ८-९ ॥

(भावार्थ)

अथ गाथाद्वयसे सर्पविषनिवारकत्वरूप प्रभाव वर्णन करते हैं।

मनुष्य इस लोकमें आपके नामाक्षररूप प्रख्यात और सिद्ध गारुडमंत्रसे प्रभावशाली होकर मृत्युप्रद विषके वेग को अत्यन्त दूर डालदेतेहैं और चमकदार फणावाले सुशोभि देहवाले चंचल और लालनेत्रवाले चपल जिव्हा वाले नये मेघके समान भयंकर आकृतिवाले विकाल सर्पको कीडेकेसमान मानते हैं ॥ ८-९ ॥

अथ गाथायुगलेन प्रभोः पञ्चमतस्करभय निवारकत्वप्रभावो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

अडवीसुभिल्लतक्कर पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु ।
भयविहुलवुन्नकायर उल्लूरिअपहियसत्थासु ॥१०॥

अविलुत्तविहवसारा तुहनाहपणाममत्तवावारा ।
ववगयविग्घासिग्घं पत्ताहियइच्छियंठाणं ॥ ११ ॥

(छाया)

भिल्लतस्करपुलिन्दशार्दूलशब्दभीमासु भयविह्वलविषण्णाकातरोल्लुण्ठितपथिकसार्थासु अटवीषु हे नाथ तव प्रणाममात्रव्यापाराः अतएव अविलुप्तविभवसाराः ते जनाः व्यपगतविघ्नाःसंतः शीघ्रं हृदि इच्छितं स्थानं प्राप्ताः भवन्ति ॥ १०-११ ॥

(विवरणम्)

भिल्लाः आरण्यकाः तस्कराः चौराः पुलिन्दाः वनचरजीवाः (भिल्लाः पुलिन्दाश्च वनचरभेदाः) शार्दूलाः सिंहाश्च तेषांशब्दाः तैर्भीमासु भयप्रदासु भयेन भीत्या विह्वलाः व्याकुलीकृताः विषण्णाः दुःखिता अकातरैः अभीरुभिः भिल्लैः उल्लुण्ठिताः अपहृतसर्वस्वाः एतादृशाः पथिकसार्थाः अध्वगसंघाः यासु तथाविधासु अटवीषु गहनवनेषु हे नाथ हे स्वामिन् तव प्रणामएव प्रणाममात्रं प्रणतिमात्रं तदेव व्यापारः येषां ते अतएव अविलुप्ताः अपरिहृताः विभवसाराः उत्कृष्टधनं येषां ते जनाः व्यपगता. विनष्टाः विघ्नाः अन्तरायाः येषां ते शीघ्रं त्वरितं हृदि अन्तःकरणे इच्छितं अभिलषितं स्थाने प्रदेशं प्राप्ताः आसादितवन्तः भवन्ति ॥ १०-११ ॥

(पदार्थ)

(भिल्ल) भील (तक्कर) चौर (पुलिंद) वनेचर जीव (सद्दूल) सिंहोंके (सद्द) मारोमारो आदिशब्दों से (भीमासु) भयंकर, (भय) डरसे (विहुल) व्याकुल (दुन्न) दुःखित और (अकायर) निडर भीलोंसे (उल्लूरिअ) लूटलिये गएहैं (पहिअसत्थासु) पथिकसमुदाय जिन्होंके विषय ऐसे (अडवीसु) गहन वनोंमें (नाह) हे नाथ (तुह) आपको (पणाममत्त) *प्रणाममात्र है (वावारा) व्यापार जिन्होंका ऐसे होने* सेही (अविलुत्त) नलूटागयाहै (विहवसारा) उत्कृष्टधन जिन्होंका ऐसे जन (सिग्घं) जल्दी ही (ववगय) विशेषतः नष्ट होगएहैं (विग्घा) विघ्न जिन्होंके ऐसे होकर (हिय) हृदयमें (इच्छियं) अभिलषित (ठाणं) स्थानको (पत्ता) प्राप्त होते हैं ॥ १०११ ॥

(भावार्थ)

अब दो गाथाओंसे प्रभुका तस्करभयनिवारणरूप अतिशय कथन करते हैं।

जो भील, चोर, वनमें संचारकरनेवाले जीव और सिंह

इत्यादि प्राणियोंके मारो २ आदि शब्दोंसे भयंकर हैं, और जिन्होंमें पथिकजन समूह निडर भीलोंसे लूटे गए हैं तथा डरसे व्याकुल और दुखित होरहेहैं ऐसे गहन वनोंमें हे नाथ आपको प्रणामकरतेही मनुष्योंका उत्कृष्ट धन बच जाताहै और सम्पूर्ण विघ्न नष्ट होकर जलदी ही वे इच्छित स्थानको प्राप्त होजाते हैं ॥ १०-११ ॥

अथ गाथाद्वयेन प्रभोः सिंहभयनिरासकारकत्वरूपं षष्टमाहात्म्यं वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

पज्जलिआनलनयणं दूरवियारियमुहंमहाकायं । नहकुलिसघायविअलिअ गइन्दकुंभत्थलाभोअं ॥१२॥

पणयससंभमपत्थिव नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स । तुहवयणपहरणधरा सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥

(छाया)

हे प्रभो प्रणतससंभ्रमपार्थिवनखमणिमाणिक्यपतित प्रतिमस्य तव वचनप्रहरणधराः मानवाः प्रज्वलितानल-नयनं दूराविदारितमुखं महाकायं नखकुलिशघातविदलित-गजेन्द्रकुंभस्थलाभोगं एतादृशं सिंहं क्रुद्धमपि न गणयन्ति ॥ १२-१३ ॥

(विवरणम्)

हे प्रभो प्रणताः नम्रीभूताः ससंभ्रमाः आदरसहिताः पार्थिवाः राजानः तेषां (प्रभोः) नखाः कररुहाः एव मणिमाणिक्यानि तेषु पतिताः याः प्रतिमाः प्रणतससंभ्रमपार्थिवानां नखमणिमाणिक्यपतितप्रतिमाः यस्मिन् सः प्रणतससंभ्रमपार्थिवनखमणिमाणिक्यपतितप्रतिमः तस्य तव वचनं आज्ञा एव प्रहरणं शस्त्रं तस्य धराः धारणकर्तारः ये मानवाः नराः प्रज्वलितः देदीप्यमानः यः अनलः अग्निःतद्वन्नयने नेत्रे यस्य तम् दूरात् विदारितं मुखं वदनं येन तम् महान् विशालः कायः शरीरं यस्य तम् तथा नखाः एव कुलिशं वज्रं तैः घातः प्रहारः तेन विदलितः चूर्णितः गजेन्द्रस्य प्रबलहस्तिनः कुंभस्थलस्य गण्डस्थलस्य आभोगः विस्तारः येन तम् सिंहं क्रुद्धमपि न गणयंति न भयहेतुं मन्यन्ते ॥१२-१३॥

(पदार्थ)

हे प्रभो (पणय) प्रणामकरनेवाले (ससंभम) आदरसहित (पत्थिव) राजाओंकी (नहमणिमाणिक्क) प्रभुके नखरूप मणिमाणिक्योंमें (पडिअ) गिरी है (पडिमस्स) प्रतिमा जिनके विषय ऐसे (तुह) आपके

(वयण) वचनरूप (पहरण) शस्त्रको (धर)
धारणकरनेवाले मानव (पज्जलिअ) प्रज्वलित (जलन)
अग्निसमानहैं (नयनं) नेत्र जिसके (दूर) दूरतकहीं
(वियारिय) फैलाया है (मुहं) मुख जिसने (महा)
बड़ा है (कायं) शरीर जिसका (नह) नख रूप
(कुलिस) वज्रके (घाय) प्रहारसे (विअलिअ)
चीरदिया है (गइंद) गजेन्द्रहाथीके (कुंभत्थल)
गण्डस्थलका (आभोअं) विस्तार जिसने ऐसे (सीह)
सिंहको (कुद्धंपि) क्रुद्धहोनेपरभी (न) नहीं (गणंति)
गिनते हैं ॥ १२-१३ ॥

(भावार्थ)

अब दो गाथाओंमें पार्श्वभगवान् का सिंहभय
निरासरूप प्रताप दिखाते हैं।

हे प्रभो आपके नखरूप रत्नोंमें कदाचहीन प्रणाम
करनेवाले राजाओंकी प्रतिमा प्रतिबिंबित होतीहै आपके
वचनरूप शस्त्रको धारण करनेवाले भव्य जीव
प्रज्वलित अग्नि समान नेत्रवाले दूरतकही गलेतक
फाडाहै मुख जिसने, मोटे शरीरवाले और
वज्रके प्रहारसे छिन्न भिन्न करदिया है

गण्डस्थल जिसने ऐसे सिंह को क्रुद्ध होनेपर भी तुच्छ गिनतेहैं ॥ १२-१३ ॥

अथ गाथायुगलेन प्रभोः सप्तम गजभयनिरास-कृत्रातिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

ससिधवलदंतमुसलं दीहकरुल्लालवड्ढिउच्छाहं ।
महुपिंगनयणजुअलं ससलिलनवजलहरारावं॥१४॥
भीमं महागइंदं अचासन्नंपितेन विगणंति । जे
तुम्हचलणजुअलं मुणिवइतुंगंसमलीणा ॥ १५ ॥

(छाया)

हे मुनिपते ये तव तुङ्गं चरणयुगलं सँल्लीनाः ते शशिधवलदंतमुसलं दीर्धकरोल्लोलवर्धितोत्साहं मधुपिंगनयन युगलं ससलिलनवजलधरारावं भीमं महागजेन्द्रं अत्यासन्नमपि न विगणयन्ति ॥ १४-१५ ॥

(विवरणम्)

हे मुनिपते हे मुनिस्वामिन् ये मानवाः तव भवतः तुङ्गं अत्युन्नतं चरणयुगलं चरणयोः पादयोः युगलं युग्मं सँल्लीनाः समाश्रिताः ते शशिधवलदंतमुसलं शशी इव चन्द्र इव धवलौ स्वच्छौ दन्तौ दशनौ एव मुसलौ

मुद्गरी यस्य तम् दीर्घकरोल्लोलवर्धितोत्साहम् दीर्घः आयतः करः शुण्डादण्डः तस्य उल्लोलः चालनं तेन वर्धितः वृद्धिंगतः उत्साह उल्लासः यस्य तम् मधुपिंगनयनयुगलम् मधु माक्षिकं इव पिंगं पीतं नयनयोः नेत्रयोः युगलं युग्मं यस्य तम् ससलिलनवजलधरारावम् सलिलेन जलेन सहितः सचासौ नवजलधरः नूतनमेघः तस्य आरावः शब्दः इव आरावो यस्य सः तम् भीमं भीषणं महागजेन्द्रं अर्जितकुंजरं अत्यासन्नमपि अतिसमीपस्थं अपि न विगणयन्ति न कलयन्ति ॥ १४-१५ ॥

(पदार्थ)

(मुणिवइ) हे मुनिपते (जे) जो मनुष्य (तुम्ह) आपके (तुंगं) गुणोंसे उन्नत (चलणजुअलं) चरण युगलका (समल्लीणा) सम्यक् आश्रय करलेतेहैं (ते) वे मनुष्य (ससि) चंद्रके समान (धवल) श्वेत (दंतमुसलं) दंतद्वयरूप मुसलहै जिसको, (दीह) लंबे (कर) शुंडादण्ड के (उल्लाल) संचालनसे (वड्ढिि) बढ़गया है (उच्छाह) उत्साह जिसका (महु) शहदके समान (पिंग) पीली हैं (नयनजुअलं) दोनों आँखें जिसकी (ससलिल) जलसहित (नव)

निज्जिय दप्पुद्धररिउ नरिंदनिवहा भडाजसं
धवलं । पावंति पाव पसमिण पासजिणतुहप्प;
भावेण ॥ १० ॥

(छाया)

हे पार्श्वजिन हे पापप्रशमन निर्जितदर्पोद्धुररिपुनरेन्द्र
निवहभटाः तीक्ष्णखड्गाभिघातापविद्धोद्धुतकबंधे
कुन्तविनिर्भिन्नकरिकलभमुक्तसीत्कारप्रचुरे समरे तव
प्रभावेण धवलं यशः प्राप्नुवन्ति ॥ १६-१७ ॥

(विवरणम्)

हे पार्श्वजिन हे पार्श्वस्वामिन् हे पापप्रशमन हे
पाप प्रणाशक निर्जितदर्पोद्धुररिपुनरेन्द्रनिवहभटाः हे
दर्पेण गर्वेण उद्धुराः निरंकुशाः रिपुनरेन्द्राः विपक्षराजानः
तेषां निवहः समुदायः निर्जितः पराजितः एतादृशः
समुदायः यैः ते भटाः शूराः तीक्ष्णखड्गाभिघातापविद्धोद्धु
तकबंधे तीक्ष्णाः निशिताः खड्गाः कृपाणाः तैः अभिघाताः
प्रहाराः तैः अपविद्धं अनियंत्रितं यथास्यात् तथा
उद्धुताः नर्तितुं प्रवृत्ताः कबंधाः मस्तकराहितशरीरभागाः
यस्मिन् कुन्तविनिर्भिन्नकरिकलभमुक्तसीत्कारप्रचुरे कुन्ता
भल्लाः तैः विनिर्भिन्नाः विदारिताङ्गाः करिकलभाः

गजशावाः तैः मुक्ताः परिच्युताः सीत्काराः कातरशब्दाः तैः प्रचुरे परिपूरिते समरे संग्रामे तव प्रभावेण तव प्रतापेन धवलं उज्वलं यशः ख्यातिं प्राप्नुवन्ति लभंते ॥ १६-१७ ॥

(पदार्थ)

(पासजिण) हे पार्श्वजिन (पावपसमिण) हे पापोंके प्रणाशक (निज्जिय) जीतालिये हैं (दप्पुद्धर) शूरताके गर्वसे अन्ध (रिउनरिंद) शत्रुराजाओंके (निवहा) समूह जिन्होंने ऐसे (भडा) शूरपुरुष (तिक्खखग्ग) तीक्षण खड्गोंके (अभिग्घाय) प्रहारों से (पविद्ध) वेरोक (उद्धुय) इधर उधर नाचने लगतेहैं (कबंधे) मस्तक रहित कबंध जिसमें (कुन्त) भालोंसे (विणिभिन्न) छिदेहुएहैं अंग जिन्होंके ऐसे (करिकलह) हाथियोंके बच्चोंके (मुक्कसिक्कार) निकलेहुऐ सीत्कारोंसे (पउरम्मि) प्रपूरित ऐसे (समरम्मि) संग्राममें (तुह) आपके (प्पभावेण) प्रभावसे (धवलं) उज्वल (जसं) कीर्ति (पावन्ति) प्राप्त करतेहैं ॥ १६-१७ ॥

(भावार्थ)

अथ गाथा द्वयसे पार्श्वप्रभुका आठवां संग्रामभय-
विनाशनरूप महिमा कथन करतेहैं ।

हे पार्श्वनाथ हे पापध्वंसक जीतलियेहैं शूरताके गर्वसे मदान्ध प्रतिपक्षी राजाओंके समुदाय जिन्होंने ऐसे शूरपुरुष तीक्ष्ण खड्गोंके प्रहारसे छिन्नहोनेकेकारण पैरोंके इधर उधर नाचने लगेहैं मस्तकरहित धड जिसमें और भालोंसे छिदेहुए हाथियोंके बालकोंके मुखसे निकले हुए सीत्कारोंसे प्रपूरित संग्राममें आपके प्रभावसे उज्वल यशको प्राप्त करलेतेहैं ॥ १६-१७ ॥

अधुना एकया गथया पूर्वोक्ताष्टभयनिरासस्य-
महिमा वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

रोगजलजलणविसहरचोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥१८॥

(छाया)

पार्श्वजिननामसंकीर्तनेन सर्वाणि रोगजलज्वलनविष-
धरचोरारिमृगेन्द्रगजरणभयानि प्रशाम्यन्ति ॥ १८ ॥

(विवरणम्)

व्याधिभयं जलभयं अग्निभयं सर्पभयं तस्करादिरिपुभयं सिंहभयं करिभयं संग्रामभयं एतान्यष्ट-भयानि पार्श्वजिनेश्वरस्य नामस्मरणमात्रेणैव स्वयमेव प्रशान्तानि उपशमं यान्ति ॥ १८ ॥

(पदार्थ)

(पासजिण) पार्श्वजिनेश्वरके (नामसंकित्तणेण) नामकीर्तनसे (सव्वाइं) सम्पूर्ण (रोग) कुष्ठादिरोग (जल) पानी (जलण) अग्नि (विसहर) सर्प (चोरारि) तस्करादिशत्रु (मइन्द) सिंह (गय) हाथी (रण) संग्राम एतत्संबन्धि (सव्वाइं) सर्व (भयाइं) भय (पसमन्ति) स्वयं ही शान्त होते हैं ॥ १८ ॥

(भावार्थ)

अब एक गाथामें पूर्वोक्त अष्टभयनिवारण-
रूप अतिशय कहते हैं ।

पार्श्वजिनेश्वरके नामकीर्तनसे रोगभय, जलभय, अग्निभय, सर्पभय, चोरादिशत्रुभय, सिंहभय, करिभय तथा संग्रामभय ये आठ भय स्वयंही शान्त होतेहैं ॥१८॥

अनया गाथया एतत्स्तोत्रमाहात्म्यं वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

एवं महाभयहरं पासजिणिंदस्स संथवमुआरं भवियजणाणंदयरं कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥

(छाया)

एवं महाभयहरं पार्श्वजिनेन्द्रस्य उदारं संस्तवं भव्यजनानंदकरं कल्याणपरंपरानिदानं चास्ति, अथवा भव्यजनानां कल्याणपरं परनिभानांच बंधकरं अस्ति ॥१९॥

(विवरणम्)

एवं पूर्वोक्ताष्टमहाभयजनितानर्थप्रतिघातकत्वेनविश्रुतं पार्श्वभगवतः उदारं अल्पशब्दसंघातमपिमहत्फलप्रदायकं संस्तवनं इदं नमिऊणाभिधंस्तोत्रं भव्यजनानंदकरं भव्याः मुक्तिगमनयोग्याः ये जनाः प्राणिनः तेषां मोक्षप्रदानेन आनंदकरं सुखकरं कल्याणपरंपरानिदानं कल्याणस्य मंगलस्य परंपरा संततिः तस्याः निदानं आदिकारणं च अस्ति । अथवा भव्याः भगवत्सेवैकरसाः ये जनाः मानवाः तेषां कल्याणपरं मंगलैकदीक्षापरं तथा परे शत्रवः तेषां निभाः कपटानि तेषां बंधकरं नियंत्रकं अस्ति ॥ १९ ॥

(पदार्थ)

(एवं) इस पूर्वोक्तप्रकारसे (महाभयहरं) मोटे भयोंका नाशकरनेवाला (पासजिणंदस्स) पार्श्वजिन-भगवानका (उआरं) थोडेशब्दोंसे बहुतफलदेनेवाला (संथवं) नमिऊणनामकस्तोत्र (भवियजण) भव्य जनोंको (आणंदयरं) मोक्षसुखरूप आनंदकरनेवाला और मंगलकी (परंपर) संततिका (निहाणं) आदि कारण है अथवा (भविजणाणं) भव्यजनोंको (कल्लाणपरं) मंगलदायक और,(परनिहाणं) शत्रुओं के कपटोंको (अंदयरं) बांधनेवाला है ॥ १९ ॥

(भावार्थ)

इस एक गाथासे इस स्तोत्रका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ।

यह महाभयनिवारक बहुफलदायक श्रीपार्श्वप्रभुका नमिऊणनामक स्तोत्र भव्यप्राणियोंको मोक्षसुख देने वाला और अत्यन्त मंगलकारक है इसके पठनसे शत्रुओंने किये हुए मारणउच्चाटनादि सब प्रयोग व्यर्थ होते हैं ॥ १९ ॥

(पदार्थ)

(एवं) इस पूर्वोक्तप्रकारसे (महाभयहरं) मोटे भयोंका नाशकरनेवाला (पासजिणंदस्स) पार्श्वजिन-भगवानका (उआरं) थोडेशब्दोंसे बहुतफलदेनेवाला (संथवं) नमिऊणनामकस्तोत्र (भविअजण) भव्य जनोंको (आणंदयरं) मोक्षसुखरूप आनंदकरनेवाला और मंगलकी (परंपर) संततिका (निहाणं) आदि कारण है अथवा (भविजणाणं) भव्यजनोंको (कल्लाणपरं) मंगलदायक और,(परनिहाणं) शत्रुओं के कपटोंको (अंदयरं) बांधनेवाला है ॥ १९ ॥

(भावार्थ)

इस एक गाथासे इस स्तोत्रका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ।

यह महाभयनिवारक बहुफलदायक श्रीपार्श्वप्रभुका नमिऊणनामक स्तोत्र भव्यप्राणियोंको मोक्षसुख देने वाला और अत्यन्त मंगलकारक है इसके पठनसे शत्रुओंने किये हुए मारणउच्चाटनादि सब प्रयोग व्यर्थ होते हैं ॥ १९ ॥

अथ गाथायुगलेन भयस्थानप्रकटनपूर्वकं
तन्नाशोपायः कथ्यते ।

॥ गाथा ॥

रायभयजक्खरक्खस कुसुमिण दुस्सउणरिक्ख-
पीडासु संज्झासुदोसुपंथे उवसग्गे तहय रय-
णीसु ॥ २० ॥

जो पढइ जोअ निसुणइ ताणं कइनो य माण-
तुंगस्स पासो पावं पसमेउ सयल भुवणचिअ
चलणो ॥ २१ ॥

(छाया)

राजभययक्षराक्षसकुस्वप्नदुःशकुनऋक्षपीडासु द्वयोः संध्ययोः पथि उपसर्गे तथाच रजनीषु च इदं स्तोत्रं पठेत् शृणुयाद्वा तस्य (स्तोत्र) कर्तुर्मानतुंगस्य च पापं सकलभुवनार्चितचरणः पार्श्वप्रभुः प्रशमयतु ॥ २०-२१ ॥

(विवरणम्)

नृपतियक्षदानवकुस्वप्नदुःशकुनग्रहादिभयजनितपीडा-समये प्रातःकाले सायंकाले अरण्यादिमार्गगमनावसरे देवमनुष्य कृतोपसर्गसमये तथा च रात्रावपि यो जनः इदं " नमिऊण " नामकंस्तोत्रं भक्त्या पठेत् शृणुयाद्वा

तस्य, स्तुतिकर्तुर्मानतुंगाचार्यस्य चाखिलपापराशिमखिल-भुवनपूजितचरणकमलः पार्श्वदेवः प्रशमयतु ॥ २०-२१ ॥

(पदार्थ)

(रायभय) राजभय (जक्ख) यक्षभय (रक्खस) राक्षसभय (कुसुमिण) कुस्वप्नभय (दुस्सउण) दुःशकुनभय (रिक्ख) अशुभग्रह इन्होंकी (पीडासु) पीडासमयमें और (दोसु संझासु) प्रातःकाल और सायंकाल में (पंथे) अरण्यादिमार्गमें (उवसग्गे) देव और मनुष्यकृत उपसर्गोमें (तहय) और वैसेही (रयणीसु) रात्रिओं में (जो) जो मनुष्य "इस स्तोत्रको" (पढइ) पठनकरता है (जो अनिसुणइ) और जो भक्तिपूर्वक सुनताहै (ताणं) उन्होंके (य) और (कइणो) स्तोत्रकर्त्ता (माणतुंगस्स) मानतुङ्गाचार्य के (पावं) पापको (सयल) सम्पूर्ण (भुवणच्चिअ) लोकमें अर्चितहै (चलणो) चरण जिनके ऐसे (पासो) पार्श्वभगवान (पसमेउ) नाशकरो ॥ २०-२१ ॥

(भावार्थ)

राजभय यक्षभय राक्षसभय कुस्वप्नभय अशुभग्रहभय इन भयोंसे पीडितहोनेपर, प्रातःकाल सायंकालमें, अरण्यादिभयानक मार्गमें, देव और मनुष्यकृत संकट-

समयमें और रात्रिमें जो मनुष्य इस स्तोत्रको भक्तिपूर्वक पठन करताहै या श्रवण करताहै उसके और मानतुंगाचार्य के पापका त्रिभुवनने पूजेहैं चरणकमल जिनके ऐसे पार्श्वप्रभु नाशकरते हैं ॥ २०-२१ ॥

अनया गाथया पार्श्वभगवतोऽतिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

उवसग्गंते कमठा सुरम्मि ज्झाणाउ जो नसंच- लिउ । सुरनरकिन्नर जुवइहिं संथुउ जयउ पास जिणो ॥ २२ ॥

(छाया)

कमठासुरे उपसर्गंकुर्वतिसति यः ध्यानात् न सञ्चलितः ससुरनरकिन्नरयुवतीभिः संस्तुतः पार्श्वजिनः जयतु ॥२२॥

(विवरणम्)

कमठासुरे कमठदैत्ये उपसर्ग उपद्रवं कुर्वति आचरति- सति यः पार्श्वदेवः ध्यानात् नियतविषयकचित्तैका- ग्र्यात् न सञ्चलितः न स्खलितः स सुराः देवाः नराः भव्यजनाः किन्नराः गंधर्वाः युवत्यः देवाङ्गनाः ताभिः स्तुतः नुतः एतादृशः पार्श्वजिनः जयतु सर्वोत्कर्षेण वर्तताम् ॥ २२ ॥

(पदार्थ)

(कमठासुरम्मि) कमठाने (उवसग्गंते) ...

कियेसते (जो) जोपार्श्वप्रभु (ज्झाणाउ) ध्यानसे
(न) न (संचलिउ) चलायमानहुए (सुर) देवता
(नर) भव्यजीव (किन्नर) गंधर्व (जुवइहिं)
देवाङ्गनाओंसे (संथुउ) स्तुतिकिएगए ऐसे (पासजिणो)
पार्श्वप्रभु (जयउ) विजयशालीहोवें ॥ २२ ॥

(भावार्थ)

कमठासुरने अत्यन्त त्रास देने परभी जो पार्श्वप्रभु अपने ध्यानसे न संचलितहुए और देवता भव्यजीव गंधर्व और देवाङ्गनाओंसे स्तुतिकिएगए ऐसे भगवान् पार्श्वजिन विजयी होवें ॥ २२ ॥

॥ गाथा ॥

एअस्स मज्झयारे अट्ठारस अक्खरेहिं जो मंतो ।
जो जाणइ सो ज्झायइ परम पयत्थं फुडं पासं
॥ २३ ॥

(छाया)

एतस्य मध्यभागे अष्टादशाक्षरैः (निर्मितः) यः मंत्रः अस्ति तं (मंत्रं) यः जानाति सः स्फुटं परमपदस्थं पार्श्वं ध्यायति ॥ २३ ॥

(विवरणम्)

एतस्य " नमिऊणाख्यास्तोत्रस्य " मध्यभागे "नमि-

(छाया)

यः संतुष्टहृदयेन पार्श्वस्य स्मरणं करोति तस्य अष्टोत्तरशतव्याधिभया दूरेण नश्यन्ति ॥ २४ ॥

(विवरणम्)

यो जीवः संतुष्टं शान्तं हृदयं मानसं तेन पार्श्वस्य पार्श्वभगवतः स्मरणं ध्यानं करोति तस्य जीवस्य अष्टोत्तरशतसंख्याकव्याधिजभयानि दूरत एव नश्यन्ति नाशं प्राप्नुवन्ति ॥ २४ ॥

(पदार्थ)

(जो) जो जीव (संतुट्ठहियएण) शान्त अंतःकरण से (पासह) पार्श्वप्रभुका (सरणं) स्मरण (कुणइ) करता है (तस्स) उसके (अट्ठुत्तरसय) एकसौ-आठ (वाहिभय) व्याधिभय (दूरेण) दूरसेही (नासइ) नष्ट होते हैं ॥ २४ ॥

(भावार्थ)

जो जीव आर्त्तरौद्रध्यान छोडकर शान्त हृदयसे पार्श्वप्रभुका स्मरण करता है उसके एकसौआठ व्याधियोंसे पैदा होनेवाले भय दूरसेही नष्ट होजाते हैं ॥ २४ ॥

[illegible]

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीजिनदत्तसूरिकृततंजयास्त्यस्तोत्रं प्रारभ्यते.

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

तं जयउ जएतित्थं जमित्थ तित्थाहिवेणवीरेण
सम्मं पवत्तियं भव्वसत्तसंताणसुहजणयम् ॥ १ ॥

(छाया)

तत् जगति तीर्थं जयतु यदत्र भव्यसत्त्वसंतानसुखजनकं तीर्थाधिपेन वीरेण सम्यक् प्रवर्तितम्

(पदार्थ)

(तं) वह प्रसिद्ध (जए) जगतमें (तित्थं) चतुर्वर्णी संघ (जयउ) विजयको प्राप्त होओ (जम्) जो (इत्थ) इस जगतमें (भव्व) भव्य (सत्त) जीवोंके (संताण) समूहको (सुह) सुख (जणयम्) पैदा करनेवाला (तित्थाहिवेण) चतुर्विध संघकेस्वामी (वीरेण) महावीरस्वामीने (सम्म) भलेप्रकारसे (पवत्तियम्) स्थापन किया

(भावार्थ)

जो चतुर्वर्ग संघ इसजगतमें भव्य जीवोंके समूह को गुण पैदाकरनेवाला और चतुर्विध संघके स्वामी श्रीमहावीरस्वामीने धर्ममर्यादानुसार स्थापन किया हुआ यह संघ विजयको प्राप्त होओ

(गाथा)

नासिय सयलकिलेसा निहयकुलेस्सा पसत्थ सुह लेस्सा सिरिवद्धमाणतित्थस्स, मंगलं दिन्तु अरिहा ॥ २ ॥

(छाया)

नाशित सकल क्लेशाः निहत कुलेश्याः प्रशस्त शुभ लेश्याः ते अर्हन्तः श्रीवर्धमानतीर्थस्य मंगलं ददतु

(पदार्थ)

(नासिय) नाश किये हैं (सयल) सम्पूर्ण (किलेसा) कर्मजन्य दुःख जिन्होंने (निहय) नाश किये हैं (कु) खराब (लेस्सा) कृष्णादि लेश्या जिन्होंने (पसत्थ) प्रशंसा के योग्य हैं (सुह लेस्सा) शुक्लादि लेश्या जिन्होंकी (ते) वे प्रसिद्ध (अरिहा) अर्हन्त भगवान (सिरिवद्धमाणतित्थस्स) श्रीवर्धमानतीर्थंकरके

स्थापनकियेहुए चतुर्विध संघको (मंगल) कल्याण (दिन्तु) देओ

(भावार्थ)

नाशकियेहैं सम्पूर्ण कर्मजन्य दुःख जिन्होंने नाशकीहैं, खराब कृष्णादि लेश्या जिन्होंने और स्तुतिके योग्यहैं, शुभ शुक्लादिलेश्या जिन्होंकी ऐसे वे प्रसिद्ध अर्हन्त भगवान श्रीवर्धमान तीर्थंकर भगवानने स्थापनाकियेहुए चतुर्विधसंघको मंगल देओ

(गाथा)

निद्दड्ढकम्मबीआ, बीआपरमेट्ठिणो गुणसमिद्धा,॥ सिद्धा तिजयपसिद्धा हणन्तु दुत्थाणि तित्थ- स्स ॥ २ ॥

(छाया)

निर्दग्धकर्मबीजाः गुणसमृद्धाः त्रिजगत्प्रसिद्धाः द्वितीय-परमेष्ठिनः सिद्धाः तीर्थस्य दौस्थ्यानि घ्नन्तु

(पदार्थ)

(निद्दड्ढ) जलादियेहैं (कम्म) अष्टकर्मरूप (बीआ) बीजजिन्होंने (गुण) सद्गुणोंसे (समिद्धा) व्याप्त (तिजय) तीनोंजगतमें (पसिद्ध) विख्यात (बीआ

दुसरे (परमेट्ठिणो) परमेष्टीभगवान (सिद्धा) सिद्धसंज्ञक (तित्थरस) चतुर्विधसंधके (दुत्थाणि) क्लेशोंको (हणन्तु) नाशकरो.

(भावार्थ)

जलादियेहैं अष्टज्ञानावरणादि कर्मरूप बीज जिन्होंने सद्गुणोंसेव्यात तीनो जगतमें विख्यात ऐसे दूसरे परमेष्टी भगवान सिद्ध संज्ञक चतुर्विधसंघके क्लेशोंको नाशकरो.

(गाथा)

आयारमायरंता पंचपयारं सया पया संता ॥
आयरिया तह तित्थं निहय कुतित्थं पयासन्तु ॥४॥

(छाया)

(ज्ञानदर्शनचारित्र तपोवीर्यादि) पञ्च प्रकारं आचारं (स्वयं) आचारन्तः तथा सदा (अन्येभ्यः) प्रकाशयन्तः आचार्याः निहतकुतीर्थं (एतादृशं) तीर्थं प्रकाशयन्तु

(पदार्थ)

(पंचपयारं) ज्ञान, दर्शन चारित्र, तप वीर्य ये पांच हैं प्रकार जिसके ऐसे (आयारं) आचारको (आयरंता)

स्वयं आचारणं करनेवाले (तह) और (सया) सदा भव्यजीवोंके अर्थ (पयासन्त) प्रकाश करनेवाले ऐसे (आयरिया) आचार्य (निहय) नाश किया है (कुतित्थं) बौद्धादिकुतीर्थ जिसने ऐसे (तित्थं) चतुर्विधसंघको (पयासन्तु) उद्यनकरो

(भावार्थ)

ज्ञान दर्शन चारित्र तप वीर्य ये पांच हैं प्रकार जिसके ऐसे आचारको स्वयं आचारण करनेवाले और सदा भव्य जीवोंकेअर्थ प्रकाश करनेवाले ऐसे तृतीय परमेष्ठी आचार्य भगवान नाश किया है बौद्धादि कुतीर्थ जिसने ऐसे चतुर्विधसंघको उद्यतकरो

(गाथा)

सम्मसुअवायगावायगाय सिअवायवायगावाए ॥
पवयणपडिणीयकए वणंन्तु सव्वस्ससंघस्स ॥ ५ ॥

(छाया)

ये सम्यक् श्रुतवाचकवाचकाश्च स्याद्वादवादकाः (चतुर्थ परमेष्ठिनः उपाध्यायाः) सर्वस्य संघस्य प्रवचनप्रत्यनीकान् अपनयन्तु

(पदार्थ)

(ए) येप्रसिद्ध (सम्म) उत्तमप्रकारसे (सुअ) द्वादशांगरूप सिद्धान्तके (वायगा)वाचक (य) और (वायगा) अनेक तत्वोंकेवाचक (वा) और (सिअवाय) स्याद्‌वादके (वायगा) स्पष्टकरने वाले ऐसे चतुर्थ परमेष्ठी उपाध्यायभगवान (सव्वस्स) संपूर्ण (संघस्स) चतुर्विधसंघके (पवयण) उत्तम जिनशासनके (पडिणी· यकए) प्रद्वेषियोंको (वणिन्तु) दूर करो·

(भावार्थ)

ये प्रसिद्ध उत्तमप्रकारसे द्वादशांगरूप सिद्धान्तके वक्ता और अनेक तत्वोंके प्रकाशक और स्याद्वादको स्पष्टकरने वाले ऐसे चतुर्थपरमेष्ठी उपाध्याय भगवान सम्पूर्ण चतुर्विधसंघके जिनशासनाद्वेषियोंको दूर करो

(गाथा)

निव्वाण माहणु नय मानुणं जणियमव्वमाहव्वा ॥
तित्थप्पभावगाने हवन्तुपरमेट्ठिणोजइणो ॥ ६ ॥

(छाया)

निर्वाणसाधनोद्यतसाधूनां जनितसर्वसाहाय्याः तीर्थ· प्रभावकाः ते (पञ्चम) परमेष्ठिनः जयिनः भवन्तु

(पदार्थ)

(निव्वाण) मोक्षके (साहण) साधनमें (उज्जय) लगेहुए (साहूणं) साधुओंको (जणिय) उत्पन्नकीहै (सव्व) सर्वतन्हासे (साहज्झा) मदत जिन्होंने (तित्थ) चतुर्विधसंघके (प्पभावगा) प्रभावकोविख्यातकरनेवाले (ते) वे (परमेट्ठिणो) पञ्चमपरमेष्ठी भगवान (जइणो) विजयी (हवन्तु) होओ

(भावार्थ)

मोक्षके साधनमें लगेहुए साधुओंको उत्पन्नकीहै सर्वतन्हासे मदत जिन्होंने चतुर्विधसंघके प्रभाव को विख्यात करनेवाले वे पञ्चमपरमेष्ठी भगवान विजयी होओ.

(गाथा)

जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलंच चरणमविहवई ॥
तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउसिद्धियरम् ॥ ७ ॥

(छाया)

येनानुगतंज्ञानं चचरणमपि निर्वाणफलं भवति सिद्धिकरं तत् तीर्थस्य दर्शनं मंगुलं अपनयतु

(पदार्थ)

(जेण) जिससे (अणुगयं) प्राप्तकियाहुआ (नाणं)

ज्ञान (च) और (चरणमवि) चारित्रभी (निव्वाणफलं) मोक्षहै फल जिसका ऐसा (हवई) होता है (सिद्धियरं) सकलकार्य साधक (तं) वह (तित्थस्स) तीर्थके (दंसण) दर्शन (मंगुलं) दुर्ध्यानको (अवणेउ) दूरकरो

(भावार्थ)

जिससे प्राप्त कियाहुआ ज्ञान और चारित्र भी मोक्षफल रूप होताहै ऐसा वह सकल कार्य साधक तीर्थका दर्शन हमारे दुर्ध्यानको दूरकरो

(गाथा)

निच्छम्मो सुअधम्मो, समग्ग भव्वंगिवग्गकयसम्मो
गुणसुट्टियस्स संवस्स मंगलं सम्मभिह दिसउ ॥८॥

(छाया)

समग्रभव्याङ्गिवर्गकृतशर्मा निश्छद्मः श्रुतधर्मः गुण-सुस्थितस्य संघस्य मंगलं सम्यगिह दिशतु

(पदार्थ)

(समग्ग) संपूर्ण (भव्वंगि) भव्यप्राणियोंके (वग्ग) समुदायको (कय) कियाहै (सम्मो) सुखजिसने (निच्छम्मो) कपटरहित (सुअधम्मो) शास्त्रोक्त

धर्म (गुण) ज्ञानादिगुणोंमें (सुट्ठियस्स) निरंतर रहेहुए ऐसे (संघस्य) चतुर्विधसंघको (इह) इस जगतमें (सम्मं) सम्यक् प्रकारसे (मंगलं) कल्याण दिसउ) देओ,

(भावार्थ)

सम्पूर्ण भव्यप्राणियोंके समुदायको कियाहै सुख जिसने ऐसा कपटरहित जैनशास्त्रोक्तधर्म ज्ञानादि गुणोंमें निरंतर रहेहुए ऐसे चतुर्विधसंघको इसजगत में मंगल देओ,

(गाथा)

रम्मोचरित्तधम्मो संपाविअभव्वसत्तसिवसम्मो ॥
नीसेस किलेसहरो हवउ सया सयल संघस्स ॥५॥

(छाया)

संप्रापितभव्यसत्वशिवशर्मा रम्यः चारित्रधर्मः सकल-संघस्य सदा निःशेषक्लेशहरः भवतु,

(पदार्थ)

(संपाविअ) भले प्रकारसे प्राप्तकरायाहै (भव्वसत्त) भव्य प्राणियोंको (सिव) मोक्षरूप (सम्मो) सुख जिसने (रम्मो) सुन्दर (चरित्तधम्मो) चारित्र रूपधर्म

अग्र) प्रकट किया हुआ (समणागम) समय (निर्ग्र-
न्थ) चतुर्विधसंघका (कुशलं) कुशल (कुणन्तु) करो.

(भावार्थ)

मोक्षसुखमें आकांक्षावंत जिन्होंकी ज्ञानादिगुणोंके समुदायरूपके महान ऐसे श्रीहरिभद्राचार्यादिकआचार्य श्रीमहावीरप्रभुने प्रकटकियाहुआ समय चतुर्विधसंघका कुशल करो.

(गाथा)

जिणपडिमावस्सा जयस्सा सोमसुहायंग गयमुह पमुक्खा ॥ सिद्धिंमदेसि गहिआ कयनयणरखा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥

(छाया)

श्रीमच्छान्ति गदिताः कृतनयनाः सौम्यसुखांग गजमुखप्रमुखाः जिनप्रतिमाः यक्षाः शिवं ददतु.

(पदार्थ)

(जिण) जोनेंके (पडिमाणा) [illegible] प्रतिमाके जिन्होंने (गय) [illegible] (गय) [illegible] [illegible] (जस्सा) यक्ष जिन्होंने (सिद्धिं) [illegible] ([illegible]) [illegible] (गहिआ) गहिआ (सोमसु)

गोमुख नामकयक्ष (मायंग) मातंग यक्ष (गयमुह) गजमुखयक्ष ये यक्ष हैं (पमुक्खा) मुख्यजिन्होंमें ऐसे (जक्खा) सकल यक्ष (सिवं) कल्याण (दिन्तु) देओ.

(भावार्थ)

जीतेहैं भगवच्छासनप्रतिपक्षी जिन्होंने कीहै नमस्कार करनेवालोंकी रक्षा जिन्होंने शोभायुक्त ब्रह्मशान्ति यक्षके साथ गोमुख, मातंग, गजमुखयक्ष हैं मुख्य जिन्होंमे ऐसे सकलयक्ष भगवत् स्तुति करनेवाले भव्यजीवोंको कल्याण देओ.

(गाथा)

अंबा पडिहयडिंबा सिद्धासिद्धाइआ पवयणस्स
चक्केसरि वइरुट्टा संतिसुरादिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥

(छाया)

प्रातिहत डिंबा अंबा सिद्धा सिद्धायिका चक्रेश्वरी वैरोट्या शांतिसुरा प्रवचनस्य सौख्यानि दिशतु.

(पदार्थ)

(पडिहय) नाशकियेहैं (डिंबा) उपसर्ग जिसने ऐसी (अंबा) नेमिजिन भगवानकी उपासिकादेवी (सिद्धा) वर्धमानस्वामीके शासनकी रक्षासे प्रसिद्ध ऐसी (सिद्धाइया)

सिद्धायिका देवी (चक्केसरी) चक्रेश्वरी (वइरुट्टा
वैरोट्या और (संतिसुरा) शान्ति देवता ये देव
तापंचक (पवयणस्स) चतुर्वर्णसंघको (सुक्खाणि
मनोवांछित (दिसउ) देओ.

(भावार्थ)

नाशकियेहैं सम्पूर्ण क्लेशादि जिसने ऐसी नेमिजिन
भगवानकी उपासिका अंबादेवी, वर्द्धमानस्वामीके शासनकी
रक्षासे प्रसिद्ध सिद्धायिका चक्रेश्वरी, वैरोट्या और शा
न्तिसुरा ये देवता पंचक चतुर्वर्ण संघको मनोवांछित
फल देओ.

(गाथा)

सोलसविज्जादेवी दिंतुसंघस्समंगलंविउलं ॥
अच्छुतासहिआउ विस्सुअसुअदेवयाइसमं ॥ १३ ॥

(छाया)

अच्छुप्तासहिताः विश्रुतश्रुतदेवतया समं षोडश विद्या
देव्यः संघस्य विपुलं मंगलं ददतु

(पदार्थ)

(अच्छुत्ता सहिआउ) अच्छुप्ता देवी सहित (विसुअ)
विख्यात ऐसी (सुअदेवआइ) श्रुतदेवताके (समं)

साथ (सोलस) सोलह (विज्झादेवी) अधिष्ठायिका विद्यादेवियां (संघस्स) चतुर्विधसंघको (मंगलं) कल्याण (विउलं) बहुत (दिंतु) देओ.

(भावार्थ)

अच्छुत्तादेवी सहित विख्यात श्रुतदेवताके साथ सोलह अधिष्ठायिका विद्यादेवियां चतुर्विधसंघको अत्यंत कल्याण देओ.

(गाथा)

जिणसासणकयरक्खा जक्खाचउवीससासणसुरावि ॥ सुहभावासंतावं तित्थस्ससयापणा संतु ॥ १४ ॥

(छाया)

जिनशासनकृतरक्षाः यक्षाः च शुभभावाः चतुर्विंशति शासनसुराअपि सदा तीर्थस्य संतापं प्रणाशयन्तु.

(पदार्थ)

(जिणसासण) जिनशासनमें उत्पन्न हुऐ हुऐ उपद्रव निवारण रूप (कयरक्खा) कीहै रक्षा जिन्होंने ऐसे (जक्खा) यक्ष और (सुहभावा) शुभहै भाव जिन्होंके ऐसी (चउवसि) चोवीस (सासणसुरा) जिनशासनकी अ-

धिष्ठायिका देवियां (वि) भी (सया) सदा (तित्थरस) चतुर्विधसंघके (संतावे) संतापको (पणासंतु) नाशकरो.

(भावार्थ)

जिनशासनमें उत्पन्न हुऐ हुऐ उपद्रव निवारण रूप कीहै रक्षा जिन्होंने और शुभहै भाव जिन्होंके ऐसी चोवीस जिनशासनकी अधिष्ठायिका देवियां भी हमेश चतुर्विध संघके संतापको नाशकरो.

(गाथा)

जिणपवयणंमिनिरया विरयाकुपहाउसव्वहासव्वे ॥
वेयावच्चकराविय तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥१५॥

(छाया)

जिनप्रवचने निरताः कुपथात् सर्व्वथा विरताः सर्वे वैयावृचकरा श्चापि तीर्थस्य शांतिकरा : भवन्तु,

(पदार्थ)

(जिण पवयणंमि) जिनशास्नमें (निरया) कियाहै आदर जिन्होंने (कुपथाउ) मांहिपवव रूप निंदनीक मार्गसे (सव्वहा) सब प्रकारसे (विरया) जुदे (य) और (सव्वे) सब (वेयावच्चकरा) वेयावच्च करने

वाले (वि) भी (तित्थरत्त) चतुर्विध संघको (संति- करा) दुरितोपशमन करने वाले (हवन्तु) होओ.

(भावार्थ)

जिन शास्त्रमें किया है आदर जिन्होंने मलिनत्व रूप निर्दोष मार्गमें सर्वथा जुटे और सब वैयावच्च करने- वाले भी चतुर्विध संघको दुरितोपशमन करनेवाले होओ.

(गाथा)

जिणसमय सिद्ध सुमग्ग वहिय भव्वाण जणिय साहज्जो ॥ गीयरइ गीयजसो स परिवारो सुहंदि- सउ ॥१६॥

(छाया)

जिनसमयसिद्धसुमार्गवहितभव्यानां जनितसाहाय्यः सपरिवारः गीतरतिः गीतयशाः सुखं दिशतु.

(पदार्थ)

(जिण समय) जिनशास्त्रमें (सिद्ध) सिद्धि (सुमग्ग) जो सुमार्ग उसमें (वहिय) आश्रय लिया (भव्वाण) भव्यजीवोंको (जणिय) उत्पन्न किया है (साहज्जो) साहाय्य [जिसने वैसेगीयरइ) इंद्रका [illegible]

नामक व्यंतर और (गीयजसो) उत्तर दिग्भव गीत-यश नामक व्यंतर (सपरिवारो) द्वादश विध गंधर्व निकाय सहित (सुहं) सुख (दिसउ) देओ।

(भावार्थ)

जिनशास्त्रमें निश्चित सुमार्गानुसार आराधन में सावधान ऐसे भव्य जीवोंको उत्पन्न किया है तीर्थ यात्रादि उत्सवमें सहाय जिनने ऐसे दक्षिणोत्तरभव गीतरति और गीतयश नामके व्यंतरद्वय द्वादशविधगंधर्व निकाय सहित चतुर्विध संघको सुख देओ।

(गाथा)

गिहि गुत्त खित्त जल थल वण पव्वय वास देव देवीउ ॥ जिणसासणट्ठिआणं दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥

(छाया)

ग्रहगोत्रक्षेत्रजलस्थलवनपर्वतवासिदेवदेव्यः जिन-शासनस्थितानां सर्वाणि दुःखानि निघ्नन्तु।

(पदार्थ)

(गिहि) घरमें (गुत्त) गोत्रमें (खित्त) क्षेत्रमें (जल) जलमें (थल) स्थलमें (वण) वनमें (पव्वय) पर्व-

तमें (वास) निवास करने वाले (देव) देवता और (देवीउ) देवियां (जिण सासण) जिन शासनमें (ट्ठिआणं) स्थित भव्य जीवों के (सव्वाणि) संपूर्ण (दुहाणि) दुःख (नि॰णेंतु) नाशकरो।

(भावार्थ)

घरमें गोत्रमें क्षत्रमें जलमें स्थलमें वनमें पर्वतमें निवास करने वाले देव और देवियां जिनशासन में स्थित भव्य जीवों के क्लेश निवारण करो।

(गाथा)

दसदिसिपाला सखित्तपालया नवग्गहा सनक्खत्ता ॥ जोइणि राहुग्गह काल पास कुलि अद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥

सह काल कंट एहिं सविट्ठिवच्छेहिं कालवेला हिं ॥सव्वे सव्वत्थ सुहं दिसन्तु सव्वाण संघस्स ॥ १९ ॥

(छाया)

[illegible] दशदिक्पालाः [illegible] [illegible] देविनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

(पदार्थ)

(सखित्तपालया) क्षेत्रपालोंके साथ (दसदिसपाला) दशदिग्पाल (सनक्खित्ता) सत्ताईस नक्षत्रोंके साथ (नवग्गहा) नोग्रह (जोइणि) योगिनी (राहुग्गह) राहु नाम ग्रह (कालपास) कालपाशयोग (कुलिय) कुलिकयोग (अद्धपहरेहिं) अर्धप्रहर योगोंके साथ (सहकालकंटएहि) कालकंटक योग के साथ (सविट्ठि) भद्राके साथ (वत्थेहिं) वत्स सहित (कालवेलाहिं) कालवेलाके साथ (सव्वे) संपूर्ण दिक्पालादि (सव्वस्स) संपूर्ण (संघास) संघको (सव्वत्थ) सब अर्थ सहित (सुहं) सुख (दिसन्तु) देओ ।

(भावार्थ)

क्षेत्रपालकोंके साथ सत्ताईस नक्षत्रोंके साथ योगिनी राहुग्रह कालपाशयोग, कुलिकयोग, अर्धप्रहरयोग कालकंटक योग भद्रा वत्सयोग कालवेला इत्यादि योगोंके साथ दशदिक्पाल और नवग्रह ये सब सम्पूर्ण संघको सब मनोवाञ्छित सुख देओ ।

(गाथा)

भवणवइवाणमंतर जोइसवेमाणि वायजे देवा ।
धरणिंदसक्क सहिया दलंतु दुरियाइं तित्थस्स॥२०॥

(छाया)

(असुरकुमाराद्या दशभेदाः) भवनपतयः (पिशाचादि-षोडशप्रकाराः) वानव्यंतराः ज्योतिष्कवैमानिकाश्च ये देवास्ते धरणेन्द्रशक्रसहिताः (सन्तः) तीर्थस्य दुरितानि दलयन्तु ।

(पदार्थ)

(भवणवइ) असुरकुमारादि दस भवनपति (वाणमंतर) पिशाचादि सोलह वानव्यंतर (जोइस) ज्योतिष्क (य) और (वेमाणिया) वैमानिक (जे) जो (देवा) देवता (धरणिंदसक्कसहिया) धरणेंद्रादि शक्रसहित होकर (तित्थस्स) संघके (दुरियाइं) पापों को (दलंतु) नाशकरो ।

(भावार्थ)

असुरकुमारादि दश भवनपति पिशाचादि सोलहवान व्यंतर जोतिष्क और वैमानिक देवता ये सब धरणेन्द्रादि शक्रोंकेसाथ संघके पापोंको नाशकरो ।

(गाथा)

चक्कंजस्सजलंतं गच्छइपुरउं पणासियतमोहं
तंतित्थस्स भगवउं नमो नमोवद्धमाणस्स ॥२१॥

(छाया)

प्रणाशिततमओघं तत् ज्वलच्चक्रं यस्य पुरतोगच्छति (तस्मै) तीर्थकराय भगवते वर्द्धमानाय नमो नमोऽस्तु ।

(पदार्थ)

(पणासिय) नाशकियाहै (तमो हं) अज्ञानरूप अंधकारका समूह जिसने (तं) वह अपूर्व (जलंतं) तेजसे देदीप्यमान (चक्कं) धर्मचक्र (जस्स) जिन भगवान् के (पुरउ) आगे (गच्छइ) चलता है (उन) (तित्थस्स) तीर्थंकुर (भगवउ) भगवान् (वद्धमाणस्स) वर्द्धमानस्वामीको (नमो नमो) वारंवार नमस्कार होओ ।

(भावार्थ)

अज्ञानरूप अंधकारको नाशकरनेवाला तेजसे देदीप्यमान यह अपूर्व धर्मचक्र जिन भगवानके आगे चलता है उन तीर्थंकर भगवान वर्द्धमान स्वामीको वारंवार नमस्कार होओ ।

(गाथा)

सो जयउ जिणोवीरो जस्स जविसासणं जए जयइ । सिद्धिपहसासणं कुपहनासणं सव्वभय महणं ॥ २२ ॥

(छाया)

स जिनवीरः जयतु यस्य सिद्धिपथशासनं कुपथनाशनं सर्वभयमथनं शासनं अद्यापि जगति जयति ।

(पदार्थ)

(सो) वे प्रसिद्ध (जिणवीरो) जिनभगवान महावीर स्वामी (जयउ) विजयको प्राप्तहोओ (जस्स) जिनभगवानका (सिद्धिपहसासणं) मुक्तिमार्गका उपदेशक (कुपहनासणं) मिथ्यावादी कुमार्गनाशक (सव्वभयमहणं) संपूर्णभयविध्वंसक (सासणं) शासन (अजवि) सांप्रत भी (जए) जगतमें (जयइ) विजयको प्राप्त होता है ।

(भावार्थ)

वे प्रसिद्ध जिनभगवान महावीरस्वामी विजयशाली होओ, जिन परमेश्वरका मुक्तिमार्गका उपदेशक मिथ्यावादीकुमार्गनाशक संपूर्णभयविध्वंसक शासन सांप्रत भी जगतमें विजयको प्राप्त होताहै ।

(गाथा)

गिरिउसभसेण पमुहा हयभगनिवहा दिसंतु निरधम्म । सव्वाजिणाणंगणहारिणोणहं वंछियं मुच्चं ॥ २३ ॥

(छाया)

श्रीऋषभसेनप्रमुखाः हतभयनिवहाः सर्व्वजिनानां गणधारिणः तीर्थस्य अनघसर्व्ववांछितं दिशन्तु ।

(पदार्थ)

(सिरि) शोभायुक्त (उसभसेण) ऋषभसेनहै (पमुहा) प्रमुख जिन्होंमें (हय) नष्टहुवाहै (भय) संसारभयोंका (निवहा) समूह जिन्होंका ऐसे (सव्व) सम्पूर्ण (जिणाणं) ऋषभ अजितादि तीर्थंकरोंके (गणहारिणो) गणधर (तित्थस्स) चतुर्विधसंघको (अणहं) अकलंकित (सव्व) अखिल (वंछियं) अभिलषितसुख (दिसंतु) देओ ।

(भावार्थ)

शोभायुक्त ऋषभसेनहै प्रमुख जिन्होंमें और नष्टहुआहै संसारसंबन्धी भयसमूह जिन्होंका ऐसे सम्पूर्ण तीर्थंकरोंके १४५२ गणधर चतुर्विध संघको अकलंकित अखिल अभिलषित सुखदेओ ।

(गाथा)

सिरिवद्धमाणतित्थाहिवेण तित्थंसमप्पियंजस्स
सम्मंसुहम्मसामी दिसउ सुहं सयलसंघस्स ॥२४॥

(छाया)

श्रीवर्द्धमानतीर्थाधिपेन तीर्थं समर्पितं सुधर्मस्वामी यस्य सकलसंघस्य सम्यक् सुखं दिशतु ।

(पदार्थ)

(सिरि) शोभायुक्त (वद्धमाणतित्थाहिवेण) तीर्थके अधिप वर्द्धमानस्वामीने (तित्थं) चतुर्विधसंघरूपतीर्थ (समप्पियं) समर्पितकिया (सुहम्मसामी) पंचमगणधर सुधर्मस्वामी (जस्स) उस प्रसिद्ध (सलय) सकल (संघस्स) संघको (सम्मं) भलेप्रकार (सुहं) सुख (दिसउ) देओ ।

(भावार्थ)

तीर्थके अधिप श्रीवर्द्धमान स्वामीने चतुर्विधसंघरूप तीर्थ समर्पितकिया. उस प्रसिद्ध संपूर्ण संघको पंचम गणधर श्रीसुधर्मस्वामी भली भांति सुखदेओ ।

(गाथा)

पपईभद्दयाजे भद्दाणि दिसन्तु सयलसंघस्स ।
इयरसुराविहुसम्मं जिणगणहरकहियकारिस्स ॥२५॥

(छाया)

भद्रयाप्रकृत्योपलक्षिताः येजीवाइतरसुराअपि सम्यः

जिनगणधरत्वपिनकारिणः सकलसंघस्य भद्राणि दिसन्तु ।

(पदार्थ)

(भद्दया) पापरहित (पयंइइ) प्रकृतिसेयुक्तः (जे) जो जीवहैं वे और (इयर) दूसरे (सुगावि) देवताभी और (सम्मं) सम्यक् प्रकारसे (जिगगणहर) जिन गणधरोंके (कहिय) कथनको (कारिस) करने वाले (सयल) संपूर्ण (संघस्स) संघको (भद्दाणि) कल्याण (दिसन्तु) देओ ।

(भावार्थ)

स्वभावसेही कल्याणकारी भव्यजीव और दूसरे देवता भी जिनगणधरोंकी आज्ञाको सम्यक् पालनेवाले संपूर्ण संघको कल्याण देओ ।

(गाथा)

इयजो पढइतिसंझं दुस्सज्झं तस्सनच्छिकिंपि· जए। जिणदत्ताणायाछिउ सुनिच्छिपट्ठोसुहीहोइ॥२६॥

(छाया)

यः नरः इदं स्तोत्रं त्रिसंध्यं पठति तस्य जगति किमपि

दुःसाध्यं नास्ति । जिनदत्ताज्ञायांस्थितः सुनिष्ठितार्थः सन् सुखी भवति ।

(पदार्थ)

(जो) जो मनुष्य (इय) इस स्तोत्रको (तिसंझं) त्रिकाल (पढ़इ) पठनकरताहै (तस्स) उसको (जए) जगतमें (किंपि) कुछभी (दुरसज्झं) दुःसाध्य (नच्छि) नहीं है (जिण) जिनभगवानने (दत्त) दीहुई (अणाय) आज्ञामें (ठिउ) स्थित पुरुष (सुनिठियट्ठो) सिद्धार्थ होकर (सुही) मोक्षसुख भागी (होइ) होता है ।

(भावार्थ)

जो मनुष्य इस स्तोत्रको त्रिकाल पठनकरताहै उसको जगतमें कुछभी दुःसाध्य नहींहै जिनभगवानकी आज्ञा में स्थित पुरुषों की सब कामना परिपूर्ण होकर वे मोक्ष सुखभागी होतेहैं ।

इन्दूरदेशीय जैनश्वेताम्बर मुख्यपाठशालाध्यापक
गोपीनाथसूनुपण्डित श्रीकृष्णशर्मकृतसुबो-
धिनी व्याख्यासहितं जिनदत्तसूरिकृत
संजयाख्यस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

गुरुपारतन्त्र्य स्तोत्रम्

॥ गाथा ॥

॥ मयरहियंगुणगणरयण सायरंसायरंपणमिऊणं ।
॥ सुगुरुजणपारतंतं उयहिव्वथुणामितंचेव ॥ १ ॥

(छाया)

अहं उदधिमिव मकररहितं गुणगणरत्नसागरं तं सु-
गुरुजनपारतंत्र्यं सादरं प्रणम्य स्तवीमिचेति (चेति
शब्दौ समुच्चयावधारणार्थौ) प्रणम्य स्तवीमिचेति ॥ १ ॥
चः समुच्चये अन्यस्तोतव्यत्यागेन तमेवेत्यवधारणम् ।
उदधिपक्षे पदच्छेदाः मकर हितं मकरेभ्यो जलजन्तु
विशेषेभ्यो हितं हितकारकं गुणगणरत्नसाकारं गुणानां
शूलादिरोगापहारिणां ऋद्धिवृद्धिसौभाग्यादिजनकानांच
गणः ओघः सन्निपतेयेषुतानि गुणगुणरत्नानिच सा
लक्ष्मीश्च तयोः आकरः स्थानं तम् सातरं सातं सुखं राति
ददातीति सातरम् ॥ १ ॥

समुद्रके समान आठमदोंसे रहित ज्ञानादिगुणोंके समूह रूप रत्नोंकी लक्ष्मीके लाभको देनेवाले ऐसे सुगुरु-सुधर्मस्वामि प्रमुख आचार्योंके आम्नायको आदर पूर्वक नमस्कार कर स्तुति करता हूं ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

निम्महियमोहजोहा निहयविरोहा पणट्ठसंदेहा ।
पणयंगिवग्गदाविय सुहसंदोहा सुगुणगेहा ॥ २ ॥

(छाया)

निर्मथितमोहयोधाः निहतविरोधाः प्रणष्टसंदेहाः प्रण-ताङ्गिवर्गदापितसुखसंदोहाः सुगुणगेहाः ॥ २ ॥

(पदार्थ)

(निम्महिय) नष्टकिये हैं (मोहजोह) मोहरूप योधा जिन्होंने (पणट्ठ) नष्टकिये हैं (संदेहा) हृदयके संदेह जिन्होंने (पणयंगि) प्रणाम करने वाले प्राणियोंके (वग्ग) समुदायको (दाविय) दीये हैं (सुह) सुखके (संदोहा) समूह जिन्होंने (सुगुण) छत्तीस श्रेष्ट गुणोंके (गेहा) निवास स्थान ॥ २ ॥

(भावार्थ)

हैं परस्पर वैरभाव जिन्होंने दूरकिये हैं हृदयके संदेह जिन्होंने प्रणामकरने वाले प्राणियोंको दिऐ हैं सुख बाहुल्य जिन्होंने और छत्तीस श्रेष्ट गुणोंके निवास स्थान ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

पत्तसुजइत्तसोहा समत्थपरतित्थिजणियसंखोहा।
पडिभग्गलोहजोहा दंसियसुमहत्थसत्थोहा ॥ ३ ॥

(छाया)

प्राप्तसुयतित्वशोभाः समस्तपरतीर्थिजनितसंक्षोभाः
प्रतिभग्नलोभयोधाः दर्शितसुमहार्थशास्त्रौघाः ॥ ३ ॥

(पदार्थ)

(पत्त) प्राप्तकीहै (सुजइत्त) उत्तम यतित्व की (सोहा) शोभा जिन्होंने (समत्थ) सम्पूर्ण (परतित्थि) परतीर्थि जनोंको (जणिय) उत्पन्न किया है (संखोहा) संक्षोभ जिन्होंने (पडिभग्ग) नष्ट किया है (लोह) लोभरूप (जोहा) योधा जिन्होंने (दंसिय) बतलाया है (सुमहत्थ) अत्यन्त गंभीर अर्थशास्त्री (सत्थोहा) शास्त्र समूह जिन्होंने ॥ ३ ॥

(भावार्थ)

प्राप्तकीहै उत्तम यतित्वकी शोभा जिन्होंने सम्पूर्ण परतीर्थिजनोंको उत्तप्त किया है संक्षोभ जिन्होंने नष्ट किया है लोभरूपयोधा जिन्होंने बतलाया है अत्यन्त गंभीर अर्थशाली शास्त्र समूह जिन्होंने ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

परिहरियसत्तबाहा हयदुहदाहासिवंबतरुसाहा ॥
संपावियसुहलाहा खीरोदहिणुव्वअग्गाहा ॥ ४ ॥

(छाया)

परिहृतसत्वबाधाः हतदुःखदाहाः शिवाम्रतरुशाखाः
संप्रापितसुखलाभाः क्षीरोदधिरिवागाधाः ॥ ४ ॥

(पदार्थ)

(परिहरिय) नष्ट की है (सत्त) जीवोंकी (बाहा) पीडा जिन्होंने (हय) मिटाया है (दुहदाहा) दुःखरूप दाह जिन्होंने (सिव) मोक्षरूप (अंबतरु) आम्रवृक्षकी (साहा) शाखा समान (संपाविय) सम्यक् प्रकारसे प्राप्त करवाया है (सुहलाहा) वाञ्छित सुखका लाभ ।

(खीरोदहिगुव्व) क्षीरसमुद्रसमान (अगाहा) अगाध ॥ ४ ॥

(भावार्थ)

दूरकीहै जीवोंकी पीडा जिन्होंने नष्ट किया है दुःखरूप दाह जिन्होंने मोक्षरूप आम्रवृक्षकी शाखा समान भलीभाँतिप्राप्तकरवायाहै भव्यजीवोंको इच्छित सुखका लाभ जिन्होंने क्षीरसमुद्रसमान अगाध ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

सगुणजणजणियपुज्जा सज्जोनिरवज्जगहिय ॥ पव्वज्जा ॥ सिवसुहसाहणसज्जा भवगुरुगिरिचूरणेवज्जा ॥ ५ ॥

(छाया)

सगुणजनजनितपूजाः सद्योनिरवद्यगृहीतप्रव्रज्याः
शिवसुखसाधनसज्जाः भवगुरुगिरिचूर्णनेवज्राः ॥ ५ ॥

(पदार्थ)

(सगुण) सद्गुणोंसे युक्त (जण) भव्यजीवोंने (जणिअ) की है (पुज्जा) पूजा जिन्होंकी (सज्जो) तत्काल (निरवज्ज) पापरहित (गहिय) अंगीकार की यै (पवज्जा) प्रव्रज्याचारित्रदीक्षा

जिन्होंने (सिवसुह) मोक्षसुखके (साहण) साधनमें (सज्जा) सावधान (भव) संसाररूप (गुरुगिरि) भारी पर्वत को (चूर्णे) नष्ट करनेमें (वज्जा) वज्रके समान ॥ ५ ॥

(भावार्थ)

सद्‌गुणोंसे युक्त भव्यजीवोंनेकीहै पूजा जिन्होंकी तत्काल अंगीकार की है पापरहित चारित्रकी दीक्षा जिन्होंने मोक्षसुख के साधनमें सावधान संसाररूप भारीपर्वतको नष्ट करनेमें वज्रके समान ॥ ५ ॥

॥ गाथा ॥

अज्जसुहम्मप्पमुहा गुणगणनिवहासुरिंदविहिय-
महा। ताणतिसंझंनामं नामंनपणासइ जियाणं ।६।

(छाया)

गुणगणानिवहाः सुरेंद्रविहितमहाः (एतादृशाः) आर्यसुधर्मप्रमुखाः गणधराः सन्ति तेषां त्रिसंध्यं (स्मृतं) नाम जीवानां आमं न प्रणाशयतीति न अपितु प्रणाशयत्येव ॥ ६ ॥

(पदार्थ)

(गुणगण) आचार्य के छत्तीस सद्‌गुणोंके समुदाय को (निवहा) निरंतर धारण करने वाले (सुरिं

देवोंके अधिपति इन्द्रने (विहिय) की है (महा
पूजा जिन्होंकी ऐसे (अज्ज) पूज्य (सुहम्म
सुधर्म स्वामी हैं (प्पमुहा) मुख्य जिन्होंमें
गणधरोंका (तिसंझं) त्रिकाल (नाम) नामस्मर
(जियाणं) जीवोंकी (आमं) व्याधियों
(न पणासइ) नहीं प्रणाश करता (न) ऐ
नहीं अर्थात् प्रणाश करताही है ॥ ६ ॥

(भावार्थ)

आचार्यके छत्तीस गुणोंको निरंतर धारण करनेवाले
देवाधिपति इन्द्रने की है पूजा जिन्होंकी, ऐसे पर
पूज्य सुधर्मस्वामी प्रमुख गणधरोंका त्रिकाल नामस्मर
जीवोंकी सकल आधिव्याधियोंको नष्ट करता है ॥ ७

॥ गाथा ॥

पडिवज्जियजिणदेवो देवायरिउदुरंतभवहारि
सिरिनेमिचंदसूरि उज्जोयणसूरिणोसुगुरू ॥ ७ ॥

(छाया)

प्रतिपन्नजिनदेवः देवाचार्यः दुरंतभवहारी श्रीनेमि
चन्द्रसूरिः सुगुरुः उद्योतनसूरिः एतेत्रयः विजयन्ताम
ध्याहार्य्यम् ॥ ७ ॥

(पदार्थ)

(पडिवज्जिय) अङ्गीकार किया है (जिणदेवो) जिनदेव जिनने ऐसे (देवायरिउं) देवाचार्य (दुरंत) दुष्ट है परिणाम जिसका ऐसे (भव) संसारको (हारि) हरण करने वाले (सिरिनेमिचंदसूरि) श्रीनेमिचन्द्रसूरि और (सुगुरु) अज्ञानरूप अंधकारको रोकनेमें समर्थ ऐसे (उज्जोयणसूरि) उद्योतनसूरि विजयको प्राप्त होओ ॥ ७ ॥

(भावार्थ)

आत्मकल्याणके हेतु अङ्गीकार किया है जिनदेव जिनने ऐसे देवाचार्य और दुष्ट है परिणाम जिसका ऐसे संसारको हरण करनेवाले श्रीनेमिचन्द्रसूरि और अज्ञानरूप अंधकारको रोकनेमें समर्थ ऐसे उद्योतन-सूरि विजयको प्राप्त होओ ॥ ७ ॥

॥ अथ वर्धमानसूरिस्तुतिमाह ॥

॥ गाथा ॥

सिरिवद्धमाणसूरि पयडीकयसूरिमंतमाहप्पो ।
पडिहयकसायपसरो सरयससंकुव्वसुहजणउं ॥ ८ ॥

(छाया)

सु गृहीतव्योगनिराकरणसमर्थः जिनमते निश्चलः युग-प्रवरःसुधर्मसिद्धान्तज्ञातःप्रणमन्ति सुगुणजनाः (चप्परणपचल शब्दौ कुयोगनिरास समर्थ वाचकौ) ॥ १ ॥

(पदार्थ)

(सुहमील) विषयसुखमेंलंपट (चोर) केवलसाधुवेश धारणकरनेवाले और विश्वस्तभक्त जनोंके जैनसम्यक्त्व बोधिरत्नोंको असदुपदेशद्वारा चुरानेवाले ऐसे लिङ्गी साधुओंके (चप्परण) द्वारा जिनराजसिद्धान्तोक्त युक्ति द्वारा बलात्कारसे मतखण्डनमें (पचल) समर्थ (जगमयंमि) जिनमतमें (निचलो) निश्चल (जुगपवर) युगप्रवर सुधर्म स्वामीके (सुद्ध सिद्धंत) निर्दोष अंगोपांगरूप सिद्धान्तके निरंतर अभ्याससे (जाणउ) प्रसिद्ध और (पणय) प्रणाम करतेहैं (सुगुण) सद्गुणी (जणो) जन जिनको ॥ १ ॥

(भावार्थ)

विषयसुखमें लंपट केवल साधु वेषकोहि धारणकरने वाले भक्तजनोंके जैनसम्यक्त्व बोधिरत्नोंको अस-दुपदेशद्वारा चुरानेवाले ऐसे लिङ्गीसाधुओंके जिनराज-

सिद्धान्तोक्तयुक्तिपूर्वकचमत्कारसे मतखण्डनमें समर्थ, और जिनमतमें निश्चल, और युगप्रवर सुधर्म्मस्वामीके निर्दोष अङ्गोपाङ्गरूप सिद्धान्तके निरंतर अभ्याससे प्रसिद्ध, और प्रणाम करते हैं सद्गुणीजन जिनको ऐसे ॥ ९ ॥

॥ गाथा ॥

पुरउंदुल्लहमहिवल्लहस्स अणहिल्लवाडएपयडं ।
मुक्काविआरिऊणं सीहेणवदव्वलिंगिगया ॥ १० ॥

(छाया)

(येन) अनहिल्लपाटके दुर्लभमहीवल्लभस्य पुरतः विचार्य सिंहेन गजा इव प्रकटं लिंगिनः मुक्ताः ॥ १० ॥

(पदार्थ)

(अणहिल्लवाडए) अनहिल्ल पाटक नामके नगरमें (दुल्लहमहिवल्लहस्स) दुर्लभसंज्ञक राजाके (पुरउ) सामने (विआरिऊणं) वाद प्रतिवाद कर (सीहेणवदव्वगया) जैसे सिंह हाथियोंको चीरकर फेंकदेताहै वैसेही (पयडं) सब लोगोंके सामने (लिंगि) शिथिलाचारी साधु (मुक्का) जिनदत्तसूरिने शास्त्रार्थ में हरायेहैं ॥ १० ॥

(भावार्थ)

अनहिल्लपाटकनामके नगरमें दुर्लभ संज्ञकराजाके समक्ष श्री जिनदत्तसूरिने शिथिलाचारी साधुओंसे वाद प्रतिवाद किया, और जैसे सिंह हाथियोंसे सामनाकर उन्हें चीरकर फेंकदेताहै वैसेही जिनदत्तसूरिने शास्त्रार्थमें उन शिथिलाचारियोंको पराजित किया ॥ १० ॥

॥ गाथा ॥

दसमच्छेरयनिसिविप्फुरंत सच्छन्दसूरिमयातिमिरम् । सूरेणवसूरिजिणे, सरेण हयमहियदोसेण ॥ ११ ॥

(छाया)

अहितदोषेण सूरिजिनेश्वरेण दशमाश्चर्यनिशि विस्फुरत्स्वच्छन्दसूरिमतातिमिरं सूरेणेवहतम् ॥ ११ ॥

(पदार्थ)

(अहिय) नहीं प्रिय हैं (दोसेण) रागादि दोष जिनको ऐसे (सूरिजिणेसरेण) सूरिजिनेश्वराचार्यने (दसमच्छेरयनिसी) दशम असंयमीरूप पूजा लक्षण-आश्चर्यरूप रात्रि में (विप्फुरन्त) स्फुरायमाण (सच्छन्दसूरिमयतिमिरं) अपने इच्छानुसार चलनेवाले शिथिलाचारियोंका मतरूप अन्धकार (सूरेणव) सूर्यकेसमान (हयम्) नष्ट किया ॥ ११ ॥

(भावार्थ)

जैसे सूर्य रात्रिके अन्धकारको सत्वर नष्ट करता है वैसे ही रागादि दोपरहित सूरिजिनेश्वराचार्यने दशम असंयमीरूप पूजा लक्षण आश्चर्य रूप रात्रिमें स्फुरायमाण स्वच्छन्द शिथिलाचारियोंका मतरूप अन्धकारको शीघ्र नष्ट किया ॥ ११ ॥

अथ जिनचन्द्रसूरिस्तुतिं श्लेषालंकारेणाह

॥ गाथा ॥

सुकइत्तपत्तकित्ती पयडिअगुत्तीपसंतसुहमुत्ती ।
पहयपरवाइदित्ती जिणचन्दजईसरोमंती ॥ १२ ॥

(छाया)

सुकवित्वप्राप्तकीर्तिः प्रकटितगुप्तिः प्रशान्तशुभमूर्तिः
प्रहतपरवादिदीप्तिः मंत्री जिनचन्द्रयतीश्वरः नंदतात् ॥१२॥

(पदार्थ)

(सुकइत्त) सुकवित्वद्वारा (पत्तकित्ती) प्राप्त की हैं कीर्ति जिनने (पयडिअ) प्रकट की है (गुत्ती) मनोवाक्कायसंवरणादिरूप गुप्ति जिनने (पसंत) क्रोधादिकषायरहित (सुह) मंगलकारक है (मुत्ती) शरीर जिनका (पहय) निरस्त किया है (परवाइ)

पर वादियोंका (दित्ती) तेज जिनने (संघी)
संघाचार्य ऐसे (जिणचन्दजईसरो) जिणचन्द्रयतीश्व
उदयं शाली होओ ॥ १२ ॥

(भावार्थ)

गुरुदिव्यद्वारा प्राप्तकी है कीर्ति जिनने प्रकट की है
मनोवाक्काय संवरणादिरूप गुप्ति जिनने क्रोधादिकपाय
रहित और मंगलकारक है मूर्ति जिनकी नष्ट क्रिया
है परवादियोंका तेज जिनने और संघोंके आचार्य
ऐसे जिनचन्द्रयतीश्वर विजय शाली होओ ॥ १२ ॥

अथ नवाङ्गवृत्तिकारकं श्रीअभयदेवसूरिं गाथा-
द्वयेन वर्णयति

॥ गाथा ॥

पयडियनवङ्गसुत्तत्थरयणकोसो पणासिय पउसो।
भवभीयभवियजणमणकयसंतोसो विगय
दोसो ॥ १३ ॥

जुगपवरागमसार प्परूवणा करणबंधुरोधणियं।
सिरिअभयदेवसूरी मुणिपवरोपरमपसमधरो ॥१४॥

(छाया)

प्रकटितनवाङ्गसूत्रार्थरत्नकोशः प्रणाशितप्रद्वेषः
भवभीतभविकजनमनःकृतसंतोषः विगतदोषः ॥ १३

युगप्रवरागमसारप्ररूपणाकरणबंधुरः अत्यर्थं मुनिप्रवरः परमप्रशमधरः श्रीअभयदेवसूरिः विजयते ॥ १४ ॥

(पदार्थ)

(पयडिय) प्रकट किया है (नवंग) नवांगके (सुत्तत्थ) सूत्रार्थरूप (रयणकोसो) रत्नोंका भाण्डार जिनने (पणासिय) उन्मूलित किया है (पउसो) प्रद्वेष जिनने (भवभीय) संसारसे डरे हुए (भवियजणमण) भविक जनोंके मनको (कयसंतोसो) किया है संतोष जिनने (विगयदोसो) गए हैं समस्त दोष जिनके (जुगपवरागम) युगके विषय प्रकृष्ट शास्त्रको धारण करनेवाले ऐसे कालिक सूरियोंके (सार) सिद्धान्तों का अनुसरण करनेवाली (परूवणा) चौथी पर्युषणादिकोंके (करण) आचरण से (बंधुरः) मनोज्ञ (धणियं) अत्यर्थ (मुणिपवरो) मुनियोंमें श्रेष्ठ (परम) उत्कृष्ट (पसम) शान्तिको (धरो) धारण करनेवाले (सिरिअभयदेवसूरी) श्रीअभयदेवसूरि विजयशाली होओ ॥ १३-१४ ॥

(भावार्थ)

प्रकटकिया है नवांगके सूत्रार्थरूप रत्नोंका भाण्डार

जिनने, उन्मूलित किया है प्रद्वेष जिनने, संसारसे डरे हुए भविक जनोंके मनको किया है संतोष जिनने, गए हैं समस्त दोष जिनके, युगमें प्रकृष्ट शास्त्रको धारण करनेवाले, ऐसे कालिक सूरियोंके सिद्धान्तको अनुसरण करनेवाली चौथी पर्य्युषणादिकोंके आचरणसे मनोज्ञ, मुनियोंमें अत्यन्त श्रेष्ट, उत्कृष्ट शान्तिको धारण करनेवाले, ऐसे श्रीअभयदेवसूरि विजयशाली होओ ॥ १३-१४ ॥

अथ स्वगुरोः श्रीजिनवल्लभसूरेः स्तुति
सिंहप्रकृतिरवं गाथाद्वयेनाह.

(गाथा)

कयसावयसत्तासो हरिव्वसारंगभग्गसंदेहो ।
गयसमय दप्पदलणो आसाइयपवरकव्वरसो ॥१५॥
भीमभवकाणणंमि दंसियगुरुवयणरयणसंदोहो ।
नीसेससत्तगुरुअं सूरीजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥

छाया (प्रभुपक्षे)

कृतश्रावकसत्त्रासः सारांगभग्नसंदेहः गतसमयदर्पदलनः आस्वादितप्रवरकाव्यरसः दर्शितगुरुवचनरचनसंदोहः निःशेषसत्वगुरुकः एतादृशः सूरि जिनवल्लभः भीमभव-काननें हरिरिव जयति

(हरिपक्षे)

कृतश्वापदसंत्रासः सारंगभग्नसंदेहः समदगजदर्प्पदल
आस्वादितप्रवरक्रव्यरसः दर्शितगुरुवदनरदनसंदो
निःशेषसत्वगुरुकः

(पदार्थ)

(कय) परिपूर्णकी है (सावय) श्रावकोंकी (सत्तासो
शुभ आकांक्षा जिनने (सारंग) प्रधान आचारा
अंगोंसे (भग्गसंदेहो) दूर कियाहै संदेह जिन
(गय) भ्रष्ट हुआहै (समय) सिद्धांत जिन्होंसे ऐसे
चोरासी आचार्योंके (दप्प) अभिमानको (दलणो
नष्टकरनेवाले (आसाइय) आस्वादित कियाहै (पवर)
सर्वोत्तम (कव्वरसो) काव्यरस जिन्होंने (दंसिय)
प्रकट कियाहै (गुरुवयण) श्रीअभयदेवसूरिके वचनोंकी
(रयण) रचनाओंका (संदोहो) समूह जिन्होंने
(नीसेस) सम्पूर्ण (सत्त) जीवोंके (गुरुउ) अज्ञा
नांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे (सूरि जिणवल्लहो) सूरि
जिनवल्लभ (भीम) भयंकर (भवकाननम्मि) संसार
रूप वनमें (हरिणो) सिंहके समान (जयइ) जय
वन्ते हैं ।

(सिंहपक्षे पदार्थः)

(कृत) कियाहै (नाव्य) जानवरोंको (सत्रास) भय जिसने (सारंग) मृगोंके (भग्ग) भग्न कियेहैं (संदेहो) शरीर जिसने (समय) मदोन्मत्त (गय) हाथियोंके (दप्प) दर्पका (दलणो) नाशकियाहै जिसने (आसाइय) चखाहै (पवर) नये (कव्व) मांसका (वसा) रक्तजिसने (दंसीय) दिखायाहै (गुरु) भारी (वदन) मुखमें (रदन) दांतोंका (संदोहो) समूह जिसने (नीसेस) सम्पूर्ण (सत्त) पशुओंमें (गुरुओ) बड़ा ऐसे (हरिव्व) सिंहके समान जिनवल्लभसूरि विजयशाली हैं।

(भावार्थ)

परिपूर्ण किये हैं श्रावकोंके शुभ मनोरथ जिनने प्रधान आचारादि अंगोंसे दूर किये हैं संदेह जिनने भ्रष्ट हुआहै सिद्धान्त जिन्होंसे ऐसे चोरासी आचार्योंके अभिमानका नाशकरनेवाले आस्वादित कियाहै सर्वोत्तम काव्यरस जिनने प्रकट कीहै नवांगवृत्तिलक्षण श्रीअभय-देवसूरिके वचनों की रचना जिनने सम्पूर्ण जीवोंके अज्ञानांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे सूरि जिनवल्लभ

(हरिपक्षे)

कृतश्वापदसंत्रासः सारंगभग्नसंदेहः समदगजदर्प्पदलनः आस्वादितप्रवरकव्यरसः दर्शितगुरुवदनरदनसंदोहः निःशेषसत्वगुरुकः

(पदार्थ)

(कय) परिपूर्णकी है (सावय) श्रावकोंकी (सन्तासो) शुभ आकांक्षा जिनने (सारंग) प्रधान आचारादि अंगोंसे (भग्गसंदेहो) दूर कियाहै संदेह जिनने (गय) भ्रष्ट हुआहै (समय) सिद्धांत जिन्होंसे ऐसे चोरासी आचार्योंके (दप्प) अभिमानको (दलणो) नष्टकरनेवाले (आसाइय) आस्वादित कियाहै (पवर) सर्वोत्तम (कव्वरसो) काव्यरस जिन्होंने (दंसिय) प्रकट कियाहै (गुरुवयण) श्रीअभयदेवसूरिके वचनोंकी (रयण) रचनाओंका (संदोहो) समूह जिन्होंने (नीसेस) सम्पूर्ण (सत्त) जीवोंके (गुरुउ) अज्ञानांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे (सूरी जिणवल्लहो) सूरि जिनवल्लभ (भीम) भयंकर (भवकाणणंमि) संसाररूप वनमें (हरिव्व) सिंहके समान (जयइ) विजयशाली हैं ।

(सिंहपक्षे पदार्थः)

(कय) कियाहै (सावय) जानवरोंको (सचासा) त्रय जिसने (सारंग) मृगोंके (भग्ग) भग्न कियेहैं (संदेहो) शरीर जिसने (समय) मदोन्मत्त (गय) हाथियोंके (दप्प) दर्पका (दलणो) नाशकियाहै जिसने (आसाइय) चखाहै (पवर) नये (कव्व) मांसका, (रसो) रसजिसने (दंसीय) दिखायाहै (गुरु) भारी (वदन) मुखमें (रदन) दांतोंका (संदोहो) समूह जिसने (नीसेस) सम्पूर्ण (सत्त) पशुओंमें (गुरुओ) बडा ऐसे (हरिव्व) सिंहके समान जिनवल्लभसूरि विजयशाली हैं ।

(भावार्थ)

परिपूर्ण किये हैं श्रावकोंके शुभ मनोरथ जिनने प्रधान आचारादि अंगोंसे दूर किये हैं संदेह जिनने भ्रष्ट हुआहै सिद्धान्त जिन्होंसे ऐसे चोरासी आचार्योंके अभिमानका नाशकरनेवाले आस्वादित कियाहै सर्वोत्तम काव्यरस जिनने प्रकट कीहै नवांगवृत्तिलक्षण श्रीअभयदेवसूरिके वचनों की रचना जिनने सम्पूर्ण जीवोंके अज्ञानांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे सूरि जिनवल्लभ

भयंकर संसार रूप वनमें सिंहके समान विजयशाली होओ।

(सिंहपक्षे भावार्थः)

किया है पशुओंको भय जिसने मृगोंके भ्रम किये हैं शरीर जिसने मदोन्मत्त हाथियोंके दर्पको दलन किया है जिसने चक्खा है नूतन मांसकारस जिसने दिखाया है अपने भारी मुखमें दांतोंका समूह जिसने सम्पूर्ण पशुओंमे बड़े एसे सिंहके समान.

अथ गाथा द्वयेन तस्यैव स्वगुरोः जिनवल्लभसूरेः सर्वोत्तमत्वं शरभोपम्येन श्लेषपूर्वकमाह ॥

॥ गाथा ॥

उवरिट्ठियसच्चरणो चउरणुउगप्पहाणसंचरणो। अममयरायमहणो उड्ढमुहोमहइजस्सकरो ॥१७॥ दंसियनिम्मलनिच्चल दन्तगणोगणियसावउच्छ भउ। गुरुगिरिगुरुउसरहुव्व सूरि जिणवल्लहोहोउ ॥ १८ ॥

(छाया प्रभुपक्षे)

उपरि स्थितसच्चरणः चतुरनुयोगप्रधानसंचरणः असम मदगजमद्दनः असममदरागमथनोवा ऊर्ध्वमुखोयस्यकरः

शोभते तथाभूतः दर्शननिर्मलनिश्चलदन्तगणः अगणितश्वापदोत्थभयः गुरुगिरिगुरुकः जिनवल्लभसूरिः शरभवदभूत् ॥

(शरभपक्षे)

उपरि स्थितसच्चरणः चतुरनुयोगप्रधानसंचरणः असम मृगराजमथनः ऊर्ध्वमुखोदयरयकरः शोभते तथा भूतः दर्शननिर्मलनिश्चलदन्तगणः अगणितश्वापदोत्थभयः गुरुगिरिगुरुकः भवति हि शरभोऽपि तथैव सूरि जिनवल्लभोऽभूत् ॥ १७-१८ ॥

(पदार्थ)

(उवरिट्ठिय) सब आचार्योंसे अत्युत्तम है (सत्) शोभायमान (चरणो) चारित्र जिनका (चउरणुउग) द्रव्यानुयोग १ कालानुयोग २ गणितानुयोग ३ और धर्मानुयोग ४ इन चार अनुयोगसे (प्पहाण) प्रधान है (संचरणो) प्रवर्तन जिनका (असम) उत्कृष्ट है (मय) मद जिन्होंका ऐसे (राय) राजाओंसे कियागया है (महणो) पूजन जिनका, अथवा (असम) क्रोध (मय) गर्व और (राय) राग इनका (महणो) नाश करनेवाले

(उड्डमुहो) व्याख्यानके प्रस्तावमें ऊर्ध्वमुख (सहइ) शोभायमान है (जरस) जिनका (करो) हाथ ऐसे (दंसिय) दिखाया है (निम्मल) पापरहित (निश्चल) भली भांति व्रतके पालन में तत्पर ऐसा (वन्तगणो) मुनिसमूह जिनने, अगणिय नहीं गिना है (सावउछ) श्रावकोंका (भउ) अपेक्षा लक्षण भय जिनने अथवा सुसाधुओंसे परिवृत होनेसे (अगणिय) नहीं गिना है (सावउछ) मिथ्यात्वी श्रावकोंका (भउ) भय जिनने, (गुरु) श्रेष्ट (गिरि) वाणीमें (गुयउ) उत्कृष्ट, (सरहु) अष्टापदके (व्व) समान (सूरि) सूरि (जिणवल्लहो) जिनवल्लभ (होछा) हुए अथवा थे ॥ १७-१८ ॥

(शरभपक्षे) पदार्थ

(उवरिट्ठिय) ऊर्ध्व देशमें स्थित हैं (सऊ) विद्यमान (चरणो) पांव जिसके, (चउरगुडग) चार पांवके सम्बन्धमे (पहाण) प्रधान है (संचरणो) संचार जिसका, (अघम) अतामारग घबराके (मयगय) हिरनका (महणो) नाश करने वाला, (उड्डमुहो) शीघ्रताके ऊंचा किया हुआ

(सग्गइ) शोभायमान है (जस्स) जिसका (करो) शुण्डादण्ड अर्थात् सूंड ऐसा, (दंसिय) दिखाया है (निम्मल) शुभ्र और (निच्चल) दृढ़ (दन्त) दांतोंका (गणो) समूह जिसने, (गणिय) नहीं गिना है (सावउल) श्रावकोंका (भउ) भय जिसने, (गुरु) बड़े (गिरि) पर्वतोंके समान (गुरुउ) ऊंचा ऐसा जो हाथी उसके समान सूरि जिनवल्लभ थे ॥ १७-१८ ॥

(भावार्थ)

सब आचार्योंसे उत्तम चारित्रवाले, द्रव्यानुयोग १ कालानुयोग २ गणितानुयोग ३ और धर्मानुयोग ४ इन चार अनुयोगोंसे प्रधान है प्रवर्तन जिन्होंका अत्यंत गर्व करनेवाले राजाओंकेभी पूज्य अथवा क्रोध गर्व और राग इनका नाश करनेवाले, व्याख्यानके समय जिनका ऊंचा किया हुआ हात शोभता है ऐसे, मुक्तिमार्ग बतलाकर जिनने पापरहित और व्रताचरणमें तत्पर ऐसे मुनिओंका समूह बतलाया, सुसाधुओंसे नित्य घिरे होनेके कारण जिनको मिथ्यात्वी श्रावकोंका कुछ भय नहीं था, प्रतिज्ञा दूरीकरनेके कारण जो

श्रेष्ठ वाणीके कथन में उत्कृष्ट थे, वे सूरिजिनवल्लभ अष्टापद के समान हुए ॥ १७-१८ ॥

(शरभपक्षे) भावर्थ

ऊपर किये हुए हैं पांव जिसने, चार पांवके सम्बन्धसे संचार करनेवाला, बड़े पराक्रमी सिंहको मारनेवाला, ऊंची उठानेसे जिसकी सूंड शोभायमान है, अपने शुभ्र और दृढ़ ऐसे चार दांतोंको दिखाने वाला, जिसको किसी पशुका बिलकुल भय नहीं है और जिसका शरीर बड़े पहाड़के समान है ऐसे शरभके तुल्य सूरि जिनवल्लभ हुए ॥ १७-१८ ॥

अथ विशेषेणस्वगुरोर्गुणोद्भावनपूर्वकं वन्दनं करोति

॥ गाथा ॥

जुगपवरागमसारं सपरसमयसत्थपारगा भव्वा।
जेण जिणवल्लहेणं गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥

(छाया)

येन जिनवल्लभेन गुरुणा भव्याः युगप्रवरागमसार स्वपरसमयशास्त्रपारगाः कृताः तं सर्वथा वन्दे ॥ (सपरः इति स्वपरस्य मूर्द्धे प्राकृतत्वात् ।) ॥ १९ ॥

(पदार्थ)

(जुग) युगमें (पवरागम) श्रेष्ठ सिद्धान्तका

(पीऊण) अमृतके (पाण) पानसे (पीणिय) सन्तोषित हैं (मणा) मन जिन्होंके ऐसे (कया) किये हैं (भव्वा) समस्त भव्य जीव (जेण) जिन (जिणवल्लहेणं) जिनवल्लभ (गुरुणा) गुरुने (तं) उनको (सव्वहा) मनवचनकायसे (वंदे) नमस्कार करताहूं ॥ १९ ॥

(भावार्थ)

युगके बीचमें श्रेष्ट सिद्धान्तरूप अमृत पिलाकर समस्त भव्य जीवोंके मनको सन्तुष्ट करनेवाले सदुपदेशक जिनवल्लभ सूरिको मनसे, वाणीसे और शरीरसे मैं नमस्कार करताहूं ॥ १९ ॥

अथ गाथा द्वयेन सुधर्मस्वाम्यादिगुरुपारतन्त्र्य-
मुपदर्श्य सर्वसंघभारवहनक्षमस्य गुरोस्स्वरूपमाह ।

॥ गाथा ॥

विप्फुरियपवरपवयण सिरोमणीवूढदुव्वहखमोया
जोसेसाणंसेसु व्वसहव्वसत्ताणताणकरो ॥ २० ॥
सज्झायियाणमहीणं सुगुरूणंपारतंतमुव्वहइ जयइ
जिणदत्तसूरी सिरिनिलउ पणयमुणितिलउ ॥ २१ ॥

(छाया)

विस्फुरितप्रवरप्रवचनाशिरोमणिः व्यूढदुर्वहक्षमः यः शेषाणां शेष इव (यः) सत्वानांत्राणकरः सन् सहते, (यः) सच्चरितानां सुगुरुणामहीनं पारतन्त्र्य मुद्वहति (सः) श्रीनिलयः प्रणतमुनितिलकः जिनदत्त सूरिः जयति ॥ २०-२१ ॥

(पदार्थ)

(विप्फुरिय) निकला है (पवर) श्रेष्ट (पवयण) सिद्धान्त जिनसे ऐसे आचार्योंमें (सिरोमणी) मस्तक के मणिके समान (वूढ) धारण की है (दुव्वह) धारण करनेको कठिन (खमो) क्षमा जिनने, (जो) जो (सेसाणं) तत्कालवर्ती अन्य आचार्योंमें (सेसुव्व) शेषके समान अर्थात् पूज्य हैं, जो (सच्चरियाणं) उत्तम आचार वाले (सुगुरुणं) अपने श्रेष्ट गुरुओंका (अहीणं) सम्पूर्ण (पारतन्तं) पारतन्त्र्य (उव्वहइ) धारण करते हैं, वे (सिरि) समस्त लक्ष्मीके (निलउे) संस्थान और (पणय) नमस्कार करनेवाले [मुणि] साधुओंमें (तिलउं) तिलकके समान ऐसे (जिण) जिनोंने (दत्त) ज्ञानादिगुणोंसेयुक्त दिखाये हुए,

(मणि) मणि (समान) पुण्योंसे निराकरण द्वारा विजयशाली होवें.

(यहां श्लोक कर्ताने अपना 'जिनदत्तसूरि' यह नाम भी प्रकट कर दिया है.)

(भावार्थ)

जिनसे श्रेष्ठ सिद्धान्त निकला है ऐसे आचार्योंके मस्तकके मणिके समान, धारण करनेमें अत्यन्तकठिन ऐसी क्षमावाले, तत्त्वदर्शी आचार्योंमें परमपूज्य, आचार्यमें सत्य ऐसे अपने सद्गुरुओंका पूर्ण पारतन्त्र्य धारण करनेवाले, समग्र लक्ष्मीके संस्थान, नमस्कार करनेवाले साधुओंमेंश्रेष्ठ ऐसे जिनदत्तसूरि विजयशाली होवें।

इति श्री [illegible]

[illegible] टीकासहित

" गुरुपारतन्त्र्यस्तोत्र "

समाप्तम् ॥

॥ श्री ॥

अथ विघ्नभयहरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ श्रीमद्वर्धमानाय नमः ॥

॥ गाथा ॥

विग्घभयहरहरणं जिणवीराणाणुगामिसंघस्स ।
सिरिपासजिणं थुणिमो पुरदिउ निद्दियाणिट्ठो ॥१॥

(छाया)

जिनवीराज्ञानुगामिसंघस्य निर्दितानिष्टः गोअनरकपुर-
स्थितः श्रीपार्श्वजिनः विघ्नं हरन् अपहरतु ॥ १ ॥

(पदार्थ)

(जिनवीर) श्रीमहावीरस्वामीकी (आणा) आज्ञा
को (अणुगामि) माननेवाले (संघस्स) संघके
(निद्दिआ) नाशकिये हैं (अणिट्ठो) अनिमित्त [illegible]

ऐसे (थंमणपुर) स्तंभनपुरमें (ट्ठिओ) रहनेवाले (सिरिपासजिणो) श्रीपार्श्वजिनभगवान (विग्घं) अन्तरायका (सिग्घं) जलदीसे (अवहरउ) नाशकरें ॥ १ ॥

(भावार्थ)

श्री महावीरप्रभुकी आज्ञाको पालनकरनेवाले चतुर्विध-संघके पापोंको नाश कियाहै जिनने ऐसे स्तंभनकपुरमें निवास करनेवाले श्रीपार्श्वजिनभगवान अन्तरायका सत्वर नाशकरें ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

गोयममुहम्मपमुहा गणवइणोविहियभव्वसत्त-सुहा । सिरिवद्धमाणजिणतित्थ, सुत्थयंते कुणंतु-सया ॥ २ ॥

(छाया)

ते गौतमसुधर्मप्रमुखाः विहितभव्यसत्वसुखाः गणनायः सदा श्रीवर्द्धमानजिनतीर्थस्वस्थतां कुर्वन्तु ॥ २ ॥

(पदार्थ)

(ते) वे प्रसिद्ध, (गोयम) गौतमस्वामी और (सुहम्म) सुधर्मस्वामी हैं (पमुहा) मुख्य जिन्होंमें

(विहिय) कियाहै (भव्वसत्त) भव्यजीवोंको (सुहा) सुख जिन्होंने ऐसे (गणवइणो) गणधर (सया) निरंतर (सिरिवद्धमाणजिण) श्रीमहावीरप्रभु जिनभगवानने स्थापनकिएहुए (तित्थ) चतुर्विधसंघकी (सुत्थयं) निरुपद्रवता (कुणन्तु) करें ॥ २ ॥

(भावार्थ)

ये प्रसिद्ध गौतमस्वामी और सुधर्मस्वामीहैं प्रमुख जिन्होंमे कियाहै भव्यजीवोंको सुख जिन्होंने ऐसे गणधर श्रीजिनभगवान महावीरस्वामीने स्थापनकिएहुए चतुर्विध संघके उपद्रवोंका नाशकरें ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

सक्काइणोसुराजे जिणवेयावच्चकारिणोसन्ति ।
अवहरियविग्घसंघा हवन्तु ते संघसन्तिकय ॥३॥

(छाया)

ये अपहृतविघ्नसंघाः जिनवैयावृत्त्यकारिणः शक्रादयः सुराः सन्ति ते संघशान्तिकराः भवन्तु ॥ ३ ॥

(पदार्थ)

(जे) जो (अवहरिय) नष्ट होगएहैं (विग्घसंघा) अन्तरायोंके समूह जिन्होंके और (जिण) जिनस

करभगवानकी (वेयावच्च) वैयावच्च (कारिणो) करने वाले (सक्काइणो) इन्द्रप्रमुख (सुरा) देवता (सन्ति) हैं (ते) वे (संघ) चतुर्विधसंघको (सान्तिकरा) शान्तिसुखके करनेवाले (हवन्तु) होओ ॥ ३ ॥

(भावार्थ)

नष्टहोगएहैं अन्तरायोंके समूह जिन्होंके और जिन-तीर्थंकर भगवानकी वैयावच्च करनेवाले जो इन्द्रप्रमुख देवताहैं वे चतुर्विधसंघको शान्तिसुखके करनेवाले होओ ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

सिरिथंभणयट्ठियपाससामिपयपउमपणयपाणीणं। निद्दलियदुरियविंदो धरणिंदो हरउ दुरि-याइं ॥ ४ ॥

(छाया)

श्रीस्तंभनकस्थितपार्श्वस्वामिपदपद्मप्रणतप्राणिणांनिर्दलित-दुरितवृंदः धरणेन्द्रः दुरितानि हरतु ॥ ४ ॥

(पदार्थ)

(सिरि) शोभायुक्त (थंभणय) स्तंभनकपुरमें (ट्ठिय) वासकरनेवाले (पाससामि) पार्श्वभगवानके

(पयपउम) चरणकमलको (पणय) प्रणाम करने वाले (पाणीणं) प्राणियोंके (निद्दलिय) नाशकिएहैं (दुरियविंदो) कष्ट और पापोंके समुदाय जिनने ऐसे (धरणिंदो) धरणेन्द्रभगवान (दुरियाइं) दुःखोंको (हरउ) नाशकरें ॥ ४ ॥

(भावार्थ)

श्रीयुक्त स्तंभनकपुरवासी पार्श्वभगवानके चरणकमल को प्रणामकरनेवाले प्राणियोंके नाशकियेहैं कष्ट और पापोंके समुदाय जिनने ऐसे धरणेन्द्रभगवान दुःखोंको नाशकरें ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

गोमुह–पमुक्ख–जक्खा पडिहयपडिवक्खपक्ख लक्खाते । कयसगुणसंघरक्खा हवन्तु संपत्त–सिवसुक्खा ॥ ५ ॥

(छाया)

प्रतिहतप्रतिपक्षपक्षलक्षाः संप्राप्तशिवसौख्याः ते गोमुखप्रमुखयक्षाः कृतसगुणसंघरक्षाः भवन्तु ॥ ५ ॥

(पदार्थ)

(पडिहय) नाशकियेहैं (पडिवक्ख) संघको उप

करनेवाले वैरियोंके (पक्ख) पक्षोंके (लक्खा) लक्ष जिन्होंने (संपत्त) सम्यक् प्रकारसे पाएहैं (सिवसुक्खा) कल्याणरूप सुख जिन्होंने (ते) वे प्रसिद्ध (गोमुह पमुक्ख) गोमुखयक्षहै प्रमुख जिन्होंमें ऐसे (जक्खा) यक्ष (कय) कीहै (सगुण) ज्ञानादि गुणोंसेयुक्त (संघ) चतुर्विधसंघकी (रक्खा) रक्षा जिन्होंने ऐसे (हवन्तु) होओ ॥ ५ ॥

(भावार्थ)

नाशकिएहैं संघको उपद्रवकरनेवाले वैरियोंके पक्षोंके लक्ष जिन्होंने, सम्यक् प्रकारसे पायाहै कल्याणरूप सुख जिन्होंने ऐसे गोमुखप्रमुखादियक्ष ज्ञानादिगुणोंसेयुक्त चतुर्विधसंघकी रक्षाकरने वाले होओ ॥ ५ ॥

॥ गाथा ॥

अप्पडिचक्कापमुहा जिणसासणदेवयायाजण-पणया । सिद्धाइयासमेया हवंतु संघस्स विग्घ-हरा ॥ ६ ॥

(छाया)

जिनप्रणताः सिद्धायिकासमेताः च अप्रतिचक्राप्रमुखाः जिनशासनदेवताः संघस्य विघ्नहराः भवन्तु ॥ ६ ॥

(पदार्थ)

(जिण) जिनभगवानको (पणया) प्रणामकरनेवाली (सिद्धाइया) सिद्धाइकानामकी महावीरस्वामीके शासनकी अधिष्ठात्रीदेवीके (समेया) साथ (य) और (अप्पडिचक्का) अप्रतिचक्राहै (पमुहा) प्रमुख जिन्होंमें ऐसी (जिणसासणदेवया) जिनशासनकी अधिष्ठात्री देवियां (संघस्स) चतुर्विधसंघके ((विग्घहरा) अन्तरायोंको हरणकरनेवाली (हवंतु) होओ ॥ ६ ॥

(भावार्थ)

जिनभगवानको प्रणामकरनेवाली महावीरस्वामीके शासनकी अधिष्ठाइका सिद्धाइका नामकी देवीके साथ और अप्रतिचक्राहै प्रमुख जिन्होंमे ऐसी जिनशासनकी अधिष्ठाइका देवियां चतुर्विधसंघके अन्तरायोंको हरण करनेवाली होओ ॥ ६ ॥

॥ गाथा ॥

सक्काएसासचउरपुरट्ठिउवद्धमाणजिणभत्तो । सिरिबंभसंतिजक्खो रक्खउसंघंपयत्तेण ॥ ७ ॥

(छाया)

शक्रादेशात् (सचउर) पुरस्थितः वर्द्धमानजिनभक्तः श्रीब्रह्मशान्तियक्षः प्रयत्नेन संघं रक्षतु ॥ ७ ॥

(पदार्थ)

(सक्काएसा) इन्द्रकी आज्ञासे (सचउरपुर) सचउरपुरमें (ट्ठिउ) रहनेवाले (वद्धमाणजिण) जिनभगवान महावीरस्वामीके (भत्तो) भक्त (सिरि) शोभायुक्त (बंभसंति) ब्रह्मशान्तिनामक (जक्खो) यक्ष (पयत्तेण) यत्नपूर्वक (संघं) चतुर्विधसंघका (रक्खउ) रक्षणकरो ॥ ७ ॥

(भावार्थ)

इन्द्रकी आज्ञासे सचउरपुरमें रहनेवाले और जिनभगवानमहावीरस्वामीके भक्त श्रीब्रह्मशान्तियक्ष चतुर्विधसंघको रक्षणकरो ॥ ७ ॥

॥ गाथा ॥

खित्तगिहगुत्तसंताण देसदेवाहिदेवयाताउ ।
निव्वुइपुरपहियाणं भव्वाणकुणंतु सुक्खाणि ॥ ८॥

(छाया)

याः क्षेत्रगृहगोत्रसंतानदेशदेवाधिदेवताः ताः निर्वृत्तिपुर पाथिकानां भव्यानां सौख्यानि कुर्व्वन्तु ॥ ८ ॥

(पदार्थ)

(खित्त) क्षेत्र (गिह) गृह (गुत्तसंताण)

गोत्र संतान (देस) देश इनसंबंधी (देव) देवता और (अहिदेव) अधिष्ठात्री देवता (ता) ये सब (निव्वुइपुर) मोक्षरूप नगरके (पहियाणं) पथिक (भव्वाण) भव्यजीवोंको (सुक्खाणि.) कष्टनिवारण-रूपसुख (कुणन्तु) करो ॥ ८ ॥

(भावार्थ)

क्षेत्रदेवता गृहदेवता गोत्र संतानदेवता देशदेवता और इन्होंकी अधिष्ठात्री देवता ये सब मोक्षरूपनगरको जानेवाले पथिकजनोंको कष्टनिवारणरूपसुख करो ॥८॥

॥ गाथा ॥

चक्केसरिचक्कधरा विहिपहरिउछिन्नकंधराधणियं ।
सिवसरणिलग्गसंघस्स सव्वहाहरउविग्घाणि ॥ ९ ॥

(छाया)

विधिपथरिपूणां अत्यर्थछिन्नकंधरा चक्रधरा चक्रेश्वरी शिवसरणिलग्नसंघस्य विघ्नानि सर्वथा हरतु ॥ ९ ॥

(पदार्थ)

(विहिपह) जैनक्रियाके मार्गके (रिउ) शत्रुओंकी (धणियं) अत्यर्थ (छिन्न) काटी है (कंधरा) गर्दन जिसने (चक्कधरा) चक्रको धारणकरनेवाली

चांदकेसमान (अभयदेवो) भयरहित अत्यन्तप्रतापशाली (जिणवल्लहो) सामान्यकेवलियोंके प्यारे (वद्धमाणो) वर्द्धमान (पहु) प्रभु (मं) मेरा (रक्खउ) रक्षणकरो ॥ १० ॥

(भावार्थ)

चतुर्विधसंघकेस्वामी जिनेश्वरभगवान् सुंदरक्रियाशाली संघके साथ सामान्यकेवलियोंमें चांदकेसमान भयरहित अत्यन्तप्रतापवान सामान्यकेवलियोंके प्यारे ऐसे वर्द्धमान प्रभु मेरा रक्षणकरो ॥ १० ॥

॥ गाथा ॥

सोजयउवद्धमाणो जिणेसरोणेसरव्वहयतिमिरो।
जिणचंदाभयदेवा पहुणोजिणवल्लहाजेय ॥ ११ ॥

(छाया)

जिनेश्वरः (णेसरव्व) आदित्य इव हततिमिरः सः वर्द्धमानः जयतु (तथा) जिनचंद्राः अभयदेवाः जिनवल्लभाः प्रभवः जयंतु ॥ ११ ॥

(पदार्थ)

(जिणेसरो) जिनेश्वरभगवान (णेसरव्व) सूर्यके समान (हयतिमिरः) नष्टकियाहै अज्ञानरूपअंधकार

(पदार्थ)

(अभय) निर्भयता (देव) देवत्व और (पहुत्त) प्रभुत्व को (दायगे) देनेवाले ऐसे (गुरु) अज्ञानरूपअन्धकार को रोकनेवाले (जिग) जिनभगवानके (वल्लह) सुन्दर (पाए) चरणोंको (वंदे) नमस्कार करताहूं अथवा (अभयदेव) अभयदेवसूरिको (पहुत्त) प्रभुत्व (दायगे) देनेवाले ऐसे (गुरु जिणवल्लहपाए) गुरु जिनवल्लभसूरिके चरणोंको (वंदे) मैं नमस्कार करताहूं. वैसेही (वद्धमाणतित्थस्स) वर्द्धमानस्वामीके तीर्थकी (वुड्ढिकए) वृद्धिकेहेतु (जिणचन्द) जिनचन्द्रसूरि और (जईसर) जिनेश्वरसूरि को (वंदे) नमस्कार करताहूं ॥ १२ ॥

(भावार्थ)

निर्भयता देवत्व और प्रभुत्वको देनेवाले ऐसे अज्ञानरूपअन्धकारको रोकनेवाले जिनभगवानके सुन्दरचरणोंको मैं नमस्कार करताहूं. अथवा अभय देवसूरिको दियाहै प्रभुत्व जिन्होंने ऐसे गुरु जिनवल्लभ सूरिके चरणोंको मैं नमस्कार करताहूं और वर्द्धमान स्वामीने स्थापन कियेहुए चतुर्विधसंघकी वृद्धिके हेतु जिनचन्द्र और जिनेश्वर सूरिको नमस्कारकरताहूं ॥१२

(गाथा)

जिणदत्ताणंसम्मं मन्नंति कुणंति जेयकारिंति ।
मणसावयसावउसा जयंतु साहम्मियातेवि ॥ १३ ॥

(छाया)

ये जिनदत्ताज्ञां मनसा वचसा वपुषा सम्यक् मन्यंते ये च तां कुर्वन्ति ये च तां कारयन्ति तेऽपि साधर्मिकाः जयन्तु ॥ १३ ॥

(पदार्थ)

(जे) जो (जिण) जिनभगवानने (दत्त) दी हुई (आणं) आज्ञाको (मणसा) मनसे (वयसा) वाणीसे (वउसा) शरीरसे (सम्मं) योग्य (मन्नंति) मानते हैं (कुणंति) करते हैं (कारिंति) करवाते हैं (तेवि) वेभी (साहम्मिया) साधर्मिक (जयन्तु) विजयी होवो ॥ १४ ॥

(भावार्थ)

जिन भगवानने दी हुई आज्ञाको जो मन वचन कायसे योग्य मानते हैं स्वयं आचरण करते हैं और अन्योंसे भी आचरण करवाते हैं वे साधर्मिक भी विजयी होओ ॥ १३ ॥

सर्पादिकोंके विषका नाशकरनेवाले अथवा मिथ्यात्वरूप विषको धारणकरनेवाले मिथ्यात्वियोंके मिथ्यात्वरूप विषको उन्मूलितकरनेवाले उपद्रवनिवृत्तिरूप मंगल और सुखवृद्धिरूपकल्याणके निवासभूत ऐसे पार्श्वप्रभुको मैं वन्दनकरताहूं ॥ १ ॥

(गाथा)

विसहरफुलिंगमंतं कंठेधारेइजोसयामणुउ । तस्स गहरोगमारी दुट्ठजराजंति उवसामं ॥ २ ॥

(छाया)

यः मनुष्यः सदा विषधरस्फुलिंगमंत्रं कंठे धारयति तस्य ग्रहरोगमहामारीदुष्टज्वराः उपशमं यान्ति ॥ २ ॥

(पदार्थ)

(जो) जो (मणुउ) मनुष्य (विसहरफुलिंगमंतं) विषधरस्फुलिंग नामक अष्टादशाक्षरात्मकमंत्रको (सया) निरंतर (कंठे) कंठमें (धारेइ) धारणकरताहै (तस्स) उसके (गह) सूर्यादिकग्रहकृतादुःख (रोग) मस्तकशूलजलोदरादिरोग (मारी) कॉलरा प्लेगादि उपद्रव (दुट्ठजरा) ऐकाहिकादिदुष्टज्वर (उवसामं) नाशको (जंति) प्राप्तहोतेहैं ॥ २ ॥

(भावार्थ)

जो मनुष्य विषधरस्फुलिंगनामक अष्टादशाक्षर मंत्रको निरंतर कंठमें धारणकरताहै, उसके सूर्यादिग्रहजन्य दुःख कफकुष्टजलोदरादिरोग कॉलराप्लेगादि उपद्रव एकांतरा पाली आदि दुष्टज्वर नाशको प्राप्तहोतेहैं ॥ १ ॥

(गाथा)

चिट्ठउदूरेमंतो, तुज्झपणामोवि बहुफलोहोइ ।
नरतिरिएसुविजीवा पावंतिनदुःखदोगच्चं ॥ ३ ॥

(छाया)

विषधरस्फुलिंगमंत्रः दूरे तिष्ठतु तव प्रणामोऽपि बहुफलः भवति नरतिर्यक्ष्वपि जीवाः दुःखदौर्गत्यं न प्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥

(पदार्थ)

(मंतः) विषधरस्फुलिंगमंत्र तो (दूरे) दूरही (चिट्ठउ) रहो परंतु (तुज्झ) आपको (पणामोवि) प्रणामभी (बहुफलो) आरोग्यधनधान्यादिसमृद्धिरूप फलको देनेवाला (होइ) होता है (नर) मनुष्य जातिमें और (तिरिएसु) तिर्यग्जातिमें (वि) भी उत्पन्न हुये हुए (जीवा) जीव (दुःख) संकट

और (दोगच्चं) दुर्गतिको (न) नहीं (पावंति) प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

(भावार्थ)

विषयरस्फुलिंग मंत्रतो दूरही रहो परन्तु हे नाथ ! आपको कियाहुआ प्रणामभी आरोग्य धनधान्यादि समृद्धिरूप फलको देनेवाला होता है आपको वंदन करने वाले जीव पूर्वजन्मकृत प्रबलकर्मानुसार मनुष्ययोनिमें उत्पन्न हों वा तिर्यग्योनिमें उत्पन्न हों तो उन योनिओंमें उन्हें भी दुःख और दुर्दशा कभी प्राप्त नहीं होती ॥ ३ ॥

(गाथा)

॥ तुहसम्मत्ते लद्धे चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ॥
॥ पावन्तिअविग्घेणं जीवाअयरामरठाणं ॥ ४ ॥

(छाया)

चिन्तामणिकल्पपादपाभ्यधिके तव सम्यक्त्वे लब्धे सति जीवाः अजरामरस्थानं अविघ्नेन प्राप्नुवन्ति ॥ ४ ॥

(पदार्थ)

(चिंतामणि) चिन्तामणिरत्नसे और (कप्पपायवब्भहिए) कल्पवृक्षसे अधिक (तुह) आपके (सम्मत्ते) सम्यक्त्वदर्शनको (लद्धे) प्राप्तकिये सते

(जीवा) भव्यजीव (अयरामरं) जरा और मृत्युसे रहित (ठाणं) स्थानको (अविग्घेणं) निर्विघ्नतासे (पावन्ति) प्राप्त करलेतेहैं ॥ ४ ॥

(भावार्थ)

चिन्तामणिरत्नसे और कल्पवृक्षसे अधिक आपके सम्यक्त्वदर्शनको प्राप्तकरनेसे भव्यजीव जरा और मरणसेरहित स्थानको निर्विघ्नतासे प्राप्त करलेतेहैं ॥४॥

(गाथा)

इअसंथऊमहायस भत्तिभरनिभ्भरेणहिअएण ॥
तादेवदिज्जबोहिं भवेभवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥

(छाया)

हे महायशः भक्तिभरनिर्भरेणहृदयेन इति संस्तुवे तस्मात् हे देव हे पार्श्वजिनचन्द्र भवे भवे बोधिं देहि ॥ ५॥

(पदार्थ)

(महायस) हे त्रैलोक्यव्यापककीर्तिमान् (भत्ति) आत्यन्तिक प्रेमके (भर) समुदायसे (निभ्भरेण) प्रपूरित (हिअएण) हृदयसे (इअ) इसप्रकार आपकी (संथउ) स्तुतिकरताहुं (ता) इसहेतु (देव) हे देव (पासजिणचंद) हे जिनोंमें चांदके समान

पार्श्वनाथस्वामि (भवे भवे) जन्म जन्ममें (बोहिं) जिनधर्मकी प्राप्ति (दिज्ज) देओ ॥ ५ ॥

(भावार्थ)

हे त्रैलोक्यव्यापककीर्तिमान् आपकी भक्तिके समूहसे प्रपूरित हृदयसे पूर्वोक्त प्रकार आपकी स्तुति करताहूं, इस हेतु हे सम्पूर्ण जिनोंमें चांदके समान पार्श्वप्रभु ! आप जन्मजन्ममें जिनधर्मप्राप्ति मुझे देओ ॥ ५ ॥

इति श्रीइन्दुरजैनश्वेताम्बरपाठशालामुख्याध्यापकचोवेकुलोद्भवश्रीगोपीनाथसूनु
पण्डितश्रीकृष्णशर्मकृतसुबोधिनीटीकासहितं
" उवसग्गहरस्तवन "
समाप्तम् ॥
